CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

Jangamwadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.01

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

परिपूर्ण अनुभव

पहला और दूसरा भाग

वेदान्त की कविताएं

रचयिता—

स्वामी परिपूर्णानन्द गिरिः 'पूरण'

श्री कैलासाश्रम, मुनि-की-रेती

हृषीकेश (देहरादून)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

परिपूर्ण अनुभव

प्रथम एवं द्वितीय भाग

वेदान्त सम्बन्धी विवेक वैराग्य की कवितायें

रचयिता
स्वामी परिपूर्णानन्द गिरिः 'पूरण'
श्री कैलासाश्रम, मुनि-की-रेती, ऋषिकेश (देहरादून)

पुस्तक मिलने का पता
(१) डाक्टर ॐ प्रकाश अरोड़ा
पो० रामपुर मनिहारान, जिला सहारनपुर
(२) लाला गोरखनाथ जी नन्दा
ऐडीटर, रिसाला 'ॐ', अजमेरी गेट, दिल्ली
(३) व्यवस्थापक, श्री कैलास आश्रम
मुनि-की-रेती, ऋषिकेश

द्वितीय बार १००० | कार्तिक संवत् वि० २०३६ | अक्टूबर १९७९ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रकाशक तथा रचयिता :
स्वामी परिपूर्णानन्द गिरि: 'पूरण'
श्री कैलासाश्रम, मुनि-की-रेती
हृषीकेश, जिला देहरादून

द्वितीय संस्करण] — १००० प्रति
संवत् २०३६ वि०
[सन् १९७९ ई०
सर्वाधिकार सुरक्षित है

मुद्रक :
श्री कैलास विद्या प्रेस
मुनि-की-रेती, टिहरी-गढ़वाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरुदेव के पवित्र चरण कमलों में

समर्पण

भगवन् ! आपकी अनुकम्पा से प्राप्त हुई
वाणी की कृति आप के ही
चरण कमलों में भेंट है।
स्वीकार करें।

भवदीय—
परिपूर्णानन्द गिरिः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

परिपूर्ण अनुभव

शुद्धि पत्र

प्रिय पाठक ! अत्यन्त सावधानी करते हुए भी निम्न अशुद्धियाँ छपने में हो गई हैं। अतः पुस्तक पढ़ने से पहले इसके अनुसार पुस्तक संशोधन कर लें, फिर पढ़ें।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१	४	मुघातिब	मुख़ातिब
७	१४	शक्राब	रकाब
६	१३	श्रया	श्रयां
६	२३	णनाडी	प्राणनाडी
१६	२२	प्रियपन	प्रियतम
२४	१७	गुनाहों भरा	गुनाहों से भरा
२६	५	असमथ	असमर्थ
३२	१		निराली शान
३३	२३	अज्ञाने परदे में से	अज्ञान के परदे में से
४४	१३	आनी	अपनी
६०	६	बेजा	बेजां
६३	१७	इलको	इलमो
६५	७	बनने	बनके
७१	१	अज़ाद	आज़ाद
७२	२३	ऐद्वैतवादी	द्वैतवादी
८०	६	की	कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
८७	१६	से	में
९०	५	दीदार	दींदार
९४	१६	जगतरानी	जगतारनी
९५	१३	को जाने	को जोजाने
९५	१६	कुछ खाते	कुछ भी खाते
१११	२२	समस्त	समझ
११६	१६	पायु	आयु
१३४	११	न १६	× १६
१३५	५	६ लाजवाला	६ लाज़वालो
१४४	१०	रोता	होता
१७१	१६	अन्यदद्	अन्यद्
१७३	१५	स्वरुण	स्वरूप
१७४	१४	अचण्ड	अखण्ड
१७५	१६	उत्पत्व	उत्पन्न
१७७	४	अपादित	आपादित
१८३	३	११मस्कान	११मस्कन
१९४	१६		१४लोहे की सलाखें
२०२	१५	बचे नजर से हैं	बचे जो नजर से
२०५	१७	दिलाने	हिलाने
२१४	१७	कथय	कथया
२१५	९	जात्	नात्
२१६	११	किस हुई	किसकी की हुई
२२४	१	को	की
२२४	१०	दनिया	दुनिया
२३०	७	ममरंत	मुसरंत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२३०	१२	घोतज़्न	घोताज़्न
२३१	१५	तुझे	मुझे
२३२	१०	मुझ	मुझे
२३२	१२	किसने	किसीने
२३६	२	बाज़ान'	बेजान'
२३९	९	कसते	कहते
२३९	१०	सुदी	मुरदा
२४०	२	लो	ला
,,	३	हैं	हूं
,,	४	लातघय्या	लातघय्यर
२४६	६	जनोनो	ज़मीनो
२४७	९	१५ दलान दीवानखाना भी	×
२४७	१४	ओह	और
,,	१५	१३	१६
२४८	३	जल	जला
२५३	१	तिलिस्म	तिलिस्मी
,,	६	चलकता	छलकता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
१	प्रातःस्मरण स्तोत्र…	प्रातः करूँ याद उस आत्मपद को…	१
२	जाये रिहायश…	मकानेदिल में रहते हैं…	३
३	निगाहेकामिल…	तूही तू है हर तरफ…	४
४	दीदार यार…	ख़ुदी का दूर कर परदा…	५
५	बे हजाबी	कहाँ का परदा…	६
६	दीदारे हक्क…	चश्मे हक्बीं से तुझे…	८
७	मश्के ख्याल…	जिस शै को देखता हूँ…	९
८	सदाये अर्श…	जिस जगा पर तुम हो…	११
९	परदा…	शरीफ़ औरत न निकले…	१३
१०	ढूंडता है…	जो उस सांवले को…	१४
११	हकीकत…	दिल में तेरे मौजज़न	१५
१२	महर्षि बसिष्ठ का राम को उपदेश…	भूलो न राम ख़ुद को…	१६
१३	वहदत का तमाशा…	जर्रे जर्रे में तेरा…	१७
१४	श्री कृष्ण…	तू ऐ कृष्ण सब में…	१९
१५	व्यापकता…	सब में रमा हुआ है…	१९
१६	जुदा है न होगा	जुदा मुझसे कुछ भी…	२०
१७	तू ही तू…	जिधर देखता हूँ उधर…	२२
१८	प्रार्थना…	तड़प मेरी मिटेगी…	२४
१९	फरमाने इलाही…	इस जहाँ में शाज़ मेरा…	२५
२०	हालते मस्ती…	पीकर शराबे वहदत्…	२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रम.	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
२१	हज़रते इल्म की आवाज़…	ढूंडना हो मुझको ढूंडो	२७
२२	कौन हो…	हज़रते दिल ने पूछा…	२९
२३	मेरी रोशनी…	मुझे देख खड़ा हूँ मैं…	३१
२४	निराली शान…	ऐ प्रभु तेरी निराली…	६२
२५	फज़्ले मुर्शिद…	मौज में जब आ गये…	३३
२६	गुरु स्तुति…	जहाँ में नेमते आला…	३४
२७	एहसाने मुर्शिद …	मैं पाक मुर्शिद की खाके पा…	३५
२८	श्री सत्गुरुदेव…	श्री शिवराम जी स्वामी…	३६
२९	श्री गुरुदेव…	ढूंडे चिराग लेकर…	३७
३०	कद्मे मुर्शिद…	श्री सत्गुर के चरणों में…	३८
३१	अज़मते मुर्शिद…	खिला है बाग़े मुर्शिद…	३९
३२	कलामे आज़म…	है ज़ात अपनी में खुद…	४१
३३	शुकराना…	मैं कुरबाँ साकिये वहदत…	४२
३४	आत्मानुभूति…	मैं न इन्द्रिय मैं न मन…	४३
३५	ज्ञान निष्ठा…	परिपूर्ण हूं मैं…	४५
३६	बाकी कहाँ…	मिट गया जब नक्शे दूई…	४७
३७	राजे बेखुदी…	बशर कोई मिटाये गर…	४८
३८	भूमा अवस्था…	सना अपनी ही सुनता हूँ…	४९
३९	असङ्गता…	जिस्म से हूं मैं इलैहदा…	५०
४०	ब्रह्मात्म स्थिति…	ख़ाब और बेदारी गैहरी…	५२
४१	विज्ञान नौका…	तप दान यज्ञ से…	५३
४२	निर्वाणषट्क…	न मन बुद्धि चित्त…	५५
४३	केनोपनिषद्सार…	मुमुक्षु पूछे सत्गुरु से…	५६
४४	पञ्चकोश निषेध…	समझ हकीकत को अपनी…	६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्रम.	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
४५	इश्के हकीकी···	जो चाहें जिन्दगी अब्दी···	६३
४६	यकीने कामिल···	कहने को यूं जहाँ में···	६५
४७	इमदादे ग़ैब···	काम रुकने का नहीं···	६६
४८	ईश्वर प्रेम···	जो भी चाहे छूटना···	६७
४९	ईश्वर सहारा...	खुदा को नाखुदा समझो···	६८
५०	माँग···	ईश्वर शरण हूँ तेरी···	६९
५१	नग़मये बेदारो···	कर तरक खुदी की···	७०
५२	मनसूर···	कह उठा मनसूर···	७१
५३	ढूंडना हो ढूंडलो···	इस्मोसूरत मैं छुपा···	७२
५४	फर्याद···	मुसफ्फ़ा हो गुनाहों से···	७४
५५	श्री संत प्रेमसिंह जी की याद···	ऐ प्रेम मूरत अब फिर···	७५
५६	यादे हक्···	याद से परमात्मा की···	७६
५७	दस्तक···	दिल के दरवाजे पे···	७७
५८	अबदी सुख···	जहाँ में ढूंडते सब हैं···	७९
५९	सकूने दिल···	हर इक फर्देबशर···	८०
६०	जपा कर रटा कर···	हरि ॐ तत् सत् जपा कर···	८१
६१	फ़र्याद···	कृष्ण है फरियाद मेरी···	८३
६२	भक्त के लक्षण···	वाणी उसकी होवे गद्गद्···	८५
६३	राजोन्याज···	उसने कहा तू कौन है···	८६
६४	बना दे···	ऐ प्रेम के दीवाने···	८७
६५	यादे सनम···	मैं सब कुछ भूल जाता हूँ···	८९
६६	शुभ इच्छा···	दुशमने जानी को मेरे···	९०
६७	विराट दर्शन···	अजब रूप वैराट को···	९०
६८	राम हृदय···	कहा राम ने था महावीर को ··	९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

६९	साँवला···	जिसका तूही साँवले···	९७
७०	आत्मनिवेदन···	आया था तेरी दीद को···	९८
७१	व्याने शहीद···	जहाँ के रञ्जोग़म से···	९९
७२	कनह्या को याद···	दिल में हो तेरी याद···	१०१
७३	कुर्बे हक्क···	खुदा की याद में यकजाँ···	१०२
७४	नये साल की मुबारक	खुदी की अपनी मिटाया···	१०३
७५	निराली शान···	शान दुनिया में तेरी··· ···	१०५
७६	दशम बोध··· ···	दहंकीकत सच्चिदानन्द···	१०६
७७	दशम कथा··· ···	किस्सा यूँ हैं दस जुलाहे	१०७
७८	विदेह भाव···	है समझा किसी ने यह···	१११
७९	प्रेम की महिमा···	कृष्ण को जो घर बुलाये···	११३
८०	बुल्बुल···	अरी बुल्बुल तू इस गुल्शन···	११४
८१	किताबे ज़िन्दगी···	सोच कर लिख ऐ बशर···	११६
८२	ढंडोरा··· ···	गाफिल न होना हक से···	११७
८३	जीनये इरफ़ान···	बनाया जीवन है जिसने धार्मिक···	११८
८४	तू ने··· ···	बनाया खेल जादू का···	१२०
८५	ज्ञानवान···	जिन्दगी की जिन्दगी···	१२१
८६	मसरूर···	प्रभु की याद में शागिल···	१२२
८७	मुसाफिर···	आया भी जो यहाँ पे ···	१२३
८८	मर्दे आरिफ···	कहाँ भूला तू फिरता है···	१२४
८९	अस्बात मनफ़ी···	खुद से नावाकिफ को अपना···	१२५
९०	मुहाफिज··· ···	खुदा खानाबदोशों की करे···	१२७
९१	साधन···	ध्वनि ॐकार की प्यारे···	१२९
९२	फर्ज़··· ···	भजन कर शम्भु का प्यारे···	१३०
९३	श्री कृष्ण ···	वंशी वाले की जय जब···	१३१
९४	श्रद्धा पुष्पाञ्जलि···	श्री स्वामी के चरणों में···	१३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दूसरा भाग

क्रम	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
९५	तारीफ…	तारीफ तेरी में हरफ	१३३
९६	मुहाफिज…	फानूस बन कर…	१३४
९७	रूबरू होता…	तेरा गर अपने मुर्शिद…	१३६
९८	नजदीकिये यार…	ज्ञानी को जाके कहदो…	१३७
९९	तेरी याद…	मैं सब कुछ भूल…	१३९
१००	मयखाने का घूंट…	कभी वहदत के मयखाने में आ…	१४०
१०१	सोना और जागना	अहंकारो धियं ब्रूते मा सुप्तं प्रतिबोधय	१४२
१०२	मस्तों की मजलिस	इक दफा मस्तों की मजलिस…	१४८
१०३	तब तलक ग़लत…	भ्रान्ति न निकले…	१५१
१०४	रुबाइयात…	सीने में जिसे यार को…	१५४
१०५	याद वाले…	याद में तेरी जो रहते…	१६०
१०६	सगुण से निर्गुण के दर्शन…	श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे…	१६२
१०७	अपनी वाकफीयत	अपना वाकिफ़ आप होना…	
१०८	श्री हनुमान का उपदेश विभीषण को	हृदय में जिस किसी के…	१६७
१०९	सम्बोधन…	तू जिस्म नहीं तू हक्क् है…	१६८
११०	श्री शिव-स्तुति…	एकं योगसमाधिना…	१७१
१११	आत्मा का स्वरूप…	न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं…	१७३
११२	भगवान् विष्णु…	माया कल्पित…	१७५
११३	श्री गुरु वशिष्ठ…	राम संवाद एक दफा श्री राम जी ने	१७६
११४	गीता ज्ञान…	खुद परस्ती छोड़ बन्दे…	१८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्र स	शीर्षक	प्रारम्भिक शब्द	पृष्ठ
११५	खुदी की भेंट···	अगर मुर्शिद के कदमों में···	१८३
११६	कैलासपति···	हमें नींद से आन जगाया है···	१८५
११७	तेरा कहते कहते···	मैं खो जाऊँ खुद को···	१८६
११८	मुहब्बत···	यह सब सूरत खुदा की है···	१८८
११९	आरिफ···	खुदी को छोड़कर···	१९०
१२०	भेंट···	महफल में तेरी फिर से दीवाने आ गये हैं···	१९२
१२१	ले चले···	किस लिये आये यहाँ···	१९४
१२२	भक्त के उत्तर···	क्या बतायें तुझको हमदम···	१९५
१२३	फरमाने इलाही···	जा मुझसे प्यार करता है···	१९६
१२४	प्रार्थना···	तुझे मालूम है मैं···	१९७
१२५	शिकायते दुनिया···	किसी ने पूछा···	१९९
१२६	ज्ञानवान का उत्तर	कहानी कह चुका···	२००
१२७	भगवद् स्तुति···	यह दिल उसी से ही मकां है···	२०१
१२८	अहले याद···	याद में हक् की जो···	२०३
१२९	चेतावनी···	बिगड़ती जा रही है बात···	२०५
१३०	अधिकारी को संबोधन···	दरस तौहीद का दिल को···	२०६
१३१	तड़प···	आ जा आ जा साँवर्या···	२०८
१३२	अध्यारोप अपवाद	ब्रह्म के अज्ञान से···	२१०
१३३	आत्म-निवेदन···	काम करता जो भी खाता···	२११
१३४	हवादिस···	तू समझता है हवादिस···	२१२
१३५	दीदार व गुफतारे आरिफ···	हासिल होता लुत्फ···	२१३
१३६	दुर्वासना प्रतिकार	प्रातर्वैदिक···	२१४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

क्रम	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
१३७	व्यापकता···	हक़ीकत खोज कर देखो···	२२२
१३८	श्रीराम की याद	सी लिया सीने में···	२२३
१३९	श्री शिव स्तुति···	माया तेरी से मोहित···	२२४
१४०	ईश्वर प्रार्थना···	जय जय पिता परम आनन्द दाता	२२५
१४१	काबिल···	यह दुनिया नहीं दिल लगाने के काबिल	२२७
१४२	शोके वहदत···	वहदत का यह शौक़···	२२८
१४३	सुराघे जिन्दगी	दिल की तह में डूबकर···	२२९
१४४	आरजू···	जिस से सब आबाद हैं···	२३०
१४५	हे परमात्मा···	अपने कदमों से···	२३१
१४६	कादिर परमात्मा···	हुसीन जानकर···	२३३
१४७	तेरी याद···	याद में तेरी जो गुजरे···	२३५
१४८	श्रद्धाञ्जलि स्वा० रामकृष्ण	उठ गये जहाँ से यारो···	२३७
१४९	,, ,,	वैकुण्ठ निवासी स्वामी···	२३८
१५०	परदा नशीं···	हर किसी की आँख में···	२३७
१५१	निष्कामता···	प्रभु के नाम पर···	२४०
१५२	गरज़···	मुर्शिद कामिल से इक दिन···	२४१
१५३	गायत्री अनुवाद	हृदय के अन्दर जो चैतन्य ज्योति···	२४३
१५४	सौभाग्य	जब किसी को मिलता है धन	२४३
१५५	निर्मानता···	समझा रहे शजर है···	२४४
१५६	विचार का तरीका···	कौन हूँ मैं···	२४५
१५७	अद्वैतानुभव···	जुरंये मय से हुआ हूँ···	२४६
१५८	तेरी याद···	जिसने ही तेरी याद को···	२४८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रम	शीर्षक	आरम्भक शब्द	पृष्ठ
१५९	फकीरों की खिदमत…	कज़ा से रोक देती है…	२४९
१६०	श्रद्धाञ्जलि स्वा. चैतन्य…	दरबदर हमको भटकते जमाना…	२५०
१६१	लामकां…	मकीं है खुद मकानों में	२५१
१६२	खुदी अपनी तेरी हाइल	खुदा की खास रहमत का	२५२
१६३	कल्याण भावना	सब सुखी हों इस जहाँ में	२५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

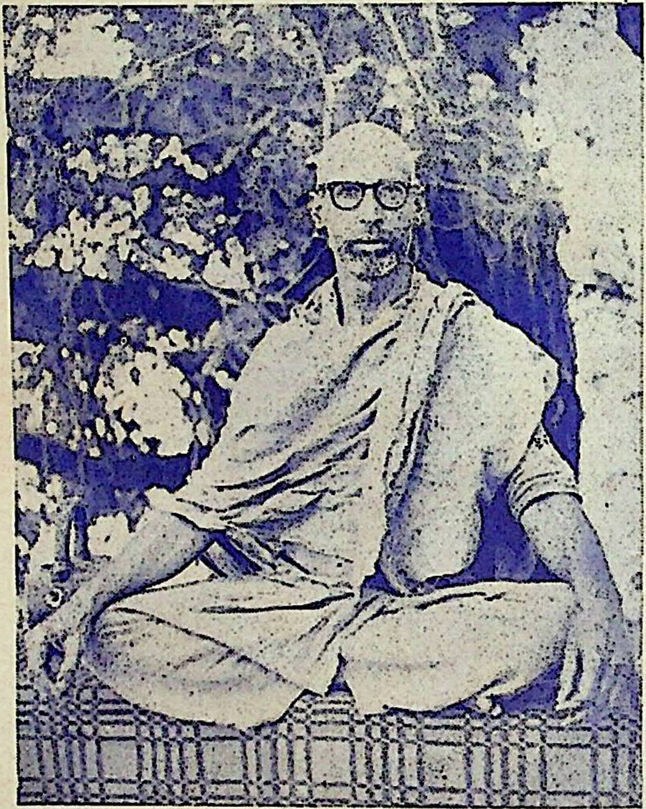

स्वामी परिपूर्णानन्द गिरिः "पूरण"

रचयिता { 'पूरण हुलास'
'परिपूर्ण अनुभव'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ॐ

★ परिपूर्ण अनुभव ★

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ।

पूरण कहते हैं पूरण परमात्मा को, यदि इन्द्रियातीत तो भी है पूरण ।
देहेन्द्रिय प्राण मन बुद्धि में भी, यदि चमकता है तो भी है पूरण ॥
उस पूरण से जगत उत्पन्न होवे, यदि लीन होवे तो भी है पूरण ।
उस पूरण की पूर्णता पकड़ पूरण, पूर्ण रहे अवशेष फिर भी है पूरण ।

॥ प्रातः स्मरण स्तोत्र ॥

प्रातः करुं याद उस आत्म पद को ।
परमहंस ऋषियों की है सद्गति जो ॥
स्वाभाविक स्फुरता हृदय में जो सबके ।
तुरीय सच्चिदानन्द हैं नाम जिसके ॥
जो जाग्रत् स्वप्न में हमेशा है खेले ।
सुषुप्ति में जाकर जो निर्भीक सोवे ॥
जो तीनों अवस्था को निरपेक्ष जाने ।
समाधि में अपने को आनन्द माने ॥
वही ब्रह्म निष्कल अखण्ड आत्मा हूं ।
न मैं भूत पञ्च हूं न इनकासमूह हूं ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भजन मैं करूं आत्मपद का सवेरे।
चलें वाणी मन दोनों जिसके ही प्रेरे॥
पकड़ वाक् मन की में आता नहीं जो।
परन्तु पता देता अपना वहीं जो॥
जिसे नेति नेति से हैं वेद गाते।
अहंब्रह्म वृत्ति से जिसको हैं पाते॥
वही देवदेवाग्रच पुरुष आत्मा हूं।
न मैं भूत पञ्च हूं न इनका समूह हूं॥२

नमस्कार करता हूं उस आत्मपद को।
है अज्ञान तम का भी साक्षी असंग जो॥
है आनन्द सिन्धु वह चैतन्य ज्योति।
रवि चन्द्र अग्नि की ज्योति की ज्योति॥
है पूरण स्वतः सिद्ध अनादि सनातन।
पुरुषोत्तम है नाम जिसका पुरातन॥
हैं चौदह भुवन भासते जिसमें ऐसे।
हैं रज्जु में भासें भुजङ्गादि जैसे॥
वही सच्चिदानन्द अनन्त आत्मा हूं।
न मैं भूत पञ्च हूं न इनका समूह हूं॥३॥

लोक तीनों के हैं भूषण श्लोक तीनों पुण्यम
प्रातः इनको जो पढ़े वह पाये पद को विष्णुम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ॐ

जायेरिहायश=रहने की जगा ॥

मकानेदिल में रहते हैं मेरे वह [१]लामकाँ होकर ।
अजब यह रमज़[२] इरफाना [३]अयाँ हैं वह [४]निहाँ होकर ॥१॥
वह जाग्रत के स्वपन के और सुषुप्ति के भी हैं साक्षी ।
तमाशे बेतमाशे को वह देखें [५]पासबाँ होकर ॥२॥
ग़लत कहते हैं छुप जाये खुदी में नूरे [६]लाहद वह ।
हकीकत में जो हाज़िर है वही बोले अयाँ होकर ॥३॥
हज़ारों गरचे पोशाकें बदल कर आये बहुरूपी ।
जिसे पहचान है उसको मिले उसको [७]कमाँ होकर ॥४॥
यह माना बेनिशाँ है वह निशाँ की हद से बाहिर है ।
[८] वले दीदार अपने को हुआ ज़ाहिर जहाँ होकर ॥५॥
सुना है [९]पीरे आरिफ़ से यह जुमला ज़ाते मौला है ।
बहारे गुल्शने हस्ती हुई ज़ाहिर [१०]चमाँ होकर ॥६॥
खुली [११]हक़्बीं निगाह जिसकी ब-फज़्ले-मुरशिदे-कामिल ।
भुला सकता नहीं उसको खुदा भी खुद जहाँ होकर ॥७॥
सभी नादानो का सिर हैं [१२]सना मे तेरी ऐ मुरशिद ।
हज़ारों गरचे [१३]आलिम हों [१४]सनाखाँ यकज़ुबाँ होकर ॥८॥

---

१. देश रहित । २. वेदान्त वाली । ३. प्रकट । ४. छुपे हुये ।
५. रक्षक । ६. व्यापक । ७. झुककर । ८. लेकिन । ९. सद्गुरू ।
१०. खिली हुई । ११. ब्रह्मदृष्टि । १२. स्तुति । १३. विद्वान ।
१४. स्तुति करने वाले ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मुझे १५ख़िल्वत में मिलकर वह १६मुख़ातिब यूं हुये मुझ
न करना राज़ को १७अफ़शा मेरे तुम राज़दाँ होकर ॥
अगर करना तो तब करना जो पूछे शौक़ से तुमको।
तो निकलेंगे ज़ुबाँ तेरी से हम खुद ही १८बयाँ होकर ॥
नहीं मौजूद जब कुछ भी बिना उनके जो हैं पूरण।
ज़रा हो देखने वाला मिलें हरजा अयाँ होकर ॥

१५. एकान्त। १६. सम्बोधवान। १७. प्रकट। १८. व्याख्या

निगाहे कामिल—पूरण दृष्टि।

तू ही तू है हर तरफ कोई नहीं है दूसरा।
चश्मे हक़्बीं से है ज़ाहिर तू ही हाज़िर हर जगा ॥१
आँख में दिल में ज़ुबाँ में १मेहर में २महताब में।
आग के ३शोलों में तेरी देखता हूँ मैं ४ज़िया ॥२
हैं ज़मीनो आसमाँ यूं ज़ात तेरी से ५मुहीत।
जिस तरह सब लहरों को हो ६आब ने घेरा हुआ ॥३
गरचे ७मौजूदात होते हैं फना पैदा भी वह।
करते हैं मौजूदगी तेरी को ज़ाहिर ८बरमला ॥४
कहते हैं तू ९गोशये दिल में हमेशा १०जानशीं।
११लेक १२बहरोबर में पाता हूँ नहीं तेरे सिवा ॥५

१. सूर्य। २. चन्द्रमा। ३. ज्वालायें। ४. रौशनी। ५. घिरे
६. जल ७. भूत प्राणी। ८. ऊंची स्वर से। ९. दिल के कोने
१०. बैठा हुआ। ११. परन्तु। १२. जल स्थल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वह न होंगे [13]ज़ात तेरी से कभी भी [14]बारयाब ।
जो समझते हैं हमेशा तुझ को अपने से जुदा ॥६॥
है उन्हें दीदारे हक्क हर [15]फ़ेल में हर [16]कौल में ।
दिल में जिनके महज़ हस्ती तेरी बस्ती है सदा ॥७॥
गरचे ज़ञ्जीरे हुकम में तेरी बांधे [17]अर्शोफर्श ।
आरिफों की कैद से मुश्किल तुझे होना है [18]वा ॥८॥
[19]ज़ाकिरोमज़कूर तू ही [20]फेलोफाइल भी तू ही ।
पैहन कर पोशाक [21]ख़मसा खेल अपनी कर रहा ॥९॥
गरचे हैं यह नामो सूरत मुख़्तलिफ़ [22]मुतज़ाद भी ।
तह में सबकी तू ही पूरण ज़ेवरों में चूं [23]तिला ॥१०॥

१३. स्वरूप। १४ लाभवान। १५. क्रिया। १६. वचन। १७ आकाश और पृथिवी। १८. आज़ाद। १९. वक्ता और वाच्य। २०. क्रिया और कर्ता। २१. इन्द्रिय और मन। २२. विप्रीत। २३. स्वर्ण।

दीदारेयार=प्रियतम के दर्शन।

ख़ुदी का दूर कर परदा अगर हो देखने वाला ।
[1]जमाले यार है [2]हरसू कहीं [3]अदना कहीं [4]आला ॥१॥
कसूर अपनी निगाह में था जो बाहिर ढूंडते थे हम ।
[5]मुसफ़्फ़ा मुरशिदे-कामिल की [6]ख़ाकेपा ने कर डाला ॥२॥
कहां इकसीर में ताकत थी [7]रुतबा यूं बढ़ाने की ।
निगाहे मुरशिदे-कामिल ने [8]लासानी बना डाला ॥३॥

१. प्रकाश। २. हरतरफ। ३. निकृष्ट। ४. उत्कृष्ट। ५. शुद्ध। ६. चरणधूड़ी। ७. इज्जत। ८. अद्वैत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नज़र अपनी के आगे था जो परदा जब उठा देखा।
न अपने से जुदा था वह मचाते जब थे [९]वावेला ॥४॥
तलाशे-यार में फिरते रहे हम सैंकड़े बरसों।
ख़ुदी को छोड़ जब देखा वही था ढूंडने वाला ॥५॥
हकीकत में नहीं मौजूद यां कुछ भी बिना उसके।
उसी का नाम बन्दा है पुकारें उसको ही [१०]मौला ॥६॥
वह है [११]इल्मो-सरूर-हस्ती [१२]मुनव्वर [१३]ज़ात अपनी से
उसी के [१४]फ़ैज़े रहमत से खिली गुलज़ार [१५]चूंलाला ॥७॥
ज़ुबानो-चश्म हैं [१६]साकिन बयां में दीद में उसकी।
वले दीदार अपने को बनाये दिल को वह [१७]आला ॥८॥
दिलों में [१८]जागुज़ीं सबके वले दिल साफ़ में रौशन।
जिसे पहचान है पूरण वही है [१९]अफज़लो-बाला ॥९॥

९. शोर, उपासना। १०. ईश्वर। ११. ज्ञान-आनन्द-सत्। १२. प्रकाशवान। १३. सत्ता। १४. कृपा प्रसाद से। १५. पोस्त के फूल की न्याईं रंगबिरंगी। १६. चुप। १७. करण। १८. बैठा हुआ। १९. श्रेष्ठ।

बेहजाबी=परदार हितपना

कहाँ का परदा किधर से [१]मख़फ़ी, कब उसका चिहरा [२]नकाब में है।
कसूर अपनी निगाह में है, बगरना वह कब [३]हजाब में है ॥१॥
है [४]ज़ात अपनी से खुद वह रौशन, [५]अरश में दिल के हमेशा रौशन।
न [६]बेशो कम है हुआ न होगा, जो नूर [७]आलोजनाब में है ॥२॥

१. छुपा हुआ। २, ३. परदा। ४. स्वरूप। ५. आकाश। ६. अधिक। ७. परमात्मा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

[8]बग़ैर देखा जहाँ की हर शै, को उससे रौशन ही हमने पाया ।
न एक ज़र्रा है उससे खाली, उसी से सूरज भी [9]ताब में है ॥३॥
नज़र में सबकी वह खुद को देखे, सुने वह कानों में सब के खुद ही ।
ज़ुबानो-दिलमें है उसकी ताकत्, लिखा [10]मुकद्दस किताब में है ॥४॥
भले ही [11]जाहिल नाअहल होकर, न देखें उसकी जो सब को देखे ।
कहें हम अपनी तो क्या हि हालत, यह सैरे-दरया [12]हुबाब में है ॥५॥
नहीं है इनसाँ न कोई हैवाँ, न देव जिन्नो परी नबातात् ।
उमड़ रहा है यह [13]बह्रे-हस्ती, हमेशा ऐसे सैलाब में है ॥६॥
खुली हैं जिनकी जिगर की आँखें, है फज़्ले मुरशिद भी जिनको हासिल ।
यहां वहां वह उसी को देखें, खुशी न उनकी हिसाब में है ॥७॥
यह [14]लुत्फ़े वहदत् नसीब उसकी, जो [15]पायेमुरशिद पे होवे कुरबाँ ।
न हस्ती अपनी मिटाये जबतक, फंसा वह [16]दामे-अज़ाब में है ॥८॥
सुना है हमने पुराना किस्सा, जनक ने अष्टावकर से पूछा ।
कहो ऋषी तुम वह [17]राज़े-वहदत, लो पायों मेरा अकांब में है ॥९॥
ऋषी ने पहले थी भेंट माँगी, जनक ने अपनी खुदी नज़र की ।
खुदी मिटिजब वह तू है राजन्, हूँ मैं ही [18]यज़दाँ जवाब में है ॥१०॥
किसी ने पूछा है [19]वसले-हक् क्या, कहो हमें भी तो कुछ निशानी ।
कहा मैं उसमें वह मुझसे [20]यक्जाँ, कि जैसे खुश्बू गुलाब में है ॥११॥

---

८. ध्यान से । ९. प्रकाश । १०. पवित्रपुस्तक, वेद । ११. अज्ञानी । १२. बुलबुला । १३. समुद्र । १४. अद्वैत का आनन्द । १५. गुरुचरण । १६. कष्ट के जाल । १७. अद्वैत का रहस्य, ब्रह्मज्ञान । १८. परमात्मा । १९. परमात्मा का मिलाप । २०. अभेद ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वह ढूंढ अपनी में देख मुझको, थे खिलखिलाए कहा था ऐसे ।
मैं पास तेरे तू दूर समझा, यह तेरी हालत तो [१९]ख्वाब में है ॥१२॥
तलाशे-पूरण में क्या है फिरता, खुदी मिटाकर तू देख खुद को ।
वह तू है जिसकी तलाश तुझको, फ़रक न लहरों में न [२०]आब में है ॥१३॥

१९. स्वप्न २०. जल ।

दीदारे हक्क—ब्रह्मदर्शन

[१]चश्मे-हक्बीं से तुझे सब में ही ज़ाहिर देखा ।
[२]तुरफ़ा यह है कि इधर तुझ को हि [३]नाज़िर देखा ॥१॥
कौन कहता है तेरा [४]दश्त है [५]आलामस्कन् ।
दिल के कोने में तुझे हमने है हाज़िर देखा ॥२॥
दिल के सोफा को मिली आप से अच्छी [६]ज़ीनत ।
चुपके बैठे हो दले [८]साहिरे-साहिर देखा ॥३॥
वक्त था फिरते रहे ढूंड में तेरी बरसों ।
खुद को देखा तो तुझे हाज़िरो-नाज़िर देखा ॥४॥
किस ज़ुबां से हो बयां बख्शिशो-इहसां [९]मुरशिद ।
खाके कदमों से तेरी [१०]अर्श भी [११]कासिर देखा ॥५॥
दिल के अन्दर ही नहीं [१२]महज़ तू [१३]ताबां [१४]दिलबर ।
[१५]दहरोबर में भी तेरा [१६]हुस्न बराबर देखा ॥६॥

१. ब्रह्मदृष्टि । २. आश्चर्य । ३. द्रष्टा । ४. जंगल । ५. उत्तमघर । ६. सुन्दरता । ७. चुपचाप, साक्षी । ८. जादूगरों का भी जादूगर । ९. गुरुदेव । १०. आकाश । ११. अल्प । १२. केवल । १३. प्रकाशमान । १४. प्रियतम । १५. जलस्थल, हरजगा । १६. सौन्दर्य ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सबमें रौशन हो १७वले परदा खुदी का ओढ़े।
छुपके रहने में तुझे हम ने है १८माहिर देखा ॥७॥
१९जिस्म में रहते हुये जिस्म ही जाना खुद को
२०वक्ते रहलत में तुझे २१साहिरी-ताइर देखा ॥८॥
गरचे खल्कत से हुये आप हैं २२पिनहाँ पूरण।
हम ने हरजा ही तुझे २३नातिकोबासिर देखा ॥९॥

---

१७. परन्तु। १८. निपुण। १९. शरीर। २०. शरीर छोड़ने के समय। २१. जादू का पक्षी। २२. छुपे हुए। २३. बोलने वाला और देखने वाला।

★ मश्केख़्याल=ब्रह्माभ्यास ★

जिस शै को देखता हूँ १जलवा तेरा २अयाँ है।
बादल के झुरमटों में, बिजली की ३चमकों में।
पानी की बूंदियों में लहरों की करवटों में॥
४ज़ाते खुदा ५रवाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ जलवा तेरा अयाँ है॥१॥
फूलों के रंगोबू में, ६पैमाना में ७सुबू में।
आशिक की आरज़ू में, दिल में ८रगे-गुलू में।
ज़ाहिर तू कब निहाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ जलवा तेरा अयाँ है॥२॥
गुलज़ार की ९फज़ा में, बरसात की हवा में।
१०महताब की ११ज़िया में, तारों की १२चश्मे-वा में।

---

१. प्रकाश। २. प्रकट। ३. चमकना। ४. ईश्वर का स्वरूप। ५. अनुस्यूत। ६. प्याला, अन्तःकरण, व्यष्टि। ७. घड़ा समष्टि, । ८. शाहरग, धनाड़ी। ९. खुली जगह। १०. चन्द्रमा। ११. प्रकाश। १२. खुली आँख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नूरे-खुदा अयाँ है जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूं जलवा तेरा अयाँ है॥
१३शमसो—कमर में तू है, १४नूरे-सहर में तू है।
दिलमें जिगर में तू है, हर एक घर में तू है।
गो नाम लामकाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ जलवा तेरा अयाँ है॥
सुनसान जङ्गलो में, ऊंची पहाड़ियों में।
मुफ़लिस के झोपड़ों में, १५इशरत की महफलो में।
सबमें तू ही १६रवां है, जलवा तेरा अयां है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है॥
आँखों की हर रमक में, तू १७हुस्न की झलक में।
तू १८हूर में १९मलक में, तू २०फ़र्श में २१फ़लक में।
जाहिर तू हर २२ज़माँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है॥
फूलों की पखड़ियों में, २३हूरों की चितवनों में।
२४काबा में मन्दिरों में, तिरछे हुए बुतों में।
हुस्ने-खुदा २५दमाँ है जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है॥

---

१३. सूय और चन्द्रमा। १४. प्रातःकाल का प्रकाश। १५. ख़ु... १६. अनुस्यूत। १७. सुन्दरता। १८. अप्सरा। १९. देवता। ... पृथिवी। २१. आकाश। २२. काल। २३. अप्सराओं। २४. मुस... का मक्के में पूजा स्थान। २५. चमक रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

२४साज़े-तरबफ़ज़ा में, २५नाक़ूस की *सदा में।
२६माशूक़ की *अदा में, २७अश्शाक़ की वफ़ा में।
तूही जहाँ तहाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है ॥८॥
२८जानाँ ! तू २९लाबयाँ है, तू बेहू रे-बेकराँ है।
तेरा ही सब निशाँ है, गो नाम ३०लानिशाँ है।
क्या हाजते-बयाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है ॥९॥
हूँ तुझ पे मर मिटा हूँ, तुझ में ही मिल गया हूँ।
कब तुझ से मैं जुदा हूँ, तेरा ही ३१आइना हूँ।
पूरण तू ३२जानेजाँ है, जलवा तेरा अयाँ है।
जिस शै को देखता हूँ, जलवा तेरा अयाँ है ॥१०॥

. सुरीला बाजा। २५. शंख की ध्वनि। *आवाज। २६. प्रियतम। ख़रा। २७. प्रेमी की लगन में। २८. प्रियतम। २९. अवाच्य। . अमूर्त। ३१. दर्पण। ३२. जीवन का जीवन।

★ सदाये अर्श=आकाश वाणी ★

जिस जगह पर तुम हो रहते वह हमारा है मकां।
हम तुम्हारी रौशनी हैं जिस से देखो कुल जहाँ ॥१॥
...ड में १नाहक़ हो फिरते २दैरोकाबा में कहीं।
...र हमारा दिल तुम्हारा गरचे हम हैं ३लामकाँ ॥२॥

वृथा। २. मन्दिर और मस्जिद। ३. देश रहित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

उल्लू और चमगादड़ हमको देख ही सकते नहीं।
गरचे उनके बालोपर और ४चश्मोदिल हम से ५अयां।
हर ६रगोरेशा से जाहिर पर छुपे हैं इस तरह।
जिस तरह गहनों से सोना होता है खुदही ७निहां ॥४
हमहैं ८मानिन्द बिजली के और तुम हो मानिन्द बल्ब
जब बटन मन का दबाया होगया वां ९नूर आयां॥
यह १०मिसाल है इक इशारा ११महज समझाने लिये।
वरना हम से कब जुदा हैं यह जमीनो-आसमां।
हम से रौशन चान्द सूरज चश्मो दिल हैं सब हुये।
बल्के हम खुद मेहरो-माह हैं चश्मोदिल १२गोशोजुबां।
किस की ताकत ले सके वह खुद-बखुद इक १३लुकमा
सब में हम हैं खुद १४खुरिन्दा गरचे हम हैं १५बेदहां।
सुनना चाहो गर हमें तुम सोहबते—१६आरिफ करो।
बेजुबां होकर भी उन से रहते हैं हम १७हमजुबां।
हर जुबां १८जीरूह पे १९नातिक हम हैं होते गो, वले
२०कश्फ़ होता है हमारा २१अज—कलामे—आरिफां॥
हर शकल भी गो हमारी है जहां में २२बिल्यकीं।

---

४. चक्षु और हृदय। ५. प्रकट। ६. नाड़ियां। ७. छुपा हुआ। सदृश। ९. प्रकाश। १०. दृष्टान्त। ११. केवल। १२. कान वाणी। १३. ग्रास। १४. खाने वाले। १५. मुख रहित। १६. ज्ञा १७. साथबोलने वाले। १८. जीवमात्र। १९. बोलने बाले। प्रकट। २१. ज्ञानवानों की वाणी से। २२. निश्चित रूप से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मिलते हैं २३बादस्तपञ्जा २४अज़ तआरिफ़—आरिफां ॥११॥
हर घड़ी हाज़िर हैं नाज़िर हर जगा हम सामने ।
सब में सब कुछ हम हैं पूरण २५लाज़माँनो २६लाबयाँ ॥१२॥

२३. हाथ मिलाकर। २४. ज्ञानी द्वारा पहचान कराये जाने से। २५. काल रहित। २६. शब्द रहित।

★ परदा ★

शरीफ़ औरत न निकले जूँ १बजुज़ बुरका लिये मुँह पर।
तुझे भी शर्म आती है बजुज़ परदा लिये मुँह पर ॥१॥
२जमाले—हुस्न से ३खीरा न आंखें हों हर इक की ता।
तुझे वाजिब ही परदा है कि ओढ़े तू उसे मुँह पर ॥२॥
कहां ४ज़ाहिद में ताकत है जुब खोले तेरे आगे।
मगर आरिफ़ की हिम्मत है सुनाये जो तुझे मुँह पर ॥३॥
भरा ज़ाहिद का दिल खाहिश से दुन्या की औ ५जन्नत की।
तू जाने दिल की हालत को तुझे क्यूँकर कहे मुँह पर ॥४॥
न वाकिफ़ होते आरिफ़ हैं किसी जन्नत के दोज़ख के।
लगी होती निगाहें हैं ६फ़कत उनकी तेरे मुँह पर ॥५॥
तेरा दीदार जन्नत है हर इक शै में ही आरिफ को।
तेरे कद से वह वाकिफ़ है अगर परदा तू ले मुँह पर ॥५॥
तलाशो-जुस्तजू जब तक थी तब तक गुफ़तुगू जारी।

१. विना। २. सुन्दरता का प्रकाश। ३. चुंध्या जाना। ४. भेद वादी। ५. स्वर्ग। ६. केवल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

क्रिया दीदार आंखों ने ७कुफल मानो लगे मुँह पर ।।७।।
अजब दीदार उल्टा है ८फ़िदा मुझ पर वह मैं उस पर ।
❀तलब थी जिसकी मुद्दत से वही है सामने मुँह पर ।।८।।
हो ओझल किस तरह सूरत तेरी आरिफ की आंखों से ।
तुही फिरता है ९नामोस्वर के परदा को लिये मुँह पर ।।९।।
बजुज़ तेरे न परदा है न परदे की बनावट है ।
तुही परदा बनावट है कहे पूरण तुझे मुँह पर ।।१०।।

७. ताले । ८. न्योछावर । ❀मांग, इच्छा । ९. नामरूप ।

★ ढूंडता ★

जो उस सांवले को सदा ढूंडता है ।
उसे एक दिन सांवला ढूंडता है ।।१।।
अरे दिल तू उसको कहां ढूंडता है ।
वह तुझ में छुपा है कहां ढूंडता है ।।२।।
हर इक १चश्मोदिल में वही है चमकता ।
जिसे जंगलो में फिरा ढूंडता है ।।३।।
मिलेगा न उसको कभी भी वह हरगिज़ ।
जो इस दिल से बाहिर पड़ा ढूंडता है ।।४।।
था लड़का बग़ल में जो पूछा किसी ने ।
अरे ! २कूबक़ू तू क्या ढूंडता है ।।५।।
लगा रो के कहने ३पिसर गुम हुआ, यह ।
बहुत देर से ४ग़मज़दा ढूंडता है ।।६।।

१. आंख और दिल । २. गली-गली । ३. पुत्र । ४. शोकयुक्त ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बुझाया बग़ल में है [5]लख़्तेजिगर वह।
जिसे कूबकू तू फिरा ढूंडता है ॥७॥
सम्भल कर जो देखा था लड़का बग़ल में।
हुआ देख हैराँ जिसे ढूंडता है ॥८॥
वहाँ बाप बेटा थे लेकिन यहाँ पर।
है [6]मतलूब ख़ुद जो फिरे ढूंडता है ॥९॥
जिसे ढूंडने का [7]अमल पड़ गया है।
वह इस ढूंडने में [8]मज़ा ढूंडता है ॥१०॥
इधर बनके [9]आशिक उधर आप [10]माशूक़।
अजब [11]लुत्फ पूरण हुआ ढूंडता है ॥११॥

५. पुत्र। ६. प्राप्त करने योग्य। ७. चस्का, व्यसन। ८. आनन्द। ९. प्रेमी। १०. प्रीयतम। ११. मौज।

★ हकीक़त=सच्चाई ★

दिल में तेरे [1]मौजज़न इक [2]बहरेबेपायाँ रहे।
[3]हैफ़ तू इक क़तरा—पानी केलिये [4]गिरयाँ रहे ॥१॥
रौशनी तेरी से रौशन चाँद सूरज हैं सभी।
हैफ़ तू [5]तारीकीयेवँहमी से यूं [6]नालाँ रहे ॥२॥
[7]ज़ातेलामहदूद का तुझ से ही होता है [8]ज़हूर।
हैफ़ तू [9]आज़ादे मुतलिक [10]कैदीयेज़न्दाँ रहे ॥३॥

१. लहरा रहा। २. किनारे रहित समुद्र। ३. अफसोस। ४. रो रहा।
५. कल्पित अन्धेरा। ६. रो रहा। ७. व्यापक स्वरूप। ८. प्रकट।
९. स्वतन्त्र। १०. जेलख़ाने का कैदी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नूर तेरा ११सूबसू है १२बहरोबर में १३जलवाज़न ।
हैफ़ १४फ़ानीजिस्म से तू किस तरह १५नाज़ाँ रहे ॥४॥
तूही १६मम्बा ज़िन्दगी का तुझ से हैं जिन्दा सभी ।
हैफ तू मरने के डर से हर घड़ी १७लरज़ाँ रहे ॥५॥
तूही था मौजूद पहले अब भी है १८आइन्दा भी ।
हैफ़ तू होने में अपने १९शकीओ-हैराँ रहे ॥६॥
ज़ात तेरी २०बेनियाज़ोजाविदाँ है लाज़वाल ।
हैफ़ बे-पहचान अपनी ज़ात तू २१तरसाँ रहे ॥७॥
फाड़ दे परदा खुदी का मैं मेरा कुरबान कर ।
ता २२जलालेमेहरेअनवर ज़ात का ताबाँ रहे ॥८॥
हैं सभी २३शादां ओ खुर्रम ज़ात पूरण से तेरी ।
तूही २४रब्बुलआलमीं है गर तुझे पेंहचां रहे ॥९॥

११. हर तरफ । १२. जल, स्थल । १३. प्रकाशित । १४. नाशवान । १५. अभिमानी । १६. स्रोत, चशमा । १७. कम्पित । १८. भविष्यत । १९. संशयवान । २०. उदार और शाश्वत । २१. भयभीत । २२. चमकते हुये सूर्य का प्रकाश । २३. प्रसन्न । २४. सर्वलोकों का मालिक ।

★ महर्षि वसिष्ठ का भगवान राम को उपदेश ★

भूलो न राम खुद को जब तक कि १दम में दम है ।
जानो खुदी को २मूज़ी भारी बड़ा यह ग़म है ॥१॥
हैराँ उदास तब हो समझे हो जिस्म खुद को ।
भूले हो ३ज़ात अपनी जिसमें न नामे ग़म है ॥२॥

१. जीवन । २. दुःखदने वाला । ३. स्वरूप ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

पैहचान अपनी करलो तुम जिस्मो जाँ न दिल हो।
४शाहिद मगर हो सबके तुझ में न रंजो-ग़म है ॥३॥
समझो न जिस्म खुद को जानो कि ५ज़ातेहक्क हूँ।
तुम ६महज़ ७इल्मोहस्ती तुझ में कहां ८अलम है ॥४॥
काइम जहां किया है तेरे ख़याल ने ही।
छोड़ो ख्याल देखो सारा जहाँ ९अदम है ॥५॥
तेरी नज़र से काइम सारा जहां भी मैं भी।
मेरी निगाह में रमता इक राम १०ज़ेरोबम है ॥६॥
११वाहिद हो १२ज़ातेमुतलिक् तुझ में जहां नहीं है।
तुम खुद बने जहाँ हो इसमें न १३बेशोकम है ॥७॥
भरपूर सब में तुम ही ए राम! रम रहे हो।
१४माही से ले के १५माह तक तेरा गड़ा १६अलम है ॥८॥
बोले यह राम सुनकर ऐ १७राहनुमाये–पूरण।
१८कुरबाँ निसार सदके कदमों में सिर भी १९ख़म हैं ॥९॥

४. साक्षा। ५, ब्रह्मस्वरूप। ६. केवल। ७. ज्ञान और सत्ता। ८. शोक। ९. अभाव। १०. नीचे ऊपर। ११. एक। १२. अद्वैत स्वरूप। १३. अधिकता, न्यूनता। १४. मच्छली। १५. चन्द्रमा। १६. झंडा। १७. पथप्रदर्शक। १८. न्योछावर। १९. झुका हुआ।

★ वहदत का तमाशा ★

ज़र्रे ज़र्रे में तेरा १हुस्न २सरापा देखा।
तेरी ३कसरत में भी ४वह्दत का तमाशा देखा ॥१॥
ढूंडने वाले तुझे ५कोहोबयाबां में गये।

१. सौंदर्य। २. भरपूर। ३. द्वैत। ४. अद्वैत। ५. पहाड़ और जंगल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हमने जब देखा तुझे दिल में ही बैठा देखा ॥२॥
[6]अहले दुन्या की नज़र तुझको देखे क्योंकर ।
तुझ को [7]आरिफ़ ने हैं [8]बेनामोसवर का देखा ॥३॥
गरचे हर दिल में तेरा हुस्न है [9]जलवा अफ़रोज़ ।
[10]बेह्‌रोबर में भी तेरा नूर [11]हवैदा देखा ॥४॥
पत्ते पत्ते से पता मुझको है मिलता तेरा ।
डाली डाली में भी वहदत का नज़ारा देखा ॥५॥
ज़ात तेरी से जुदा क्योंकर होवे कोई ।
[12]चौदह तबकों में तेरा घेर है डाला देखा ॥६॥
गरचे [13]राज़िक है सभी दुन्या का [14]वाहिद तूही ।
अपने बन्दों से तेरा ढंग निराला देखा ॥७॥
सबको देता है रिज़्क हस्बेल्याक़त मालिक् ।
[15]पिसरे–खुद से तो [16]सलूक उसका अनोखा देखा ॥८॥
जानो-दिल से हूँ [17]फिदा तुझ ऐ मुरशिद्‌कामिल ।
तेरे कदमों को है [18]फ़रदौस से [19]आला देखा ॥९॥
[20]इल्मोहस्ती के सिवा कौन है इसजा पूरण ।
हमने तुझको है [21]फ़क़त् तेरे ही जैसा देखा ॥१०॥

---

६. भेददर्शी । ७. ज्ञानवान । ८. बिना नाम रूप वाला । ९. प्रकट । १०. तरीखुशकी । ११. ज़ाहिर १२. चौदहभुवन । १३. रोज़ी देने वाला । १४. अकेला । १५. स्वपुत्र । १६. वर्ताव । १७. कुरबान, न्योछापर १८. स्वर्ग । १९. उत्तम । २०. चैतन्य सत्ता । २१. केवल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ श्री कृष्ण ★

तू ऐ कृष्ण सब में समाया हुआ है। यही गीत गीता में गाया हुआ है॥
[1]मुनव्वर नहीं खुद बखुद चान्द सूरज। तेरा [2]नूर ही जगमगाया हुआ है॥
[3]गुलों में [4]घयाह में तेरी लहलहाहट। तू [5]सर्वे सही बन के आया हुआ है॥
चमकता है सूरज में आंखों में तूही। जिन्होंने अंधेरा मिटाया हुआ है॥
दिलो जान तेरी है पोशाक [6]आला। इन्हें साथ उपने तू लाया हुआ है॥
उसे [7]खौफ क्यों होज़राभीकि जिसने। तुझे दिल में अपने बिठाया हुआ है॥
तू है सच्चिदानन्द [8]हकीकत में ऐ कृष्ण। श्रुति सद्गुरु ने सुनाया हुआ है॥
निगाह को सफ़ाकर लगा [9]ज्ञानअञ्जन। उसे देख हरजा समायाहुआ है॥

नहीं है जहाँ में विना तेरे पूरण।
तू खुद बनके सब कुछ यह आया हुआ है॥

---

१. प्रकाशित। २. प्रकाश। ३. फूलों। ४. घास। ५. सरू का वृक्ष जो सीधा होता है। ६, उत्तम। ७. भय। ८. वास्तव। ९. ज्ञान का सुरमा।

★ व्यापकता ★

सब में रमा हुआ है सबसे जुदा भी तू है।
सब कुछ बना हुआ है सब की [1]बक़ा भी तू है॥१॥
बोले तू ही बुलायें कोई भी नाम लेकर।
तूही [2]ज़मीं [3]ज़मां है खुद [4]मासिवा भी तू है॥२॥
[5]साकी [6]शराबो [7]आशिक [8]माशूको-[9]जामेगुलगूं।
[10]महफ़ल [11]सरूर [12]मस्ती [13]नाज़ुकअदा भी तू है॥३॥

---

१. शेष। २. पृथिवी। ३. काल। ४. द्वैत। ५, उपदेष्टा। ६. उपदेश। ७. शिष्य। ८. प्रियतम। ९, वृत्ति। १०. सत्सङ्ग। ११. आनन्द। १२. अनुभूति। १३. रमज़, रहस्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

१४मलबूस गरचे मख़मल ज़रबफ़्त में फिरो तुम।
१५ख़स्ता ख़राब गुदड़ी पहने १६गदा भी तू है ॥४॥
१७जाहिल का १८जिहि्ल तू है १९आकिल की २०फ़ैह्म तू है।
सादा मिज़ाज २१आरिफ़–इल्मुलरसा भी तू है ॥५॥
क्या देव जिन्न् २२मलायक इनसाँ चरिन्द परिन्दे।
२३आग़ाज सबका तूही और २४इन्तहा भी तू है ॥६॥
२५शहवत २६ग़ज़ब यह लालच यह २७शिर्क और २८ख़ुदी भी।
बेख़ौफ़ी और २९फ़रहत दिल की ३०जिला भी तू है ॥७॥
सुनते हैं ३१अनसरों से पैदा हुई यह दुनिया।
यह ३२ख़ाक–आब–नारो–बादोखला भी तू है ॥८॥
किसको कहें कि तुझ से बाहिर जहाँ बना है।
खुद बन गया तू सब कुछ पूरण खुदा भी तू है ॥९॥

---

१४. पहने हुये। १५. फटी हुई। १६. फकीर। १७. अज्ञानी। १८. अज्ञान। १९. बुद्धिमान। २०. समझ। २१. ज्ञान की पराकाष्टा को पहुँचा हुआ ज्ञानवान। २२. फरिश्ते, देवता। २३. आदि। २४. अन्त। २५. काम। २६. क्रोध। २७. भेद ज्ञान। २८. अभिमान। २९. चित्त की शान्ति। ३०. चमक, शुद्धि। ३१. भूतों। ३२. पृथिवी, जल, अग्नि और वायु और आकाश।

जुदा है न होगा

जुदा मुझ से कुछ भी हुआ है न होगा।
१जुं ज़ेवर २तिला से जुदा है न होगा ॥१॥

१- जिस तरह। २. स्वर्ण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हर इक नाम जो कुछ भी होवे किसी का।
वह नामी से हरगिज़ जुदा है न होगा ॥२
मचा शोर जो कुछ भी है [२]ख़्वाब अन्दर।
वह [४]ख़ुफ़ता से हरगिज़ जुदा है न होगा। ॥३
[५]सतह पर जो [६]मौजों [७]हुबाबों का होना।
न पानी से हरगिज़ जुदा है न होगा ॥४
बने खाण्ड के गर हज़ारों खिलौने।
हर इक खाण्ड से वह जुदा है न होगा ॥५
घड़ा हो सुराही रकाबी प्याला।
कभी मट्टी से वह जुदा है न होगा ॥६
यह है खेस रूमाल चादर य कुड़ता।
नहीं सूत से वह जुदा है न होगा ॥७
बनाई [८]मुसव्वर नें तस्वीर अपनी।
यह [९]नक्श उसका उससे जुदा है न होगा ॥८
भले ही दिखाये मदारी तमाशा।
यह खेल उसका उससे जुदा है न होगा ॥९
हुआ [१०]अक्स पैदा जो शीशे के अन्दर।
कभी [११]शख़्स से वह जुदा है न होगा ॥१०
फिरे नाचता यह जो मट्टी का पुतला।
यह पूरण से हरगिज़ जुदा है न होगा ॥११

३. स्वप्न ४. स्वप्नावी। ५. ऊपर। ६. लहरों। ७. बुल्बुलों। ८. तस्वीर बनाने वाला। ९. तस्वीर। १०. प्रतिबिम्ब। ११. बिम्ब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ तू ही तू ★

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।
तुहीतू--तुहीतू--तुही एक तू है॥
१अदम में भी तू और २हाजिर भी तू है।
जो अव्वल में तू था आखिर भी तू है॥
छुपा ३ज़ाते—खुद में तो जाहिर भी तू है।
तू अन्दर सभी के तो बाहिर भी तू है॥
तु ही ४शक्लेगुल और तुही उसमें बू है।
तुहीतू—तुहीतू—तुही एक तू है॥१॥
५मुबर्रा है सबसे, ६अनासर भी तू है।
कमो—बेश खुद तू बराबर भी तू है॥
७सग़ीरों में तू और ८अकाबर भी तू है।
तू ही ९राहनुमा और मुसाफिर भी तू है॥
तू सब कुछ बना और इलह्‌दा भी तू है।
तुहींतू—तुहीतू—तुही एक तू है॥२॥
तू है जाते सोना तो ज़ेवर भी तू है।
ब—शक्ले—जहाँ है तो १०नाज़िर भी तू है॥
ज़िकर तेरा सब में तो ११ज़ाकिर भी तू है।
तू १२सामे है हरजा तो १३बासिर भी तू है॥

---

१. अव्यक्त। २. व्यक्त। ३. स्वरूप (निर्गुण)। ४. फूल की सूरत
५. रहित। ६. महाभूत। ७. छोटों। ८. बड़ा। ९. रस्ता दिखाने वाला। १०. द्रष्टा। ११. ज़िकर करने वाला। १२. सुनने वाला।
१३. देखने वाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जुदा सबसे लेकिन रमा सब में तू है।
तुहीतू—तुहीतू—तुही एक तू है ॥२॥
तू [14]किबला है [15]काबा में, ठाकुर भी तू है।
मुसलमाँ बना गर तो काफ़र भी तू है॥
तू मालिक सभी का तो चाकर भी तू है।
तू ज़ालिम की सूरत तो [16]शाकर भी तू है॥
तू सब कुछ बना खुद तू ही [17]सूबसू है।
तुहीतू—तुहीतू—तुही एक तू है ॥४॥
तू मस्जिद में बैठा तो मन्दिर में तू है।
बसा शहरो बस्ती में खण्डहर में तू है॥
तू रौशन है सूरज से चन्दर में तू है।
तूही है ज़मी और समुन्दर में तू है॥
हर इक शै में [18]जलवा तेरा हूबहू है।
तुहीतू—तुहीतू—तुही एक तू है ॥५॥
असल में भी तू और नकल में भी तू है।
सभी नाम तेरे शकल में भी तू है॥
तू ही बेसमझ और अकल में भी तू है।
तू है दूर सबसे बग़ल में भी तू है॥
तू है [19]जातेवाहिद [20]ब-कसरत भी तू है।
तुहीतू—तुहीतू—तुही एक तू है ॥६॥

---

१४. पूज्य। १५. मक्का की मस्जिद। १६. शुकर करने वाला। १७. हर तरफ। १८. प्रकाश। १९. अद्वैत। २०. नानारूप।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दिखाई जो देता यह २१अर्जोसमा है।
बिना ज़ात तेरी यह सब लापता है॥
तूही चाँद सूरज में २२नूरोज़िया है।
मेरी आंख दिल में भी तू ही बसा है॥
तूसब से छुपा पर मेरे रूबरू है।
तूहीतू - तुपूरण- तुही एक तू है॥७॥

२१. पृथिवी, आकाश। २२. प्रकाश।

★प्रार्थना★

तड़प मेरी मिटेगी कब मेरे ईश्वर बता मुझ को।
पड़ा हूँ मैं शरण तेरी गले से ले लगा मुझको ॥१॥
घिरा हूँ दर्दो-दुख से मैं नहीं कोई मेरा साथी।
करूँ मैं पार भवसागर कोई हीला बता मुझको ॥२॥
नहीं दुनिया में कोई भी न जिसका हो सहारा तू।
तुही मेरा है प्रतिपालक पकड़ बाज़ू उठा मुझको ॥३॥
तेरा १फ़र्जेमुकद्दम है दया दीनों पे कर लेना।
'प्रभु' 'रक्षक' 'दयालु' क्या नहीं हो दो बना मुझको ॥४॥
गुनाहों सेभरा हूँ मैं तू बखशन्हार है प्यारे।
असम्भव है तो अच्छा है जहाँ से दे उठा मुझको ॥५॥
पड़ा हूँ दर पे मैं तेरे तुझे कहते हैं कृपालु।
कृपा की भर नज़र अपनी ज़रा देते दिखा मुझको ॥६॥
निकल जायेंगे दिन मुश्किल मगर पूरण की आशा थी।
होवेंगे कब तेरे दर्शन ज़रा देते सुना मुझ को ॥७॥

१. मुख्य कर्तव्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

फ़रमाने इलाही=भगवत् आदेश

इस जहाँ में [1]शाज़ मेरा [2]तालबे-दीदार है।
होवे जो-हूँ उसका आशिक वह मेरा [3]दिलदार है ॥१॥

होके [4]यकसू जब कोई मुझ से लड़ाता है नज़र।
मैं भी देखूं मुस्करा कर यह मेरा इसरार है ॥२॥

गरचे मेरी [5]दीदेरैहमत सब पे ही [6]यक्सान है।
याद में मेरी जो शामिल मुस्तहिक-दीदार है ॥३॥

[9]पेशोपस उसके हूँ रहता हरघड़ी हर आन मैं।
जो [10]फ़िदा मुझ पर हुआ बस यह मेरा इकरार है ॥४॥

[11]फ़ानी जिस्मो-मालोइज्ज़त के हुये [12]दिलदादा जो।
बन्द सदा उनके लिये मेरा [13]दरे-दरबार है ॥५॥

इश्क में मेरे बहाये जिसने हों [14]दरयायेअश्क।
सिर पे उसके [15]दस्ते-रैहमत हर घड़ी तय्यार है ॥६॥

[16]फ़ैज़ से [17]मुरशिद के जिसने मुझ को देखा एक बार।
[18]लुत्फ़ में उसके बयां [19]नाक़बिले-गुफ़तार है ॥७॥

१, विरला। २. दर्शन का इच्छुक। ३. प्रियतम। ४. एकाग्र।
५. कृपादृष्टि। ६. एकजैसी। ७, जुड़ा हुआ। ८. हकदार, अधिकारी।
९, आगे-पीछे। १०. न्योच्छावर। ११. नाशवान। १२. इच्छुक।
१३. दरबार का दर्वाजा। १४. आंसूओं के दरया। १५. कृपा का हाथ। १६. कृपा। १७. सद्गुरु। १८. आनन्द। १९. अवाक्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रातदिन बस मुझ से रहता [२०]हमबग़ल है [२१]रास्तबाज़ ।
दुन्या और [२२]माफ़ीहा से वह बेख़बर बेज़ार है ॥८
होगया जो मुझ में पूरण गुम खुदी को छोड़ कर ।
ग़ैर के दीदार से बिल्कुल हुआ [२३]लाचार है ॥९

२०. मिला हुआ । २१. सच्चापूरुष । २२ परलोक । २३. असमर्थ॥

★ हालते मस्ती ★

पीकर शराबे [१]वह्दत मस्ताना हो गया हूँ ।
अकलो—[२]ख़िरद से यारो बेगाना हो गया हूँ ॥१॥
कहने को कुछ जुबाँ से किसको है होशो-फुरसत् ।
[३]साक़ी के [४]शमयेरू पर पर्वाना हो गया हूँ ॥२॥
हालत मेरी तो यारो याँतक है बेखुदी की ।
साकी [५]सिबू हूँ मैं खुद् [६]पैमाना हो गया हूँ ॥३॥
जब से पिलाया भर के साक़ी ने [७]जामेवहदत् ।
उस दिन से गोया खुद ही [८]मयख़ाना हो गया हूँ ॥४
यारो बतादूँ क्यों कर हासिल हुई यह मस्ती ।
साक़ी की [९]ख़ाकेपा का [१०]नज़राना हो गया हूँ ॥५॥
हस्ती मिटा के अपनी [११]नाबूद नहीं हुआ हूँ ।
कतरे से [१२]बह्र होकर [१३]फ़रज़ाना हो गया हूं ॥६
हर दो जहाँ में मुझ सा आशिक मिले न हरगिज़ ।

१. अद्वैत । २. बुद्धि । ३. सद्गुरु । ४. तेजस्वी मुख । ५. घड़ा, उ
देश । ६.गिलास, वृत्ति । ७.अद्वैतोपदेश । ८.शराबख़ाना,मस्तीका घ
९. चरणधूड़ी । १०. भेंट । ११. अभाव । १२. समुद्र । १३.बड़ा हुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सूरत पे आप अपनी दीवाना हो गया हूँ ॥७॥
[१४]फ़ज़्लो-करम से साकी का [१५]हम्निशस्त हूँ मैं ।
शाहों के साथ मिलकर शाहाना हो गया हूँ ॥८॥
लायक कहाँ था इसके बख़्शिश हुई जो मुझ पर ।
मस्तों के साथ मिल कर मस्ताना हो गया हूँ ॥९॥
[१६]रंजोअलम कहाँ अब ढूंडे मिलें न मुझ में ।
[१७]फ़रहत खुशी का पूरण [१८]काशाना हो गया हूँ ॥१०॥

---

१४. कृपा । १५. साथ बैठक । १६. शोक और ग़म । १७. ताज़गी, शान्ति । १८. घर ।

★ हज़रते इल्म की आवाज=भगवद्ज्ञान का सन्देश ★

ढूंडना हो मुझको ढूंडो खुद ही अपनी ज़ात से ।
मैं हूँ रौशन खुदबखुद ही तुझ में अपनी ज़ात से ॥१॥
[२]मूबमू तुझ में [३]अयाँ हूँ मैं हूँ तेरी ज़िन्दगी ।
जिस्म तेरा खूबसूरत है यह मेरी ज़ात से ॥२॥
हाथ पाओं काम करते हैं मेरे ही ज़ोर से ।
और ज़ुबाँ [४]गोया है हरदम [५]महज़ मेरी ज़ात से ॥३॥
आंख से हूँ देखता मैं कान से सुनता हूँ मैं ।
है ज़ुबाँ चखती यह षटरस मुझ [६]नूरानी ज़ात से ॥४॥
हैं [७]अदायेफ़र्ज़ में [८]बरजस्ता सब के सब खड़े ।
किस तरह मुनकिर हों रौशन जब वह मेरी ज़ात से ॥५॥

---

१. स्वरूप । २. रोम रोम । ३. प्रकट ४. बोलने वाली । ५. केवल । ६. प्रकाशमान । ७. धर्म पालन । ८. तय्यार ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ठीक सकझो खुद बखुद रौशन नहीं है दिल तेरा ।
करता हूँ रौशन इसे मैं इक शुआये ज़ात से ॥६॥

पैदा होकर जो ९फना होते हैं तेरे ख़्याल सब ।
इनका ज़ाहिर और फ़ना होता है मेरी ज़ात से ॥८॥

देखता हूँ रौशनी अपनी से ख़्याले १०नेकोबद ।
मैं हूं १४वाहिद रौशनी रौशन भी अपनी ज़ात से ॥९॥

हैं ख्याले-नेकोबद पोशाक मेरी ए १६अज़ीज ।
१७तह में इनको मैं १८इलेहदा खुद हूँ रोशन ज़ात से ।१०।

रौशनी अपनी हूं देता तब यह ज़ाहिर हों ख़्याल ।
खुदबखुद काइम नहीं हैं ख्याल अपनी ज़ात से ॥११॥

इन के आने जाने से ही मैं हूँ ज़ाहिर एकरस ।
हूँ १९मुहर्रक पर २०बेहरकत तह में सब की ज़ात से ।१२

मैं हूँ ज़िन्दा रौशनी और इक २१सरूरे-लाजवाल ।
ज़िन्दगी देता ख्यालों को हूँ अपनी ज़ात से ॥१३॥

मुझ से पैदा मुझ से काइम मुझ में होते हैं फ़ना ।
ख्याल है २२यकजा वह होते सब के सब मुझ ज़ात से ।१

---

९. नाश । १०. अच्छे।बुरे । ११. सूर्य । १२. साक्षी । १३. वास्तव में । १४. अद्वितीय । १५. प्यारे । १६. गहराई । १७. असङ्ग । १८ चालक, प्रेरक । २०. निष्क्रिय । २१. न कम होने वाला आनन्द २२. अभेद ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जब न हो कोई ख्याल और लीन भी होवे न मन ।
वह मेरी २३अफ्शा है हालत सच्चिदानन्द ज़ात से ।१५।
लैहर हो या बुलबुला हो बर्फ हो या बैह्र ही ।
कब जुदा है एक भी पानी की असली ज़ात से ।१६।
इस तरह मैं हर जगह मौजूद हूँ हर हाल में ।
सबका मैं हूं आत्मा पूरण हूं अपनी ज़ात से ॥१७॥

---

२३. प्रकट अनुभव ।

★ कौन हो ! ★

१हज़रते-दिल ने यह पूछा एकदिन : तुम कौन हो ।
मैं हूँ तेरी २रूह ३अज़ीज़म तुम बताओ कौन हो ॥१॥
४पेशोपस अपने बुझे देख कर हैराँ हुआ ।
हो गया ५सक्ता उसे जब मैंने पूछा कौन हो ।।२॥
६दस्तेरँहमत से जगा कर उसको पूछा बोल कुछ ।
७दस्तबस्ता यह कहा बुझ से न पूछो कौन हो ॥३॥
जब यह पूछा कुछ बतादो क्या हो समझे रूह को ।
मुस्कराया झट वह बोला यूं है समझा कौन हो ।।४॥
८ज़ात तेरी से ९मुनव्वर मैं भी मेरे ख्याल भी ।

---

१. चिदाभास । २. कूटस्थ । ३. आत्मा । ४. आगे पीछे । ५. मौन ।
६. कृपा का हाथ। ७. हाथ जोड़कर । ८. स्वरूप । ९. प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

किसकी ताकत है बता दे [१०] दरअसल तुम कौन हो ॥५॥
हाथ जोड़े हैं हजूरी में तेरी सारे खड़े ।
तुझ बिना बेजान हैं सब क्या बतावें कौन हो ॥६॥
हैं सभी [११] क़ासिर समझने में हक़ीकत को तेरी ।
वह जले उँगली करे तेरा इशारा कौन हो ॥७॥
जी में आया शख्स के जब [१२] हुस्न खुद देखूँगा मैं ।
झट उठा के शीशा पूछा [१३] अक्स से तुम कौन हो ॥८॥
क्या बताये वह है [१४] मजहर जिस तरह उस शख्स का ।
इस तरह हूँ मैं भी मज़हर मुझ बिना तुम कौन हो ॥९॥
[१५] लाज़वालो [१६] लामकानो [१७] हस्ती ओ [१८] इल्मो [१९] सरुर ।
तुमहो ऐसे मैं हूँ साया बस यूँ है समझा कौन हो ॥१०॥
मैं हूँ खाता मैं हूँ पीता इस तरह की खेल सब ।
गरचे है तेरी बदौलत क्या बताऊँ कौन हो ॥११॥
हैं दिखाने में यह [२०] क़ासिर तारे सब [२१] खुर्शीद को ।
चूँकि तुम ही नूर पूरण तुम ही जानो कौन हो ॥१२॥

---

१०. वास्तव में । ११. असमर्थ । १२. अपना सौन्दर्य । १३. प्रतिबिम्ब । १४. अभिव्यञ्जक, प्रकट करने वाला । १५. न्यूनतारहित । १६. देश रहित । १७. सत् । १८. चैतन्य । १९. आनन्द । २०. असमर्थ । २१. सूर्य । २२. प्रकाश स्वरूप ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ मेरी रौशनी ★

मुझे देख खड़ा हूं मैं पास तेरे तेरी हालत ख़ाहे भी कैसी है।
[1]मग़मूम ही हो या ही [2]शादाँ हो मेरी रौशनी वैसी की वैसी है ।।१।।
कहा [3]आब ने [4]मौजों [5]हुबाबों को क्यों [6]ग़ैर समझ दुख पाते हो।
तुम पैदा ही हो या फना ही हो मेरी हस्ती तो वैसी की वैसी है ।।२।।
जलता था दिया इक [7]महफल में शाह [8]रक्से-तवाइफ़ देखना था।
जब बाद में [9]ऐवाँ खाली हुआ देखा रौशनी वैसी की वैसी है ।।३।।
[10]खुर्शीद [11]अरश में चमके था कई लाख थे बर्तन पानी भरे।
वह एक ही ख़ाहे अनेक हुआ देखा रौशनी वैसी की वैसी है ।।४।।
रौशन था [12]मुसफ़्फ़ा में गदले में वह सब एकही नूर पे [13]नाज़ां थे।
पानी खुश्कहुआ वह [14]शिकस्त हुये देखा रौशनी वैसी की वैसी है ।।५।।
मैं हूँ सामने देख उठा के नज़र कभी [15]शख्स से अक्स भी ग़ैर हुआ।
तेरी मुझ से निगाह मिले न मिले मेरी रौशनी वैसी की वैसी है ।।६।।
मैं हूँ हस्ती ओ इल्म-सरूर-[16]अब्दी मेरे पास न फटके नेकी बदी।
तुम बेखुद हो या हो साथ खुदी मेरी हस्ती तो वैसी की वैसी है ।।७।।
मुझ में न [17]मकाँ न [18]ज़मा ही है मैं हूँ नूर का नूर वले ज़िन्दा हूँ।
[19]मादि-शम्सो-क़मर यह चढ़ें न चढ़ें मेरी रौशनी वैसी की वैसी है ।।८।।
हुये आजतलक जो [20]आशिक़ेहक्क़ मेरे [21]बैहरे आनन्द की लैहरें वो थीं।
ख़ाह कितने ही मस्त अलस्त हुये पूरण [22]मस्ती तो वैसी की वैसी है ।९।

---

१. शोकातुर । २. प्रसन्न । ३. जल । ४. लहरों । ५. बुल्बुलों । ६. भिन्न । ७. सभा । ८. वेश्या का नाच । ९. मण्डप । १०. सूर्य । ११. आकाश । १२. शुद्ध । १३. अभिमानी । १४. टूट गये । १५. बिम्ब । १६. अनादि । १७. देश । १८. काल । १९. भौतिक सूर्य चन्द्रमा । २०. ब्रह्मनिष्ठ । २१. आनन्द के समुद्र । २२. स्वस्वरूपानन्द ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निराली शान

ऐ प्रभु तेरी निराली शान है। आंख-वालों को तेरी पैहचान है॥
हैं सभी [1]नाज़ाँ तेरो ही [2]ज़ात पर। [3]चश्म-गोशो-दिल की तू ही जान है।
[4]मेहरो-माह अंजममें चमके खुद तुही। आग और बिजली में तेरी शान है
कह सके मौजूद हूँ मैं ता [5]अबद। किसको प्यारे तुझ विना [6]इमकान है।
ज़ात तेरी से जुदा कुछ भी नहीं। हर तेरी पोशाक है हर शान है।
[7]तैह में सबकी ज़ात तेरी है [8]अयाँ। खाह कोई [9]हैवान है [10]बेजान है।
है नहीं मौजूद कुछ भी तुझ बिना। 'सब खुदा है' वेद का [11]फ़रमान है।
आशिकोंका खुद तुही [12]मक्सूद है। आरिफों की जिस्मोजाँ ईमान है।
[13]मुर्शिदेकामिल! तेरे कुरबान हूँ। जब कहा था खुद तूही [14]यज़दान है।
है मुझे दीदारे [15]हक्क अबहर तरफ़। मुर्शिदे-कामिल! तेरा एहसान है।
[16]फ़ज़ल तेरा रंग लाया है यहाँ। 'हक्क् हूँ मैं' अब [17]विर्दंग्रह हरआन है।
[18]फ़ैज़ तेरे से हुई [19]हक्क्बीं निगाह। [20]मूबमू मेरा तेरे कुरबान हैं।
[21]इनकशाफ़े राज़ तेरा अब हुआ। तेरा ही हरसू मचा तूफ़ान है।
है उसे आसान तुझ को देखना। जिसका सबकुछ तुझ पेही कुरबान है
गरचे तू [22]पोशीदा है [23]मख़लूक से। [24]रूबरू मेरे खडा हर[25]आन है।
मैंने जाना है तुझे पूरण सदा। जिन्दगी और मौत में [26]यक़सान है॥

---

१. अभिमानी। २. स्वरुप। ३. आंख और कान। ४. सूर्य, चन्द्र, तारे। ५. प्रलय तक ६. समर्थ। ७. भीतर में। ८. प्रकट। ९. चेतन। १०. जड़। ११ आज्ञा। १२. प्राप्यस्थान। १३. गुरुदेव। १४,१५. ब्रह्म। १६. कृपा। १७. जप। १८. कृपा। १९. ब्रह्मदृष्टि २०. रोम-रोम। २१. गुह्य तत्त्व का खुलना। २२. छुपा हुआ। २३. आम लोगों। २४. सामने २५. हरसमय। २६. सम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

फज़्ले मुर्शिद=गुरुकृपा

मौज मैं जब आगये कतरे से दरया कर दिया।
फज़्ले मुर्शिद ने मुझे [1]ज़र्रे से [2]सहरा कर दिया ॥१॥
इस क़दर कमजोर था मैं हिलना भी दुश्वार था।
[3]खाके पाये—पीरे—कामिल ने [4]तवाना कर दिया ॥२॥
खुद को समझे था मैं जिस्मो—जान और [5]दस्तोपा।
कदमे-मुर्शिद पर [6]फ़िदा इनसे इलैहदा कर दिया ॥३॥
था [7]कलामे--मुर्शिदे--कामिल में क्या जादू भरा।
*परदये--ग़फ़लत से मेरे नूर [8]हुवैदा कर दिया ॥४॥
महज़ बे समझी थी अपनी [9]ज़ाते-यजदाँ से मेरी।
जिसने मुझ [10]लाइन्तहा में फर्क पैदा कर दिया ॥५॥
हर घड़ी [11]लरजाँ था सुन के नाम अपनी मौत का।
इश्क में जाँ दे [12]अजल को मैंने मुरदा कर दिया ॥६॥
[13]तख़्लिये में जब यह पूछा देर इतनी क्यों [14]सनम।
खुद से पूछो कह के इतना इक बहाना कर दिया ॥७॥
[15]दीदेजानाँ से तो [16]चश्मे--ग़ैर थी बन्द होगई।
अब [17]शुनीदे-ग़ैर से भी मुझको बैहरा कर दिया ॥८॥
[18]हुस्ने-जानां के बयाँ में किस की ताकत कुछ कहे।
[19]लफ़्ज़ सब [20]मुहमिल हुये और मुझको गुंगा कर दिया ॥९॥

---

१. अल्प। २. महान। ३. गुरुचरणरज। ४. बलवान। ५. हाथ पाओं। ६. न्योच्छावर। ७. गुरुवाणी। ८. प्रकट। ९. ब्रह्मस्वरूप। १०. अनन्त। ११. कांपता। १२. मृत्यु। १३. एकान्त। २४. प्रियतम। १५. प्रभुदर्शन। १६. भेददृष्टि। १७. भेद श्रवण। १८. परमात्मा का सौन्दर्य। १९. शब्द। २०. निरर्थक। *अज्ञान के परदे में से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

है यहु सब एहसाने मुर्शिद भेंट हैं यह जिस्मो-जाँ।
[21]जु.ज़्ब से पूरण किया इक [22]मोजज़ा सा कर दिया ॥

२१. अंश। २२. करामात, आश्चर्य।

★ गुरुस्तुति ★

जहाँ में [1]नेमते-आला गुरुकामिल का मिल जाना।
[2]फ़ज़ल हो जाने पर जिसके हटे परदा [3]जिहालत का ॥
हज़ारों गर करे साधन जिसम को भी जला डाले।
[4]बजुज़ फजले-गुरुकामिल न अन्धेरा मिटे दिल का ॥
तेरी तारीफ़ ए सत्गुरु! करूं जाहिर जुबां किस से।
मिटाया [5]आने-वाहिद में अन्धेरा जिसने बरसों का ॥
जगाई है [6]शमा ऐसी कि बुझने में नहीं आती।
झलक उसकी ने कर डाला उजाला [7]सूबसू हरजा ॥
चमकती है [8]शुआ उसकी हर इक हालत में इक जैसी।
बग़ैर इन चाँद-सूरज के करे [9]रूहानी उज्यारा।
कभी [10]ग़म्गीं कभी [11]खुर्रम ज़रूरी है रहेगा वह।
पड़ा है नींद में ग़फलत की जब तक भी कोई सोया ॥
किसी कामिल की [12]खाकेपा लगा आंखों में ग़फलत छो
तेरे जग जाने से जागे अरे [13]खुफ़ता जहाँ सारा ॥
लगी है खाकेपा उनकी जभी से मेरी आंखों में।
हुआ है [14]जल्वा-हक्क ज़ाहिर मुझे [15]दरज़ेर दर-बाला

१.उत्तम वस्तु २. कृपा। ३.अज्ञान। ४.बिना। ५.एक पलमें।६. दी-
७.हरतरफ़। ८. किरण. ९.आत्मिक. १०. शोकातुर ११. प्रसन्न। १२.
चरण धूड़ी। १३. सोयेहुये। १४. ब्रह्मदर्शन। १५. नीचेऊपर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नहीं है गो हकीकत में बजुज़ [16]यज़दाँ यहां कुछ भी।
[17]वले ज़ाहिर तमाशा है अजब [18]वहदतमें [19]कसरत का ॥६
[20]कदमे पाक-मुर्शिद की [21]कदमबोसी हो सौ सौ बार।
निगाह इक्सीर से अपनी बनाया मुझको भी अपना ॥१०॥
अगर्चे ज़ाते-यज़दाँ है [22]बज़ाते-खुद सदा पूरण।
[23]बजुज़ मुर्शिद नहीं मिलता कहीं पर भी निशाँ उसका ॥११॥

१६. ब्रह्म। १७. लेकिन। १८. अद्वैत। १९. द्वैत। २०. गुरु के पवित्र चरणों। २१. चरण चुम्बन। २२. अपने स्वरूप से। २३. बिना गुरु के

★ एहसाने मुर्शिद ★

[1]पाक-मुर्शिद की [2]खाकेपाको, लगाऊं सिर पर उठाउठा कर।
मस्तो-बेखुद बनाया मुझको, [3]शराबे-वहदत पिलापिलाकर ॥१
इतनी मुझमें भरी [4]जिहालत, न[5]जुज़में इनसाँहूँ कुछभी समझूं
टाया सदियों का कुल अन्धेरा, 'वह तू है' दीपक जगाजगा कर
खुद को समझा था महज़ बन्दा, हे चन्द रोज़ा [6]क्याम इसजा
ाया मुझको है तूही [7]यज़दाँ, खुदी को मेरी मिटा मिटाकर।३
रा मैं जङ्गल में एक मुद्दत, तलाशेरब्ब में कहाँ वह होगा।
फज़ले-मुर्शिदहै अब वह हाज़िर, थकाथा जिसको बुलाबुलाकर
नाये [9]रंजोअलम [10]हिजर के, सुनाई ग़म की कहानी सारी।
तब भी मैं तो बग़ल में तेरी, कहा यहमुझको सुनासुनाकर।५
ल में अपनी लिपट के मुझको, मिले वह मिलकर थे मुस्कराये।
लासा देते थे प्यार करते, खुशी को मेरी बढ़ा बढ़ा कर।६।

१. सत्गुरु। २. चरण रज। ३. अद्वैतज्ञान। ४. अज्ञान। ५. सिवाये ६. स्थिति। ७. ब्रह्मस्वरूप। ८. गुरुकृपा। ९. दुःख। १०. जुदाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हज़ार ११कुल्फ़त उठाई मैंने, यह सुन के खाली वह मुस्करा
मिटाया रंजो-अलम को मेरे, गले से अपने लगा लगा कर।
१२बसद तरीका बताया मुझको, हैं एक हम तुम फ़रक न इ
है हम समुन्दर तू लैहर मेरी, १३मिसालें ऐसी गिना गिना कर।
है १४हुस्नेजानाँ १५बयाँ से बाहिर,न आँखको हो है १६ताबे-दी
वले है हरजा जहां भी देखूँ, नज़र को अपनी उठा उठाकर।
यह १७फज़्लो-बख़शिशहै मुर्शिदों कीवग़रनाहममें कहाँ थी ता
कदम पे उनके१८फ़िदाहूँ पूरणमैं सिरको अपने झुकाझुकाकर।

---

११. तकलीफ। १२. बहुत युक्तियों से। १३. दृष्टान्त। १४. प्रि
तम का सौंन्दर्य। १५. कथन। १६. देखने की ताकत। १७. कृपा
१८. न्योच्छावर।

★ श्रीसत्गुरूदेव ★

श्री शिवराम जी स्वामी प्रभु जब याद आती है।
चमकती एक बिजली सी हृदय को चीर जाती है ॥१॥
बिकल होता है मन मानों निकलना बाहिर चाहता है।
तड़पि मीन के सदृश मेरी हालत बनाती है ॥२॥
कहाँ ढूंडे तुम्हें स्वामिन् छुपे हैं आप किस जा पर।
अदर्शन में तेरे हर आंख रुधिर धारा बहाती है ॥३॥
चले जब पूर्व की वायु हिमाला से वह टकरा कर।
ख़बर नेपाल से सीधी हमारे हाँ पे लाती हैं ॥४॥
प्रभु ! चरणों में अपने जब लिया था आपने हमको।
समय सौभाग्य का वह था यही बुद्धि जताती है ॥५॥
थे साधन-हीन मनमुख थे न गुण का कुछ निशाँ ही था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

शरण में ले लिया फिर भी प्रभु-कृपा जनाती है ॥६॥
किये उपकारो–एहसाँ जो कहाँ तक हम गिनायेंगे।
पशु से देवता बन कर प्रभुयश जिह्वा गाती है ॥७॥
वह सादा आपका जीवन वह शिवमय जानना सबको।
वह आत्मरस भरी वाणी प्रभु हमको रुलाती है ॥८॥
यह माना आप हैं हाज़िर हमारे आत्मा बन कर।
दिखाओ सांवली सूरत हमें बस वह ही भाती है ॥९॥
थी निष्ठा ब्रह्म में पूरण है पाया पद विदेह कैवल्य।
बुलालो पास अपने ही तभी अब तृप्ति आती है ॥१०॥

★ श्री गुरुदेव ★

ढूंढे [१]चिराग़ लेकर तो भी न तुझसा पायें।
हम सब ही मिलके स्वामिन् गुण तेरे क्यों न गायें ॥१॥
रहते हैं [२]मर्दोज़न सब [३]मद्दाह तेरे बेशक।
बातें हैं [४]सिह्र तेरी जादू तेरी निगाहें ॥२॥
क्या हो शुमार उनका क्या हो हिसाब इनका।
हमारी उधर [५]ख़तायें इधर आपकी [६]अतायें ॥३॥
गीता भी उपनिषत् भी चूड़ामणि पढ़ाना।
फिर गौड़पादी [७]शब को [८]नज़राना क्या चढ़ायें ॥४॥
बीमार जिस्म लेकिन जारी रखी पढ़ाई।
तकलीफ़ जिस्म होते उत्साह से फिर पढ़ायें ॥५॥

---

१. दीपक। २. पुरुष-स्त्री। ३. स्तुति करने वाला। ४. जादू वश करने वाली। ५. गल्तियां। ६. क्षमा। ७. रात्री। ८. भेंट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

९कासिर जुबां हमारी तारीफ़ आप की में।
चरणों पे स्वामि हम सब फिर फिर ही सिर झुकायें ॥६॥
१०महरूम तेरे दर से जाता नहीं है कोई।
फिर क्या वजह् ११मकासिद जो मेरे १२बर न आयें ॥७॥
तारीफ कर चुका तू १३बाग़ेजनाँ की जाहिद।
आ देख १४बाग़ेवहदत स्वामी का हम दिखायें ॥८॥
वह देख हो रही हैं १५वक्तेसहर न्योछावर।
इस १६पाक सरजमीं पर १७खुर्शीद की १८शुआयें ॥९॥
है जिन्दगी उन्हीं की पूरण सफल जहाँ में।
दुनिया से दिल हटा जो मुर्शिद से लिव लगायें ॥१०॥

---

९. अल्प। १०. अकृतार्थ। ११. इच्छायें। १२. पूरी। १३. स्वर्ग। १४. अद्वैत का बाग़। १५. प्रातःकाल। १६. पवित्र भूमि। १७. सूर्य। १८. किरनें।

★ कदमें मुर्शिद=गुरूचरण ★

श्री सत्गुर के चरणों में तेरा गर प्यार हो जाता।
अनादि नींद की गफ़लत से तू १बेदार हो जाता ॥१॥
चलन अपना बनाता नेक करम निष्काम करता सब।
खुदी को भेंट कर देता तो बेड़ा पार हो जाता ॥२॥
बहाता याद ईश्वर में कहीं एकान्त में आँसू।
२मुसफ़्फ़ा दिल का शीशा यह तेरा ३इकबार हो जाता ॥३॥
तड़प उठती पता लेने की अपनी और ईश्वर की।
शहिन्शाही के असली तख्त का हकदार हो जाता ॥४॥

---

१. जागजाता। २. शुद्ध। ३. शीघ्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्री गुरुदेव से अपना प्रभु का भी पता लेता।
असल में कौन हैं 'मैं' 'वह' ज़रा ⁴हुश्यार हो जाता ॥५॥
तुझे गुरुदेव समझाते महावाक्यों की रमज़ों को।
'वह तू है' सुनते ही तुझको प्रभु दीदार हो जाता ॥६॥
मनन एकान्त में करता श्री सतगुर के वाक्यों को।
तुझे ब्रह्मरूपता अपनी में ⁵इस्तिकरार हो जाता ॥७॥
विजाती ख्याल गर उठते दबाता स्वरूप चिन्तन से।
सजाती ख्याल का प्रवाह ⁶चूँ गंगा-धार हो जाता ॥८॥
मनुष जीवन सफल होता गुरुसेवा सफल होती।
सभी साधन सफल पूरण तू ब्रह्माकार हो जाता ॥९॥

४. बुद्धिमान। ५. स्थिति। ६. न्याईं।

★ अज़मतेमुर्शिद=गुरुपूर्णिमा ★

खिला है बाग़े-मुर्शिद आज हर इक दिल में ¹चमाँ होकर।
महिकता ²बूयेवहदत से है हर ³गुल ⁴गुलसिताँ होकर ॥१
है ⁵फज़्ले-मुर्शिदे-कामिल दिखाया जाबजा जलवा।
वगर्ना छुप गया था वह खुदा भी खुद ⁶जहाँ होकर ॥२॥
तेरी तारीफ़ ऐ मुरशिद है ⁷बाला ⁸हर्फे अब्जद से।
हुये हैं लफ़्ज़ सब वापिस ⁹सना मे ¹⁰नारसाँ होकर ॥३॥
है दरजा मुर्शिदे कामिल का ऊँचा खुद खुदा से भी।
वह मारे फिर करे पैदा छुड़ायें यह ¹¹अयाँ होकर ॥४॥

१. खिले हुये। २. अद्वैत की खुश्बू। ३. फूल(सत्संगी)। ४. बागीचा। ५. पूरे गुरु की कृपा। ६. दुनियां, संसार। ७. ऊंची। ८, वर्णमाला, शब्दों से। ९. स्तुति। १०. न पहुंचने वाले। ११, प्रकट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

खुदा ने हमको भेजा यां उठाने को हैं रंजोग़म ।
मगर मुर्शिद ने पलभर में छुड़ाया १२पासबाँ होकर ॥५॥
खुदा की १३पाक रैहमत से मिलें मुर्शिद जिसे कामिल ।
बुराई दुःख मुसीबत सब निकल जायें १४दवाँ होकर ॥६॥
रटे जो नाम मुर्शिद का करे सब दूर १५बदअमली ।
हकीकी-इश्क हो पैदा बहें आँसू १६रवाँ होकर ॥७॥
मुसफ़्फ़ा दिल का शीशा हो मिटे १७ज़ङ्गे खुदी उसका ।
है चमके १८नूरे-यजदाँ ही १९बहरसू ही अयाँ होकर ॥८॥
हर इकजा एक हस्ती ही दिखाई दे उसे हरदम ।
भले ही २०चश्मे-जाहिल से रहे हस्ती निहाँ होकर ॥९॥
लगी है खाकेपा मुर्शिद ! तेरी जब से इन आँखों में ।
हुआ जाहिर खुदा का नूर हर इक जाही दमाँ होकर ॥१०॥
उधर खुद २१मेहरो माह होकर इधर खुद २२चश्मोदिल बनकर
पता है दे रहा अपना ज़मीनो—आसमाँ होकर ॥११॥
है अब तो पत्ते पत्ते से मिले मुझको पता उसका ।
हुआ है वह २३मकीने-दिल हर इक जा २४लामकाँ होकर ॥१२॥
२५जुबाने-बर्गे-गुल ने दी दुआ है दिल से यूं पूरण ।
ख़ुदा २६सरसब्ज़ रखे इस चमन को मेह्रबाँ होकर ॥१३॥

१२. निगाहवान । १३. पवित्र कृपा । १४. दौड़कर । १५. बुरी आदतें । १६. जारी । १७. अहंकार का जंगार । १८. परमात्मा का प्रकाश । १९. हरतरफ । २०. अज्ञानी की दृष्टि । २१. सूर्य चन्द्रमा । २२. चक्षु और हृदय । २३. दिल में रहने वाला । २४. देश रहित । २५. फूल की एक पत्ती की वाणी, एक सत्सङ्गी । २६. हरा भरा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

★ कलामे आज़म=तत्त्वमसि ★

१ज़ात अपनीसे खुदतू काइम,समझना खुद को २वबाल क्याहै।
नफ़ी का जिसमें दखल नहीं है,वह तू है इसमें मिसाल क्याहै।१
हम ४तअज्जुबमें सुनके तुमसे,नफ़ी ५खुदी की है सख़्त मुश्किल
अदम् को दिल से अदम् समझना, बताओ इसमें ७मुहाल क्याहै।२
नामोसूरत यह मुख़्तलिफ़ जो, नही हैं ८ईज़ारसाँ यह हर्गिज़ ।
खुदी है ९मूज़ी, न नामसूरत, बग़ैर इनके १०जलाल क्या है ।३
११हवैदा होने का जो १२ज़रीआ,उसे ही समझे हो तुमतो परदा
१३नूरे यज़दाँ है सबमें रौशन,न नेक तुझमें१४मआल क्या है।४
ज़ात तेरीमें कोई दुनिया, न नेकोबद का निशान तक ही ।
ज़ात तेरीमें सब यह१५फर्ज़ी,१६हराम क्याहै१७हलाल क्याहै५।
१८लरज न हर्गिज़१९अजल के डरसे,है मौतको भी तो मौत तुझसे
फङ्ग-तीरो-कमान खंजर, की तुझको काटे मजाल क्या है ।।६
बेठा यह दिलमें कि ज़ात मेरी,है मह्ज़ २०इल्मो-सरूर-हस्ती ।
सबका२१शाहिद२२चूँमेह्रे-अनवर,खुशीनमुझमें२३मलालक्याहै
हमेशा काइम तू ज़ात अपनी,से खुद की देखो२४बचश्मे-इरफाँ ।
उठादे परदा खुदीका खुद से,तू खुद है पूरण २५वसाल क्याहै ।८

१.स्वरूप । २.कष्ट । ३.निषेध । ४.आश्चर्य । ५.अहंकार । ६.अभाव ।
७.मुश्किल । ८,९.दुःखदाई । १०.विभूति । ११.प्रकट । १२. साधन ।
१३.परमात्मा का प्रकाश । १४.बुराई । १५. कल्पित । १६. अधर्म.
१७.धर्म, विहित । १८.कांप. १९. मृत्यु । २०.चैतन्य, ज्ञान, आनन्द, सत् । २१.साक्षी । २२.प्रकाशमय सूर्य की तरह । २३.शोक ।
२४.वेदान्त की दृष्टि से । २५. मिलाप ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ शुकराना=कृतज्ञता ★

मैं कुरबाँ [१]साकिये—वहदत बनाया जिसने [२]रिन्दाना ।
छुड़ाया जिस्मोजाँ से है किया है मुझको [३]जानाना ॥१॥
कहाँ था [४]रञ्जोकुल्फ़त से मैं घबराता तड़पता था ।
हूँ हर हालत में यकसाँ अब रहूँ हरदम मैं [५]ख़न्दाना ॥२॥
ज़माना था तरसता था कहीं इक बूंद मिल जाये ।
लबालब और छलकता है न अब ख़ाली हो [६]पैमाना ॥३॥
[७]कलामे-–इस्मे-–आज़म को बताते यूँ था फ़रमाया ।
[८]तिलिस्मी–खेल है दुनिया कहीं धोखा न अब खाना ॥४॥
कदम साक़ी के छू छू कर कहूँ क्या दिल की हालत को ।
है उड़ती कत्तरगी मेरी हूँ बनता [९]बैह्रे-–फ़रज़ाना ॥५॥
मुसर्रत है मिली जबके यह जिस्मो-जानो-दिल सब कुछ ।
[१०]कदूमे—पाकेसाकी में किये हैं पेश *नज़राना ॥६॥
यह मस्ती बेखुदी की अब यहां तक रंग है लाई ।
न अपना ही रहा कोई रहा कोई न बेगाना ॥७॥
[११]सरूरो—इल्मो–हस्ती से हुआ [१२]मख़मूर हूँ यां तक ।
नहीं है याद तक रहता कहीं आना कहीं जाना ॥८॥

१.अद्वैत की शराब पिलाने वाले, गुरुदेव। २.शराब पीने वाला, अद्वैत श्रोता। ३.माशूक़, परमात्मा। ४.शोक और कष्ट। ५.हंसता हुआ। ६.शराब पीने का गिलास, अन्तःकरण की वृत्ति। ७.महावाक्य, तत्त्वमसि। ८.जादु का। ९.व्यापक समुद्र। १०.गुरुदेव। ११.आनन्द चित्, सत्। १२.मस्त। *भेंट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

नज़र आता हूँ चलता और फिरता गो ज़माने में।
लिये फिरता जिस्म को है यह इसका [13]आब और [14]दाना ॥९
[15]मये-तौहीद के कुरबाँ अजब हालत हुई [16]तारी।
न [17]ग़ैरीयत् है कुछ बाक़ी किसी से अब न याराना ॥१०॥
तेरे एहसान का साक़ी [18]सिलाह् कुछ दे नहीं सकता।
सुख़न के चन्द फूलों का हूँ करता पेश [19]नज़राना ॥११॥
है रिन्दों की [20]दुआ दिल से तेरे दरबार में पूरण।
रहे आबाद ऐ [21]साक़ी तेरा बरसों यह [22]मयख़ाना ॥१२॥

१३. जल। १४. अन्न, प्रारब्ध। १५. अद्वैत की शराब (उपदेश)। १६. व्याप्त। १७. द्वैत। १८. बदला। १९. भेंट। २०. प्रार्थना। २१. गुरुदेव। २२. शराब पीने का स्थान, अद्वैत सत्संग स्थान।

★ आत्मानुभूति ★

मैं न इन्द्रिय मैं न मन हूँ मैं न चित्त अहंकार हूँ।
मैं परे हूँ होश से फिर किस कदर हुशियार हूँ ॥१॥
एक इन्द्रिय हो नकारा या सभी बेकार हों।
फिर भी मैं मौजूद चूँके ज़िन्दगी आधार हूँ ॥२॥
इक दफ़ा यह बारी बारी छोड़ कर बाहिर गईं।
ज़िन्दा फिर भी मैं रहा गो आरज़ी बीमार हूँ ॥३॥
हाथ पाओं ने यह देखा ख़त्म हो कटने से यह।
ज़िन्दगी काइम थी मेरी गरचे [1]बेरफ़तार हूँ ॥४॥
आँख के जाने से बेशक अन्धा काना हो गया।

१. चलने से रहित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पर रहा ज़िन्दा अगरचे दीद से लाचार हूँ ॥५॥
कान के जाने से बेहरा बिन ज़ुबाँ गूंगा रहा।
खेलता मैं कूदता था फिर भी में २सरशार हूँ ॥६॥
सब के आ जाने पे चाहा छोड़ दूं मैं जिस्म को।
घबरा उठे सारे करण जब देखा मैं तय्यार हूँ ॥७॥
अभिमान झूठा था हमारा "जिस्म हमसे जिन्दा है"।
३तलब करने पर मुआफ़ी दी मैं बख़्शन्हार हूँ ॥८॥
हो गये सारे करण जब तय्यार करने काम को।
जोड़ा सब को काम में फिर उनका मैं सिरदार हूँ ॥९॥
जब ४तकां से चूर होकर सबके सब बेकार थे।
स्वप्न में फिर नये बनाकर मन से करता कार हूं ॥१०॥
मन की लीला को मैं देखूं खुश कभी ५ग़मगीं कभी।
शक्ति अपनी से नचाता बर-सरे-बाज़ार हूं ॥११॥
चैतन्यता से रहित है यह अक्ल और यह होश भी।
जिन्दगी मेरी से रौशन जिन्दगी का सार हूं ॥१२॥
गो सुषुप्ति में निशानो-नाम तक सबका नहीं।
फिर भी मैं आनन्द में गो बेख़बर-बेकार हूं ॥१३॥
६ख्वाबेग़फ़लत का पता देता हूं मैंही जाग के।
मेरी वाँ मौजूदगी थी अब जो ७दर-गुफ़तार हूं ॥१४॥
ख्वाह हो जागृत स्वप्न होया ख्वाह सुषुप्ति जिस्म की।

२.मस्त, आनन्दमें। ३. मांगने। ४.श्रम। ५.शोकातुर। ६. सुषुप्ति। ७. कथन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

साक्ष्य मेरे हैं सभी मैं इनका ८शाहिद्-ज़ार हूं ॥१५॥
ख़्वाह यह पैदा ख़्वाह फ़ना हों मुझ को यह परवा नहीं ।
सबको मेरी है ज़रूरत मैं ९ज़ु-हाजत पार हूं ॥१६॥
यह न समझो जिस्म हूं मैं या कि १०वस्फे जिस्म हूं ।
भस्म हो ऐसा जो समझे मैं तो ११जलती नार हूं ॥१७॥
हैं सरूरो--इल्मो--हस्ती नाम समझाने को यह ।
हों न हों मौजूद हूं मैं वाक्–मन से पार हूं ॥१८॥
अपनी महिमा में हमेशा तृप्त और मैं शान्त हूं ।
सब में सब कुछ मैं हूं पूरण सबका १२जानी-यार हूं ॥१९॥

८.साक्षी । ९.से । १०.सिफत, विशेषण । ११.प्रज्वलित अग्नि । १२.प्रियतम ।

★ ज्ञान निष्ठा ★

परिपूर्ण हूं मैं परिज्ञान हूं मैं,
अखण्ड एक व्यापक अतिशुद्ध निर्मल ।
हमेशा हूं हरजा हर इकमें समाया,
न मुझ से जुदा कुछ मैं हूं एक निष्कल ॥१॥
१कसाफत है देह की न मुझमें कसाफत,
२लताफत है मनकी न मुझ में लताफत ।
मैं ३ज़ोहोश हरदम न मुझमें ४जिहालत,
मैं हूं एक अद्भुत चिदानन्द केवल ॥२॥
महामच्छ की मानिन्द कभी इस किनारे,

१.स्थूलता । २.सूक्ष्मता । ३.चेतना युक्त । ४.अज्ञान ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

फिरूं सैर करता कभी उस किनारे।
हैं जाग्रत सुषुप्ति यह मेरे सहारे,
मैं हूँ जिन्दगी ५लामकाँ ६लामिसल ॥३॥

मैं जाग्रत स्वपन और सुषुप्ति का ७शाहिद।
मैं हूँ ज्ञान घन सब में अनुस्यूत ८वाहिद, ॥
हैं कल्पित सभी नाम रूप और ९अकाइद।
मुझे जान सकते न वाणी अकल ॥४॥

अनादि हूँ मैं आदि मुझ में नहीं है।
१०बरी काल से काल मुझ में नहीं है।
कहाँ मुझ में दुनियां निशाँ तक नहीं है।
मैं शुद्ध सच्चिदानन्द कूटस्थ निश्चल ॥५॥

इस ११आग़ाज़ो–अंजाम का हूँ मैं द्रष्टा।
असङ्ग हूँ वलेकिन हूँ सृष्टि का स्रष्टा।
मेरी शक्लो—सूरत है सब दृश्य द्रष्टा।
१२निहाँ दिल में सबके १३अयाँ हर शक्ल ॥६॥

अजर हूँ अमर मैं अखण्ड एक व्यापक।
मैं चांद अग्नि सूरज हूँ सबका नियामक।
मैं १४अफ़ज़ल हूँ १५अज़-देव-जिन्नो-१६मलायक।
मेरी ज़ात १७यक़ता हूँ मैं १८बेबदल ॥७॥

---

५. देश रहित। ६. सदृशता रहित। ७. साक्षी। ८.एक। ९. नियम
१०. रहित। ११. आदि और अन्त। १२. छुपा हुआ। १३. प्रकट।
१४. श्रेष्ठ। १५. से। १६. फरिश्ते। १७. अद्वैत। १८. निर्विकार।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

[१९]गुलों के [२०]रुखों पर हूँ मैं खिलखिलाता ।
[२१]तबस्सुम से मेरे जहाँ मुस्कराता ।
[२२]मरग़ज़ार में हूँ खड़ा लहलहाता ।
जहाँ नाम मेरा मेरी वह शकल ॥८॥
मैं आकाश में हूँ यह अवकाश होकर ।
चमकता हूँ सूरज में प्रकाश होकर ।
दिलों में हूँ सबके चिदाकाश होकर ।
मैं पूरण हूँ सब में [२३]मिसल बूये-गुल ॥९॥

१९.फूलों । २०.मुखों । २१.मुस्कराहट । २२.घास का खुला मैदान ।
२३.फूल में खुशबू की न्याईं ।

★ बाकी कहाँ ? ★

मिट गया जब नक़्शे-दूई [१]कुफ़्रो-[२]दीं बाकी कहाँ ।
तह में सबकी खुद छुपा है [३]बुग़ज़ोकीं बाकी कहाँ ॥१॥
खुद दिखा कर ग़ैर-सूरत [४]लातग़य्यर ही रहा ।
बेखुदी में देख लेना [५]चूंचुनीं बाकी कहाँ ॥२॥
सब का आपा खुद हुआ जब बहपना उस में नहीं ।
[६]महसूसीयत् से मुनज़्ज़ा [७]ईंचुनी बाकी कहाँ ॥३॥
जब तलक थी [८]माओ-मन इनकार था तकरार था ।
[९]हक़्क़ से [१०]वासिल जूँ हुये [११]उम्मीद्-[१२]हर्जीं बाकी कहाँ ॥४
[१३]नूर की [१४]तुग़यानीं आई दुनिया मानो बन गई ।

१.पाप । २.पुण्य । ३.द्वेष और क्रोध । ४.निर्विकार । ५.जैसा ऐसा
६.इन्द्रियागोचर । ७.यह ऐसा है । ८.मैं और मेरा । ९.परमात्मा ।
१०.अभेद । ११.आशा । १२.भय । १३.प्रकाश । १४.बाढ़ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१५बदनुमाई वैहम हैं जब १६माहजबीं बाकी कहाँ ॥५॥
जब हुआ दीदारे--पूरण, हर तरफ यहं गूंज थी।
मैं ही हूं १७हाज़िरो १८नाज़िर १९आनोईं बाकी कहाँ ॥६॥

१५.बदसूरती। १६.खूबसूरती। १७.दृश्य। १८.द्रष्टा। १९.वह और यह।

★ राज़े बेखुदी=निरहंकारता का रहस्य ★

१बशर कोई मिटाये गर खुदी को दर--२खुदाबारी।
३फ़रिस्ते ४दीद को आवें५बहक्क तेदाद में भारी ॥१॥
शराबे--बेखुदी मुर्शिद ने जिसदिन से पिलाई है।
तभी से हालते मस्ती अजब दिल पर हुई *तारी ॥२॥
तेरा एहसान ऐ मुर्शिद! करूं ज़ाहिर जुबां किससे।
कि जिसने वैहमिया हस्ती से हस्ती हि हटा डारी ॥३॥
भटकते थे खुदी से हम खुदी छोड़ी खुदा पाया।
तले मौहूमा हस्ती के था ६बैहरे--जाविदाँ जारी ॥४॥
उसी बैह्‌रे-हकीकत की यह लैह्‌रें हैं ७कबीरोखुर्द।
कोई मौला कोई बन्दा कोई ८नूरी कोई ९नारी ॥५॥
उसे १०ज़र्राते आलिम में ११दरख्शाँ नूर मिलता है।
खुदी अपनी मिटा जिसने खुदा देखा हो इक बारी ॥६॥
बहुत आसाँ जहाँ में है इलम हर शै का पढ़ लेना।

१.मनुष्य। २.परमात्मा। ३.देवता। ४.दर्शन। ५.सत्य है। *व्याप्त। ६.शाश्वतसमुद्र। ७.बड़ी-छोटी। ८.स्वर्ग निवासी। ९.नरक निवासी। १०.सृष्टि के कण.कण। ११.चमकता हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मगर १२दीदारे-हक्क मुश्किल १३बजुज़ फजले-खुदाबारी ।।७।।
१४खलूसे-दिल १५हलीमी और १६शुकर मौला, १७यकीं पुख़ता
१८बराये तालिबे-मौला जरूरी हैं यह हों चारी ।।८।।
गुरुकामिल की खिदमत में रहे दिन-रात कुछ मुद्दत ।
१९बजा लाये हर इक २०फरमाँ बसद २१इजज़ो-रज़ाकारी ।।९
खुलेगा २२राज़े मख़फ़ी फिर हकीकत का हकीकत में ।
नज़र अपनी से देखेगा यह पूरण ज़ात है सारी ।।१०।।

१२.परमात्मा का दर्शन। १३.बिना परमात्मा की कृपा के।
१४.चित्त की सफाई। १५.नम्रता। १६.सन्तोष। १७.दृढ़ विश्वास
१८.परमात्मा के मांगने वाले के वास्ते। १९.पालन करे। २०.आज्ञा
२१.निरभिमान होकर। २२.छुपा हुआ रहस्य।

★ भूमा अवस्था ★

१सना अपनी ही सुनता हूँ जहाँ जाऊं जिधर देखूं ।
मेरा ही शोर २बरपा है जहाँ जाऊं जिधर देखूं ।।१।।
३ज़िकर ४अज़कार से बाहिर हजारों ५लुत्फ़ लेता हूँ ।
बना हूँ लुत्फ़ मैं खुद ही जहाँ जाऊं जिधर देखूं ।।२।।
मुझे मन्दिर में ठाकुर और मस्जिद में बना ६किबला ।
करें पूजा झुकावें सर जहाँ जाऊं जिधर देखूं ।।३।।
करूं मैं मौत को जिन्दा ७मुनव्वर चांद सूरज को ।
समुन्दर ८नूरे-लाहद हूँ जहाँ जाऊं जिधर देखूं ।।४।।

१.स्तुति। २.मचरहा। ३.व्याख्यान। ४.उपव्याख्यान। ५.स्वाद, आनन्द। ६.पूजा का लक्ष्य। ७.प्रकाशित। ८.अनन्त प्रकाश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बना हूँ ९सामयो-१०गोया हर इक ११गोशो-१२ज़ुबाँ में मैं
सभी आँखों में मैं देखूं जहाँ जाऊं जिधर देखूं ॥५॥
१३बरी हूँ १४जुमला कैदों से १५असीरे-इश्कहूँ लेकिन।
दिलों में १६जागुज़ीं सबके जहाँ जाऊं जिधर देखूं ॥६॥
मेरा ही १७फ़ैज़े-पिनहानी १८बशक्लेरंगे-१९गूनागूं।
खिला २०गुलजारे-नूरानी जहाँ जाऊं जिधर देखूं ॥७॥
उठी हैं २१मुख्तलिफ़ लँहरें मेरे ही बँहरे पूरण से।
मुझी में हैं मुझी से हैं जहाँ जाऊं जिधर देखूं ॥८॥

९.सुनने वाला। १०.बोलने वाला। ११.कान। १२.वाणा। १३.रहित। १४.सब। १५.प्रेम का कैदी। १६.रहने वाला। १७ छुपी हुई बखशिश। १८.१९.नाना प्रकार के रङ्गों की मूर्तियों से। २०.प्रकाश का बग़ीचा। २१.भिन्न २।

भारत में जब सिकन्दर आया तो एक ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष से जो उस समय शीतकाल के कारण धूप में बैठे थे उसकी भेंट हुई। मैं सिकन्दर हूँ" ऐसा परिचय देते हुये उसने कहा "कोई सेवा" महापुरुष ने कहा "धूप छोड़ दें"। यह सुनते ही क्रुद्धित होकर उसने तलवार निकाल ली। मारने के लिये जब उठाई तो ऊपर उठा हुआ हाथ तलवार के सहित स्तब्ध होगया। उसकी यह दशा देखकर महापुरुष ने उससे कहाः—

★ असङ्गता ★

जिस्म से हूँ मैं इलैहदा इसलिये डरता नहीं।
जिन्दगी हूँ १जानेजाँ मैं इससे ही कटता नहीं ॥१॥
पैदा हो हो मिटते रहना जिस्म का ही काम है।
मैं अनादि २नूरे--यक्साँ इसलिये मिटता नहीं ॥२॥

१.ज़ान की भी जान। २. सम प्रकाश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बढ़ना बढ़के क्षीण होना जिस्म का ही ३वस्फ़ है।
मैं हूँ अज-अविनाशी-इकरस इसलिये बढ़ता नहीं ॥३॥
बूढ़ा और कमज़ोर होना जिस्म का ही धर्म है।
मैं हूँ व्यापक नूर-४वाहिद इसलिये घटता नहीं ॥४॥
पैदा हो जो वह फ़ना हो मुझ में दोनों ही नहीं।
जो चढ़े वह ही गिरे मैं इसलिये चढ़ता नहीं ॥५॥
बालपन जोबन जरा सब जिस्म के ५औसाफ़ हैं।
मैं हूँ हर हालत में रौशन इसलिये दबता नहीं ॥६॥
देखता सुनता हूँ चलता इन ६हवासों के सबब।
७बेकराँ हूँ *इल्मोहस्ति इसलिये चलता नहीं ॥७॥
पाप-पुन सुख-दुःख नहीं लेकिन हैं रौशन मुझ से ही।
मैं ८सरूरे--लातग़य्यर इस लिये दुखता नहीं ॥८॥
जिस्मो-जाँ की कैद से बिल्कुल बरी आज़ाद हूँ।
मैं हूँ इक अनुस्यूत—९शाहिद इसलिये डरता नहीं ॥९॥
हस्ती मेरी को हिलाये है नहीं दुनिया में वह।
१०ज़ात में काइम हूँ अपनी इसलिये हिलता नहीं ॥१०॥
किस तरह कोई बुझाये रौशनी मेरी को शाह।
खुद बखुद हूँ नूर ११दाइम इसलिये बुझता नहीं ॥११॥
नूर मेरे से १२मुनव्वर १३अंजमो—अफ़लाक सब।

३.गुण। ४.एक। ५.गुण। ६.इन्द्रियों। ७.अनन्त *चैतन्य सत्ता। ८.निर्विकारआनन्द। ९.साक्षी। १०.स्वरूप। ११.हमेशा। १२,प्रकाशित। १३.सितारे और आस्मान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चान्द सूरज मुझ से रौशन इसलिये छुपता नहीं ॥१२॥
किसकी ताकत है जलाये अपनी गर्मी से मुझे।
तेज का भी तेज हूँ मैं इसलिये जलता नहीं ॥१३॥
था मिटाना जिसने चाहा मुझको वह खुद मिट गया।
१४लामकां हूँ इल्मोहस्ती इसलिये मिटता नहीं ॥१४॥
दायें बायें आगे पीछे नीचे ऊपर हर जगह।
मौजूद सब में हर घड़ी हूँ इसलिये हटता नहीं ॥१५॥
हो न हो दुनिया सभी यह जिस्मोजाँ भी हो न हों।
मैं हूँ पूरण सच्चिदानन्द इसलिये डरता नहीं ॥१६॥
यह सुनकर सिकन्दर चरणों पर गिरगया और क्षमा का प्रार्थी हुआ।

१४. दश रहित।

★ ब्रह्मात्म स्थिति ★

(कैवल्योपनिषद् के आधार पर)

१ख्वाब और २बेदारी ३गहरी नींद ज़ाहिर जिससे हों।
ब्रह्म हूँ मैं ज्ञानघन सब कैद से आज़ाद हूँ ॥१॥
भोक्ता और भोग्य तीनों—४हालतों में जो भी हैं।
सबका साक्षी मैं सदाशिव ज्ञानरूप और *शाद हूँ ॥२॥
मुझ में पैदा मुझ में कायम मुझ में होते सब ५फ़ना।
ऐसा हूँ मैं सच्चिदानन्द सबका अन्त और आद हूँ ॥३॥
छोटे से छोटा भी हूँ मैं और बड़े से हूँ बड़ा।
विश्व हूँ आश्चर्य हूँ मैं ६हाज़िरो—७बेबाद हूं ॥४॥

१.स्वप्न। २ जाग्रत। ३.सुषुप्ति। ४. अवस्थाओं। *प्रसन्न। ५.लय। ६.प्रत्यक्ष। ७.साक्षात्. दूरी से रहित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मैं पुरातन–पुरुष--अद्वय--ईश—शिव--कल्याणरूप।
जगमगाती ज्योति–ज़िन्दा सब जगह आबाद हूँ ॥५॥
हाथ–पाओं हैं नहीं पर सब से ज़ोरआवर हूँ मैं।
बेजुबाँ हूँ पर जुबाँ में गुफ़्तुगू [८]इरशाद हूँ ॥६॥
आँख मेरी है नहीं पर देखता हर चीज़ हूं।
सुनता हूं कानों बिना और दौड़ता विन पाद हूं ॥७॥
जानना और कर्म करना सबमें मुझ चेतन से है।
मुझको कैसे जानें मैं तो जानने का भी आद हूँ ॥८॥
जानने लाइक हूं मैं ही ऋक् यजु और साम से।
वेद का वेत्ता हूं मैं अद्वैत का उस्ताद हूं ॥९॥
पाप--पुण्य नेकी--बदी से नाश मैं होता नहीं।
जन्म, बुद्धि, देह न मुझ में, मैं न [९]अज़कस-ज़ाद हूं ॥१०॥
मैं न भूमि जल हूं अग्नि और नहीं आकाश हवा।
बल्कि हूं परमात्मा और सब की मैं [१०]बुनियाद हूं ॥११॥
ऐसा निष्कल एक पूरण सबकी बुद्धि में हूं मैं।
सबका साक्षी–शुद्ध-निर्मल-चैतन्य [११]बिनप्रमाद हूं ।१२।

८.हुकम। ९.किसी से उत्पन्न हुआ। १०.आधार। ११.आलस्य रहित।

★ विज्ञान नौका ★

तप दान यज्ञ से हुई शुद्ध—बुद्धि।
जो राजा के पद को तुच्छ जाने दिल से॥
सभी त्याग कर, तत्त्व जिसको है पाता।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ब्रह्मनिष्ठ दयालु गुरु से श्रवण कर ।
जिसे स्वरूप अपना ही जाने, विचारे ॥
जो कर निदिध्यासन है विद्वान पाता ।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं ॥२॥

जो आनन्द घन है स्वप्रकाश-चेतन ।
न प्रपञ्च जिसमें परिच्छेद-शुन्यम् ॥
अहंब्रह्म वृत्ति का जो लक्ष्य तुर्या ।
वही मैं परम्-ब्रह्म अखण्ड-आत्मा हूं ॥३॥

न जाने से जिसके है संसार प्राप्ति ।
जिसे जान लेने से होती है मुक्ति ॥
अति-शुद्ध-निर्मल, परे वाक् मन से ।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं ॥४॥

निषेद्ध नेति नेति से करके ही सबका ।
जिसे सब में पूरण समाधिस्थ देखें ॥
तुरीय, तीन अवस्था का जो है प्रकाशक ।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं ॥५॥

जहाँ का सभी सुख है इक लेश जिसका ।
है *भान्ति से जिसकी यह सब भान होता ॥ *प्रकाश
जिसे देख लेने से सब जाये देखा ।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं

अनन्त और व्यापक जो है सर्वयोनि ।
निरिच्छा-असङ्ग-शिव जो ॐकारगम्य है ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निराकार-उज्वल जो है हीन--मृत्यु।
वही मैं परम्-ब्रह्म-अखण्ड-आत्मा हूं ॥७॥
जिस आनन्द-सिन्धू में जब डूब जावें।
सभी नाश हो कार्य--कारण-अविद्या ॥
जिस अद्भुत निमित्त से नहीं मन है फुरता।
वही मैं परम् ब्रह्म अखण्ड आत्मा हूं ॥८॥
फल:---स्वरूपानुसंधान जो इस उस्तति को।
पढ़े रोज्ञ भक्ति से गावे मनुष्य जो ॥
सुने रोज्ञ उत्साह से दिल में कमावे।
बने यों ही विष्णु सभी वेद मानें ॥९॥
यह विज्ञान-नौका है पकड़ेगा जो भी।
वह अज्ञान-भव-सिन्धु तर जायेगा ही ॥
खड़ग-ज्ञान से काटे तृष्णा जो पूरण।
वह पद विष्णु पाये उसे धन्य मानें ॥१०॥

★ निर्वाण षट्क ★

न मन बुद्धि चित्तहूं न अहंकार हूं मैं।
न मैं कान जिह्वा न मैं नासका हूं ॥
न आकाश वायु न अग्नि न भूमि।
चिदानन्द-शिव हूं चिदानन्द-शिव हूं ।१०

प्राण नाम वाले न मैं पञ्च वायु।
न मैं सप्त धातु न मैं पञ्च कोश हूं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जुबां हाथ पाओं गुदा हूं न उपस्थ हूं।
चिदानन्द-शिव हूं चिदानन्द-शिव हूं ॥२
नहीं राग मुझ में न द्वेष है न लोभ ही।
न मोह शोक मुझ में न निन्दा न मद ही ॥
न धर्मार्थ काम और न है मोक्ष मुझ में।
चिदानन्द-शिव हूं चिदानन्द-शिव हूं ॥३
न नेकी बदी मुझ में सुख दुःख नहीं।
न मैं वेद मन्त्र और न तीरथ न यज्ञ हूं ॥
न भोजन न भोक्ता न क्रिया न कर्ता।
चिदानन्द-शिव हूं चिदानन्द-शिव हूं ।४
न मृत्यु है मुझ में मैं अमृत हूँ बेशक।
न माता-पिता हैं न जन्म ही हुआ है ॥
न अपना-बेगाना गुरु हूँ न शिष्य हूँ।
चिदानन्द-शिव हूँ चिदानन्द-शिव हूँ ।५
निराकार—कूटस्थ विकल्पों से खाली।
मैं पूरण हूँ व्यापक सभी इन्द्रिय गण में ॥
न बन्धन न मुक्ति न भय मृत्यु मुझमें।
चिदानन्द-शिव हूँ चिदानन्द-शिव हूँ ॥६

★ केनोपनिषद्—सार ★

मुमुक्षु पूछे सतगुरू से मन में हरकत किस की है।
दौड़ता विषयों में हरदम इसमें [1]बरकत किसकी है।१।

1. कृपा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आँख देखे किससे सुनते कान हैं आवाज़ को।
कौन है क़ाबू में रखता प्राण के परवाज़ को ॥२॥
कौन है वह देवदेवः जिससे बाणी बोलती।
गुह्यतम भी बात को यह स्पष्ट करके खोलती ॥३॥
किसके शासन में हैं फिरते चान्द सूरज घूमते।
इन्द्रादि देवता भी पाद किसके चूमते ॥४॥
किसकी आज्ञा में हैं प्राणी भोगते सुख-दुःख यहां।
किस जगह् से आते हैं यह जाते हैं फिर सब कहाँ ॥५॥
किसकी शक्ति से हैं[3] कायम दुनिया का यह [4]सिलसिला।
जीवन का वुह दाता कहाँ मुझ को दो उस से मिला ॥६॥
सत् गुरु बोले सुनो तुम गौर से [5]राज़ेनिहाँ।
जिसके अनुभव होने से ही मुक्त होगे तुम यहाँ ॥७॥
बाहिर और भीतर से शुद्ध हो फिर सुनो उपदेश तुम।
उपनिषद् मन्दिर में करने हो लगे प्रवेश तुम ॥८॥
अपने वर्णाश्रम के सारे धर्मों का पालन करो।
कामना को छोड़ सब कुछ ईश के अर्पण करो ॥९॥
ढूंड में सत् वस्तु की तुम एक कर दो रात-दिन।
दर्शन की इच्छा में तुम आंसू बहा लो रात-दिन ।१०।
तीव्रतर पैदा करोगे मोक्ष की इच्छा जभी।
ब्रह्म विद्या के बनोगे ठीक अधिकारी तभी ।११।
अब सुनो उपदेश तुम खूब होना सावधान।

२.उड़ान, चलने की क्रिया। ३.स्थित। ४.प्रवाह। ५.छुपा हुआ रहस्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

साम वेदी उपनिषद् है यह खूब करना इसका गान ।१२।
सुनना इसको शौक़ से और करना भी इस पर विचार।
फिर करो ६निदिध्यासन होगा आत्मा साक्षात्कार ।१३।

६.एकतान् वृत्ति तेल धारा की तरह।

उपदेशः—

मन का मन है देवता वुह कान का भी कान है।
बाणी की बाणी वुही और प्राण का भी प्राण है ।१४।
आँख की वुह आँख होकर देखता अपना ७जलाल।
सब का द्रष्टा वुह है साक्षी दूर ८अज्ञ-रंजो-मलाल ।१५।
जिस से देखे आँख उसको आँख देखे किस तरह।
बोलती जिस से .जुबाँ है उसको बोले किस तरह ।१६।
कान बेह्‌रे जिस बग़ैर और आंख अन्धी जिस बिना।
वह है सब का आत्मा इसजा ९अयाँ उस जा अयाँ ।१७।
हैं यह इन्द्रिय जड़ सभी इन में कहाँ है ज़िन्दगी।
है वुही चैतन्य-ज्योति जो है इनकी जिन्दगी ।१८।
उसको जानो ब्रह्म निश्चय जो नहीं जाता कहीं।
जो नहीं हैं भूलता और याद भी आता नहीं ।१९।
चक्षुबाणीमन के अंदर चैतन्य ज्योति आत्मा।
ब्यापक होने से यही है ब्रह्म सबका आत्मा ।२०।
बोला न जाये बाणी से जो बाणी जिससे बोलती।
वुह ही ब्रह्म तुम निश्चय जानो ब्रह्म से है बोलती ।२१।
मन मनन कर सकता नहीं पर मन करे जिससे मनन।

७.विभूति, महिमा। ८.शोक और दुःख से दूर है। ९.प्रकट।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

वुह ही ब्रह्म तुम निश्चय जानो ब्रह्म से करता मनन ।२२।
आंख से देखा न जाये पर आंख जिससे देखती ।
वुह ही ब्रह्म तुम निश्चय जानो ब्रह्म से है देखती ।२३।
सुन नहीं सकता जिसे यह कान जिससे सुनता है ।
वुह ही ब्रह्म तुम निश्चय जानो ब्रह्म से यह सुनता है ।२४।
सूंघा न जाये नाक से जो पर नाक जिससे सूंघता ।
वुह ही ब्रह्म तुम निश्चिय जानो ब्रह्म से है सूङ्घता ।२५।
ब्रह्म अपना आप तेरा सच्चिदानन्द आतमा ।
भावना ऐसी किया कर "मैं ब्रह्म हूँ सर्वात्मा" ।२६।
१०ज़ात मेरी से है काइम ११जिस्मोजाँ सारा जहाँ ।
१२ज़ाहिरोबातिन में हरजा १३मिस्ले-बू दर-गुल अयाँ ।२७।
मैं नहीं हूँ जिस्म हरगिज़ जिस्म की मैं जान हूँ ।
जान की भी ज़िन्दगी और जिस्मोजाँ की जान हूँ ।२८।
नाक का भी नाक हूँ मैं कान का भी कान हूं ।
मैं हूं इक १४बहरे-रवां और प्राण का भी प्राण हूँ ।२९।
आंख की भी आँख हूं मैं और ज़ुवां की हूं ज़ुवां ।
जिन्दगी हूं सब की चेतन १५लामकानो १६लाज़मां ।३०।
मैं हूं सूरज चन्द्रमा की रौशनी की रौशनी ।
१७चश्मोदिल-१८गोशो.ज़ुबां की रौशनी की रौशनी ।३१।

१०.सत्ता । ११.शरीर और जीव । १२.बाहिर भीतर । १३.फूल में ख़ुशबू की न्याईं प्रकट । १४.अनुस्यूत जीवन । १५.देश रहित । १६.कालातीत । १७.आंख और हृदय । १८. कान और जिह्वा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

यम कुबेर और वरूण वायु इन्द्र अग्नि देवता।
सब उपासक हैं मेरे और मैं हूँ सबका देवता।३२।
मेरे ही सङ्कल्प से सब प्राणी आते हैं यहाँ
कर्म का फल भोग कर वुह होते है मुझमें [१९]निहाँ।३३।
मेरी ही चैतन्य शक्ति से है शासन में जहाँ।
मैं स्फूर्ति-सत्ता सब की मुझ बिना *बेजाँ जहाँ।३४।
लोक और लोकान्तर उनमें जितने प्राणी हैं सभी।
चैतन्य-[२०]अबिध मैं हूँ मेरी लैंहरें हैं छोटी बड़ी।३५।
हर एक वृत्ति का हूँ साक्षी मुझसे वृत्तियां जागती।
मैं हूँ नित्य-कुटस्थ-ज्योति यह फिरें ख़्वाह भागती ३६।
स्वप्न और जाग्रत में इनके नाच को मैं देखता।
हों सुषुप्ति में यह [२१]साकिन तब भी मैं हूँ देखता।३७।
[२२]इल्म और [२३]लाइल्मी का साक्षी और [२४]दानिन्दा हूँ।
सब [२५]हवासों प्राण-जिस्मो-दिल का मैं [२६]रानिन्दा हूँ।३
मैं हूँ केवल सच्चिदानन्द [२७]लातअल्लुक जिस्म से।
कल्पित है सारा जहाँ और मैं [२८]बरी हूँ [२९]इस्म से।३९
[३०]ज़ात मेरी है [३१]मुहीतो-[३२]लाज़वालो-[३३]लाफ़ना।
सब फ़ना है मुझ बिना और मैं ही हूँ सबकी [३४]बक़ा।४०

१९.लुप्त ★निर्जीव, जीवन रहित। २०.समुद। २१.चुप। २२.वृत्तिज्ञान
२३. अज्ञान। २४. जानने वाला। २५. इन्द्रिय। २६. नेता।
२७. सम्वन्ध रहित। २८. रहित २९. नाम। ३०. सत्ता, स्वरूप।
३१. व्यापक। ३२. कमी से रहित! ३३. मृत्यु रहित। ३४. बाकी
रहने वाला, अवशेष।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ ब्रह्मभावना का फल ★

इस किसम की भावना ही दृढ़ता को जब पायेगी।
ब्रह्ममय निष्ठा बनेगी देह बुद्धि उठ जायेगी ।४१।
जिस कदर यह ब्रह्मनिष्ठा [35]पुख़्ता हो कल्याण है। ३५दृढ़।
आचरण है शुद्ध जिसका उसको यह आसान है।४२।
है यही कल्याण दृष्टि ब्रह्मवेत्ता जानते।
मोक्ष का हेतु इसेही उपनिषद् हैं मानते।४३।
है यही ब्रह्मभावना जितनी भी यह पक जायेगी।
जिस्म के होते हुये भी रंग अजब यह लायेगी।४४।
खिल-खिलाता मुस्कराता कूदता और नाचता।
ज़िन्दगी के दिन गुज़ारेगा तू मानो खेलता।४५।
पीछे फिर जब यह [36]हुबाबे-जिस्म फटने पायेगा।
[37]बेहरे-सरूरे-बेकराँ से खुद को [38]यकजाँ पायेगा।४६।
मिलकर समुन्दर से नदी ज्यों वह समुद्र हो जाती है।
ऐसे ही यह परिच्छिन्न ज्योति समष्टि ही होजाती है।४७।
अभेद था पहले भी पर इस देह से मानो भेद था।
मिट गया इसका निशाँ बस एक का वह एक था।४८।
जिस तरह घट से जुदा मालूम होता आकाश था।
घट गया जब फूट वह आकाश तो आकाश था।४९।
"फिर न आना और न जाना [39]बेहजाबी हर तरफ़।

---

३६. देह का बुदबुदा। ३७. अनन्त आनन्द के समुद्र। ३८. अभेद।
३९. प्रकटता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जिस तरह है ४०रो.जे–रौशन बे–नकाबी हर तरफ ।५०।
भेंट है चरणों में स्वामिन् आप के सम्वाद यह ।
निष्ठा होवे इसमें पूरण मागूँ आशीर्वाद यह ।५१।

४०. प्रचण्ड सूर्य ।

★ पञ्च कोश-निषेध ★

समझ हकीकत को अपनी बन्दे खुदी की तेह् में खुदा छुपा है।
१ब२ग़ौर देखे अगर तू खुद को नहीं तू बन्दा तुही खुदा है।
खुदा है ३इल्मोसरूरहस्ती, असल में तूभी यही है बन्दे।
फंसा है ४दामेखुदी में नाहक्क, निकल तू बाहिर कहाँ पड़ा है।

अन्नमयकोश का निषेधः—

न मांस हड्डी न मज्जा नांड़ी, न रक्त वीर्य न हाथ पाओं।
न आंख जिह्वा न कान है तू, न अंश कोई भी जिस्म का है।
यह जिस्म सारा भी तू नहीं है, नहीं था पैदा से पहले अपनी
न मौत के बाद रहे यह बाकी, ५फ़नाह् है जो वह नहीं६बक़ा है।

प्राणमयकोश का निषेधः—

प्राण*गर्चेह् है जिस्म सारे, में सब ७हवासों का ८मंबये-हरकत
मगर यह जड़ है नखुद कोजाने,न और किसी को भी जानता है।
है नींद में भी ९गो चलता रहता, मगर जो डाकू घुसआयें घर में
न कह सके कुछ न कर सके खुद, इसीलिये यह अनात्मा है।

१. से। २. ध्यान। ३. ज्ञान, आनन्द, सत्। ४. अभिमान का जाल।
५. नाशवान। ६. अमर *यद्यपि। ७. इन्द्रियों। ८.क्रिया का स्रोत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मनोमय कोश का निषेधः—

है मन भी हरदम बदलता रहता, कभी यह खुश है कभी रंजीदा।
"यह जिस्म हूँ मैं" "यह घर मेरा" यूं ज्ञान उल्टे से मन भरा है।७

विज्ञानमय कोश का निषेधः—

है बुद्धि सबसे बनीजो [१०]अफ़ज़ल, है लीन [११]ख़्वाबेगिरा में होती
जो लीन होकरके होवे पैदा, नहीं है हक्क वह अनात्मा है।८

आनन्दमय कोश का निषेधः—

कभी जो बुद्धि यह ठहरे इकजा, समय पे मिलने से शै जो चाहथी
है सुखसा उसदम मालूम होता, मगर वह रहता नहीं सदा है।९
था नींद में जब हो लीन बुद्धि, है उठ के कहता 'आराम में था'।
कहां गया सुख न अबहूँ वैसा,' यहसुख भी सचमुच अनात्मा है।१०
पहला अन्नमय [१२]कसीफ़ परदा, प्राण–मन-बुद्धि [१३]लतीफ तीनों
आनन्दमय है परदा पञ्चम, तू सब का साक्षी तूही खुदा है।११
यह पांचों पैदा फ़नाह् हैं होते, तू जाने पैदा फ़नाह् को इनकी
जो जाना जाये वह सब फ़नाह् है, जो जाने सबको वही बक़ा है१२
है [१४]हस्ती इल्मोसरूर [१५]हक्क तू, बका हक़ीक़त है तेरी बन्दे।
तू सबमें सब कुछ हमेशा पूरण, न तुझसे बाहिर कहीं खुदा है।१३

---

१०. श्रेष्ठ। ११. सुषुप्ति। १२. स्थूल। १३ सूक्ष्म। १४. सच्चिदानन्द।
१५. ब्रह्म, सत्।

★ इश्के हकीकी=सच्चा प्यार ★

जो चाहें जिन्दगी [१]अब्दी उन्हें ईश्वर ही प्यारा है।

---

१. नित्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

उसी से ²गुफ्तगू उनकी वही उनका सहारा है ।१।
³मुहब्बत की निशानी यह ⁴हक़ीक़ी गर हो मालिक से ।
करे ⁵कुरबान जाँ ⁶ख़ादिम जिगर दिल ⁷पारा-पारा है।
नहीं वोह आशिके-⁸सादिक जो ⁹जाँ अपनी बचा रक्खे ।
बिना कटवाने सिर अपना न हीला याँ न चारा है ।३
यह मनज़िल ¹⁰इश्केवह्दत है न ¹¹आसाँ इसको तुम सम
यह रस्ता हूबहू जैसे खड़्ग की तेज-धारा है ।४
जो खेले जान पर इसजा ¹²बुलन्द उसका ही ¹³रुतबा है
कि ध्रुव-प्रह्लाद-मीरां ने दिया इसका इशारा है ।५
¹⁴शुमार उसका ही इनसानों में ऋषियों ने बताया है ।
¹⁵हवासों को किया काबू ¹⁶ख़ुदी को जिसने मारा है ।६
भटकता वोह यकीनी है बहुत जन्मों के चक्कर में ।
प्रभु को भूल कर जिसने जनम विषयों में हारा है ।७
न होगा ¹⁷ख्वाब में भी सुख उसे ख्वाह हो शाहिन्शाह भी
भरा ¹⁸नफ़सानी-ख्वाहिश से जो दिल किस्मत का मारा है
ख़ुदी ख्वाहिश को कहते हैं जो बेख्वाहिस वोह बेख़ुद है
ख़ुदा ख़ुद वोह कि ख़ाहिश से किया जिसने ¹⁹किनारा है

२.बात चीत । ३.प्यार । ४.सच्ची । ५.न्योच्छावर । ६.सेवक । ७.द्र
भूत । ८.सच्चा । ९.जीवत्व । १०. अद्वैत के प्यार की । ११. आसा
आराम से सिद्ध होने वाला काम । १२.ऊंचा । १३.स्थान । १४.गणन
१५. इन्द्रियों । १६. अभिमान । १७. स्वप्न । १८.विषय भो
१९. छोड़ दिया है ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सफल उसका ही समझो तुम यह इनसानी जनम पूरण।
खुदी का काट सिर जिसने प्रभु चरणों में डारा है।१०।

★ यकीने कामिल=दृढ़ विश्वास ★

कहने को यूं जहां में हजारों हैं यार दोस्त।
मुश्किल के वक्त एक है १परवरदिगार दोस्त ॥१
मुश्किल को अपनी जिसने २मुश्किलकुशा पे छोड़ा।
खुद बनके ३हल्ले-मुश्किल आया वह यार-दोस्त ॥२
सेवक किसी ने जब ही लाचार हो पुकारा।
४फौरन् ही नंगे पाओं पहुंचा वोह यार–दोस्त ॥३
जौ भर थी सूंड बाकी गज ने "हरि" पुकारा।
खुद काटने को फंदा दौड़ा वोह यार–दोस्त ॥४
प्रह्लाद घिर गया जब ५दर–दस्ते-खूं पिदर के।
बन के ६मुहाफ़िज आया नरसिंह-यार-दोस्त ॥५
७जालिम ने जबकि चाहा करना नगन सभा में।
खुद चीर रूप बन कर आया ८मुरार—दोस्त ॥६
९नादारी—१०बेकसी में देखा सुदामा जूं हीं।
११अश्कों से धोये पाओं खातिर–१२करार–दोस्त ॥७
है वक्ते—आजमाइश भूलो प्रभु न हरगिज़।

---

१. पालन करने वाला,। २. मुश्किल खोलने वाला, परमात्मा ३.विपत्ति के हरने का उपाय। ४.शीघ्रतम। ५.पिता के खून वाले हाथों में। ६. रक्षक। ७. अत्याचारी (दुश्शासन)। ८. भगवान् कृष्ण, मुर दैत्य के दुश्मन। ९. निर्धनता। १०. दीनता। ११. आँसुओं, अश्रुओं। १२. प्रसन्नता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विह् तर यही है पूरण कर–[13]जाँ--[14]निसार--दोस्त ॥८

१३. जीवत्व। १४. न्योछावर।

★ इमदादे ग़ैब=दैवी सहायता ★

काम रुकने का नहीं है ऐ [1]दिले—नादाँ कोई।
खुद्—बखुद् बन जायेगा [2]ग़ैब से सामाँ कोई ।१।
जिनका है [3]सिद्को-यक़ीं उस [4]ज़ाते-वाहिद पर [5]अज़ीज़
वोह नहीं हैं जानते बिन [6]मौला है [7]रैहमाँ कोई।२
[8]राज़िक़ो-रोज़ीरसाँ है सब का वोह [9]परवरदिगार।
[10]फ़ज़ल उसका होने पर रैहता नहीं [11]गिरयाँ कोई।३
[12]विरदे-मौला हर [13]मुसाइब का ही है [14]वाहिद इलाज
जिसको हासिल, है नहीं हाजत उसे [15]दरमां कोई।४
मौत पर है जिसका काबू वोह है [16]रब्बुलआलमीं।
[17]ख़ादिम उसका बनने से फिर क्यों रहे [18]तरसाँ कोई।५
[19]जिह्लो-नादानी से अपनी दूर है कोसों [20]वले।
फिरता है वोह दायें-बायें गर करे पैहचाँ कोई।६।
छोड़ दे अपनी खुदी मैं यह करूंगा वोह करूं।
खुद करेगा काम अपना खुद बना सामाँ कोई।७।

१.अज्ञानी चित्त। २.दैवी इच्छा। ३. भरोसा और निश्चय। ४. अद्वैत सत्ता। ५.प्यारे। ६. परमात्मा। ७. दयालु। ८. धनदाता और अन्न जल पहुँचाने वाला। ९.पालक। १०.कृपा। ११. रोने वाला, दुःखी। १२.परमात्मा की लगातार स्मृति। १३.तकलीफ, कष्ट। १४.एक ही। १५.इलाज। १६.सब जहानों का मालिक। १७.सेवक। १८.भयभीत। १९. अज्ञाना। २०. लेकिन।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दिल में रख तू यादे-पूरण हाथ से कर फर्ज़ अदा।
नाम को बाकी रहे न रंजोग़म–२१अरमाँ कोई।८।

२१. पश्चाताप, अफसोस।

★ ईश्वर प्रेम ★

जो भी चाहे छूटना याँ रंज और १आलाम से।
छोड़दे दुनिया की ख्वाहिश प्रेम डाले राम से।१।
राम के है नाम में प्रभाव ऐसा २बेनज़ीर।
जो जपे छुट जायगा माया के ३मक्रोदाम से।२।
सैंकड़ों लाखों ४मिसालें इसमें हैं प्रमाण—रूप।
शरण में आये हुये बस मुक्त वोह आलाम से।३।
किस कदर था दुःख वोह देता भक्त-राज-प्रह्लाद को।
हो गईं सब मुश्कलें आसान उसकी नाम से।४।
राम पर था इस कदर उसको भरोसा और यकीं।
राम मेरा है ५मुहाफिज़ काम मेरा राम से।५।
६गो गिराया था गया वोह पर्वतों के शिखर से।
जाके बैठा था प्रभु की गोद में आराम से।६।
पानी में फैंका गया वह आग में डाला गया।
होसका उसका न ७बींका बाल भर भी नाम से।७।
गज, अजामिल, ध्रुव, सुदामा, नरसी, ऊधव, सूरदास।
कर गये जीवन को पावन वह हरि के नाम से।८।
भीलनी, मीराँ, अहिल्या, द्रौपदी, सब नारियां।

१. दुखों। २. अलौकिक। ३. धोखा और जाल। ४. दृष्टान्त।
५. रक्षक। ६. यद्यपि। ७. टेढ़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हो गईं ७मन्जूर—खातिर लिव लगा हरिनाम से ।९।
दिल में अपने भक्ति पूरण ऐसी हो जब ईश से ।
प्रेम से बांधे हुये आयें हरि निजधाम से ।१०।

७. भगवद् हृदय को स्वीकार ।

★ ईश्वर सहारा ★

१खुदा को २नाखुदा समझो चलो उसके सहारे पर ।
लगायेगा वुही तूफ़ान में बेड़ा किनारे पर ॥१॥
वुही है ३पासबाँ सबका ४तवक्कुल को बना ५पेशा ।
है चलता काल का चक्कर उसी के हो इशारे पर ॥२॥
खुशी में ग़म में हरदम ही है६लाज़िम याद उसकी ही ।
हकूमत है उसी की ही जहाँ ७लौलाक सारे पर ॥३॥
समझ मत ८ग़ैर को ९कादिर विना उसके जहाँ भर का।
उसी के हुक्म का १०कोड़ा है सूरज चान्द तारे पर ॥४॥
भरोसा और ११तहम्मुल रख भुला मत याद को उसकी।
हुआ है खुद१२मुआविन वोह हर इक को१३वक्त-आड़े पर॥
जुदा हरगिज न समझो तुम खुदा को १४ज़ात अपनी से।
हैं रौशन जिस्मोजाँ उससे चलें उसके सहारे पर ॥६॥
हुआ है १५सूरते-जाँ में वह जाहिर खेल की खातिर ।
खुदी से तू जुदा उससे वोह तुझ से है किनारे पर ॥७॥

१.परमात्मा । २.मल्लाह । ३ रक्षक । ४.दृढ़ विश्वास । ५. धारन कर
६.कर्तव्य । ७. परलोक । ८.भिन्न । ९. बनाने वाला । १० । चाबुक
११.धीरज, धैर्य । १२.मददगार । १३. कष्ट के समय । १४. स्वरूप
१५. जीवत्व की आकृति में ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मिटादे बस खुदी अपनी न कुछ भी तू बना अपना।
करेगा काम अपना फिर तुझे रखकर किनारे पर ॥८
[16]मिसल प्रहलाद कर अपनी खुदी तू भी [17]फ़नाह् पूरण।
चलेगा फिर जहाँ सारा तेरे बस इक इशारे पर ॥६

१६. न्याईं । १७. मिटादे ।

★ मांग ★

ईश्वर शरण हूँ तेरी दुःख से आज़ाद करदे।
उजड़ा चमन खुशी का फिरसे आबाद करदे ॥१॥
ढूंडा जहाँ है सारा दुःख में हैं [1]ग़र्क सब ही।
[2]मख़ज़न है सुख का तूही या रब्ब ! तू [3]शाद करदे ॥२
[4]रंजो—अलम का मेरे [5]बाइस खुदी है मेरी।
[6]रख़ते-ख़ुदी को मेरे जड़ से बरबाद करदे ॥३॥
हैं देव-जिन्न-[7]मलाइक सब मौत के खिलौने।
माँगूं अमरत्व तुझसे तू [8]बामुराद कर दे ॥४॥
बन [9]राहनुमा तू मेरा भूला हुआ हूं रस्ता।
चमके वह [10]नूरेइरफाँ [11]नूरे-नियाद करदे ॥५॥
ग़फ़लत में उम्र गुज़री ग़ाफ़िल रहा मैं तुझ से।
[12]बेदार कर दे या रब्ब !हर दम[13]बयाद करदे ॥६॥
बाहिर निकाल मुझको [14]तारीकी के गढ़े से।
[15]जानिब तू रौशनी के बस [16]पा-निहाद करदे ॥७॥

१. डूबेहुये। २.खज़ाना, केन्द्र। ३.प्रसन्न। ४. शोक और ग़म। ५. कारण। ६. अभिमान के सामान। ७. फ़रिश्ते। ८. इच्छा की पूर्ति, सफल। ९.रस्ता दिखाने वाला। १०.ब्रह्मविद्या का प्रकाश। ११.प्रकाश का पुञ्ज १२जगादे १३.स्मृति के सहित। १४.अन्धेरे,अज्ञान। १५.तरफ। १६. पाओं रख दे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भय से हटा के ले चल[१७]बेख़ौफ़ि के शिखर पर ।
और तंग-[१८]राहे-इरफ़ाँ या रब्ब ![१९]कुशाद करदे ॥८॥
[२०]फ़ानी जहाँ है सारा क्या मांगूं तुझसे पूरण ।
इक चाह है दिल में तेरी बस आ के[२१]शाद करदे ॥९॥

१७.निर्भयता । १८ब्रह्मविद्या का रस्ता । १९खुला । २०मर्त्य २१प्रसन्न

नग़मये बेदारी=जागने का गीत

कर [१]तरक खुदी की आदत को, तू क़तरे से दरया बन जा ।
हो [२]माह् व ज़रा असलीयत में,और [३]ज़र्रे से [४]सहरा बनजा ॥
क्या [५]आहू है [६]सहराई तू, जो भूला है यूँ [७]नाफ़े को ।
क्यों जंगल में सिर पटके है, तू अपना ही [८]शैदा बन जा ॥
तू [९]अर्शोज़मीं का मालिक है, सब तेरे ही नौकर चाकर हैं ।
तू[१०]ज़ातमें अपनी जाग ज़रा,फिर[११]खादिमसे[१२]आकाबनजा ॥
तेरी ज़ात है[१३]अक्बर[१४]सग़ीर नबन,तू शाहिन्शा फ़क़ीर न बन
इसजिस्मके[१५]नाज़से[१६]हक़ीर न बन, तू[१७]हद्दसे गुज़र[१८]बेबहाबनजा ॥
[१९]ज़ुज़ तेरे न इसजा हाज़िर है, क्यों साये से अपने डरता है ।
तेरेडरसेहैं[२०]लरज़ाँ[२१]मेहरोमाहतू[२२]जाहिलनबन[२३]दाना बनजा
भरपूर है तुझ से जहाँ सारा, कर खुदी को अपनी पारा-पारा ।

१.त्याग । २.लीन । ३.अणु । ४.महान । ५.मृग । ६.जंगली । ७.कस्तूरी । ८.आशिक़, प्यार करनेवाला । ९.आकाश और पृथिवी । १०.स्वरूप । ११.सेवक । १२.स्वामी । १३.बड़ी । १४.छोटा । १५.अभिमान । १६. तुच्छ । १७. परिच्छिन्नता । १८. व्यापक । १९.सिवा । २०. कांपते । २१. सूरज और चान्द । २२. अज्ञानी । २३. स्याना, ज्ञानी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

होजिस्म से ख़ुदतू न्यारा न्यारा, अज़ाद २४फना से २५बका बनजा
उठ शरण में चल तू२६मुर्शिद की,तेरी ज़ात है पूरण२७इल्मी भी है
तेरी२८कुन से हुये हैं जहाँ पैदा,तू छोड़ खुदी फिर२९ख़ुदा बनजा

२४. नाश । २५. अविनाशी । २६. गुरुदेव । २७. ज्ञान स्वरूप ।
२८. संकल्प । २९. ब्रह्म स्वरूप ।

★ मनसूर ★

कह उठा १मनसूर २अनलहक्क जब कि वह लाचार था ।
क्यों न कहता कहने वाला खुद ही जब ३ग़फ़्फ़ार था ॥१॥
जब तलक उस में ख़ुदी थी ग़ैर भी मौजूद था ।
किस तरह कैहता अनजहक् कैहने से इनकार था ॥२॥
मिट गई अपनी खुदी जब ४ग़ैरेहक् सब जल गया ।
हक् ही हक् बाकी था उसको रूबरू दीदार था ॥३॥
इस कदर वह हक् से ५यक्जाँ हक् भी यूं यक जान था ।
६दार पर भी वह अनलहक् कह रहा ७बेदार था ॥४॥
हर घड़ी हर लह्ज़ा हरदम ८खुर्रमो—मसरूर था ।
सुनता वह ९नारा—अनलहक् दार से १०सरशार था ॥५॥
चढ़ के सूलीपर वह लोगों को यह साबित कर गया ।
जिस्म है ११फ़ानी मगर मनसूर खुद १२सत्तार था ॥६॥

१. एक ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष का नाम । २. मैं ब्रह्म हूँ । ३. परमात्मा ।
४. परमात्मा से भिन्न—द्वैत ५. अभेद । ६. सूली । ७. विना सूली के अथवा जागता हुआ । ८. अतिप्रसन्न । ९. मैं ब्रह्म हूँ का जयकारा ।
१०. मस्त । ११. नाशवान । १२. परमात्मा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इश्क की मनज़िल में [१३]आशिक एकदिन [१४]माशूक हो।
जिसतरह मनसूर पूरण हक़ हुआ हक़ यार था ॥७॥

१३. प्रेमी। १४. प्रियतम।

★ ढूंडना हो ढूंडलो ★

[१]इस्मोसूरत में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो।
सब की [२]तह में मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१॥
पत्ते पत्ते में भरा है दफ्तरे—[३]इरफां मिरा।
ज़र्रे ज़र्रे में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥२॥
ढूंडते [४]नाहक हो मुझको [५]दश्तो-जंगल में कहीं।
दिल के कोने में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥३॥
गर है सचमुच[६]जुस्तजू मेरी ही [७]बासिद्कोयकीं।
[८]कद्मे मुर्शिद में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥४॥
[९]हस्तिये बेजान हूँ मैं [१०]इल्म हूँ जांदार में।
जानो-बेजां में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥५॥
जानदारों में हूं मैं ही जिन्दगी बनके [११]अयां।
अक्लमें उनकी छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥५॥
[१२]वाज़े-दूरी करता है[१३]नाहक् तू मेरा[१४]ज़ाहिदा।
बाणी में तेरी छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥७॥
हिस्सोहरकत जिस्म में पैदा हुई है मुझसे ही।
बन [१५]मुहर्रक में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥८॥

१.नामरूप। २.अन्तस्तल। ३.ब्रह्मविद्या। ४. व्यर्थ। ५.वन ६ तलाश। ७.श्रद्धा विश्वाससे। ८.गुरुचरणों। ९.सत्ता। १०.ज्ञान। ११.प्रगट। १२.दूरपने का व्याख्यान। १३. वृथा। १४.द्वैतवादी १५चलानेवाला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ग़ौर से तुम मुझ को देखो आंख में और कान में।
[16]बासिरो [17]सामय बना हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥९॥

दिल में सब के सोचता हूँ खुद ही अपने[18]राज़ को।
जिस्मोजाँ में मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१०

छुप गया हूँ मैं*अजीज़म् इस[19]जहाँ में इस तरह।
गैहनों में सोना हो जैसे ढूंडना हो ढूंडलो ॥११

रौशनी हूँ मैं अन्धेरे में [20]फ़ना में हूँ [21]बका।
[22]ज़ेरे-बातिल हक्क छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१२

नाम मेरा है [23]सरूरो-इल्मो-हस्ति-[24]लाज़वाल।
दिल के आनन्द में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१३

[25]ज़ात मेरी है अनादि और अनन्त और[26]जाविदाँ।
सब में सब कुछ मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१४

प्रम की सूरत बना हूँ हर किसी दिल में ही मैं।
[27]हुस्न में भी मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१५

[28]नूर मेरा है [29]दरख़शाँ विज्ली-[30]अंजुम-आग में।
[31]मेह्‌रोमाह्‌ में मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१६

बन गया [32]बुतख़ाने में [33]माबूद [34]आबिद आप हूँ।

---

१६. देखने वाला। १७. सुनने वाला। १८. रहस्य। *प्यारे। १९. संसार। २०. मृत्यु। २१. अमृत। २२. झूठ के नीचे। २३. आनन्द और ज्ञान और सत्। २४. अच्युत। २५. सत्ता। २६. शाश्वत। २७. सुन्दरता। २८. प्रकाश। २९. चमक रहा। ३०. तारे ३१. तारे ३१. सूर्य और चन्द्रमा। ३२. मन्दिर। ३३. पूज्य। ३४. पूजक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

[35]संगेकाबा में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१७
[36]मस्तिये-[37]मयखार हूँ मैं[38]नीज[39]साकी हूँ बना।
[40]जामे-वह्दत में छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१८
[41]आरिफाने-हक्क में रौशन हूँ मैं[42]मानिन्द आफ़ताब
[43]जाहिलों में मैं छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥१९
हर जगह हर हाल में पूरण हूँ मैं [44]चूं-बूये-गुल।
[45]लफ़ज में [46]मानी छुपा हूँ ढूंडना हो ढूंडलो ॥२०

३५. मक्के की मस्जिद का पत्थर। ३६. अनुभूति। ३७. ज्ञानवान। ३८. भी ३९. गुरुदेव। ४० तत्त्वमसि महावाक्य। ४१ब्रह्मज्ञानी ४२. सूरज की न्याईं। ४३. अज्ञानियो। ४४. फूल में सुगन्धि की तरह। ४५. शब्द। ४६. अर्थ।

★ फर्याद=प्रार्थना ★

[1]मुसफ़्फ़ाहो गुनाहों से मेरा दिल ऐ मेरे ईश्वर(राम)(कृष्ण)(सतगुरु)
[2]मुनव्वर [3]नूरे-हक् से हो मेरा दिल ऐ मेरे ईश्वर ॥१
मेरी सुन[4]इल्तिजा खुद तू, खुदी को कर फ़नाह खुद तू।
तड़प मेरी मिटा खुद तू, तु खुद में ले मिला ईश्वर ॥२
कसूर अपने का [5]काइल हूं, तेरी बख़शिश का[6]साइल हूँ।
[7]हिजर तेरे से [8]घाइल हूं,[9]अता कर वह निगाह ईश्वर ॥३
तुझे [10]हरसू[11]अयाँ देखूं, न तुझ से कुछ[12]निहाँ देखूं।
तेरी सूरत जहाँ देखूं, सफ़ा कर दिल मेरा ईश्वर ॥४

१. सा.फ। २. प्रकाशित।३.ब्रह्म केप्रकाश। ४.प्रार्थना ५.माननेवाला ६. मांगने वाला। ७. विरह जुदाई। ८. पीड़ित। ९. प्रदान। १०. चारों तर.फ। ११. प्रगट। १२. छुपा हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तेरा [१३]दीदार हो हरजा, करूं सब में तेरा [१४]सजदा।
भुलाये ना तेरी माया, इसे खुद तू हटा ईश्वर ॥५

तूही हरजा नज़र आये, पता हर शै तेरा लाये।
जिधर मेरी निगाह् जाये, दिखाये आत्मा ईश्वर ॥६

फ़रज इक बन्दगी समझूं जिसम यह गन्दगी समझूं।
तुझी में ज़िन्दगी समझूं *दिलेदाना बना ईश्वर ॥७
फ़नाह से दिल हटा मेरा, बक़ा में दे जमा डेरा।
ख़तम हो तुझमें मैं मेरा, न बिगड़े कुछ तेरा ईश्वर ॥८
रहे बाकी न कुछ मुझ में, फ़नाह् हो मैं मेरा तुझमें।
[१५]बका समझूं सदा तुझ में,बना घर दिल मेरा ईश्वर ॥९
न तुझको मैं जुदा समझूं, हर इक शै में रमा समझूं।
तुझे पूरण सदा समझूं,[१६]अता कर यह निगाह् ईश्वर ॥१०

१३.दर्शन। १४.प्रणाम। *स्याना दिल। १५.सत्ता जीवन। १६.प्रदान।

★ श्री सन्त प्रेमसिंह जी की याद ★

ऐ प्रेम–मूरत अब फिर अवतार होके आजा।
उजड़े हुये [१]चमन में [२]गुलज़ार होके आजा ॥१

बीमार मुद्दतों से लाचार हो चुके हैं।
देकर [३]दवाये—वहदत अमृत पिलादे आजा ॥२
मुद्दत गुज़र चुकी है वेदान्त नहीं सुना है।
वसिष्ठ की सी मूरत फिर भी बना के आजा ॥३

१. बाग़ीचा। २. खिले हूये फूलों का बाग़। ३. अद्वैत की औषधि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सूरज विचार के तुम उपकार के ४फ़रिश्ते।
नानक गुरु का ५हुल्या फिर भी बतादे आजा ॥४

गङ्गा समान शीतल अमृत वचन थे तेरे।
वह प्रेम धारा पैहली फिर भी वहा दे आजा ॥५

थमता न आसूओं का जब रामनाम गाते।
रोना बिलक-बिलक कर फिर भी दिखादे आजा ॥६

वह अनन्य-रामभक्ति ६मानिन्द दास तुलसी।
सब राम दृष्टि करना फिर भी सिखा दे आजा ॥७

ढूंडा ७ज़माना सारा तुझ सा न कोई ८दरदी।
बिगड़ी-बनाने—वाले बिगड़ी बना दे आजा ॥८

खाली न कोई पूरन दर तेरे पर से लौटा।
९फ़र्याद १०दस्तबस्ता ऐ प्रेम—मूरत आजा ॥९

४ देवता। ५. रूप। ६. न्याई। ७. संसार। ८. पीड़ित की सहाय कदने वाला। ९.प्रार्थना १०.हाथ जोड़कर।

★ यादे हक्—प्रभु की याद ★

याद से परमात्मा की जो करे तुमको जुदा।
छोड़दे उसकी मुहब्बत दिल को मत उसमें फंसा ॥१

राम के ही प्यार में छोड़ा भरत ने मां का संग।
प्रह्लाद ने भी हक् की खातिर छोड़ा था सङ्ग बाप का

जान कर भक्ति में कांटा उस विभीषण भक्त ने।
कुम्भकरण रावण हकीकी भाइयों को भी छोड़ा था

२.चिमटा। ३.प्रार्थना। ४.दाना। ५.प्रतीक्षा करने वाले। ६.घबरा
७. दरवाज़ा। ८. पूछने वाला। ९. केवल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मान, इज़्ज़त, १ऐशोइशरत, घर, पति, मां, बाप को।
प्रेम की दीवानी मीराँ ने सभी कुछ त्यागा था ॥४

बिन प्रभु की याद के तो ज़हर खाना अच्छा है।
अमर होने के जो इच्छुक हक् से करते प्यार सदा ॥५

गर तु चाहे साफ़ करना दिल को अपने द्वैत से।
गुरुदेव की कर अनन्य-सेवा होगा फिर यह दिल सफ़ा ॥६

चरणों में गुरुदेव के तू धरदे २जिस्मोजानोदिल।
चमकेगा फिर खुद-बखुद आ दिल में ही ३नूरे-खुदा ॥७

"मैं" "मेरा" है मैल मन की अज्ञान से पैदा हुई।
ज्ञान से यह काट फंदा पायेगा ख़ुद को ख़ुदा ॥८

द्वैत की यह मैल बिल्कुल दिल से जब मिट जायेगी।
पाओगे कुल ४हक् ही हक् ५अर्ज़ोसमा में जाबजा ॥९

है ६सरूरो---इल्मो—हस्ती ७ज़ाते--हक् पूरण तू ही।
दीद को तेरी तरस्ते हैं ९मलाइक-१०मेहरो-माह ॥१

१.विषयसुख भोग। २.शीर और जीवत्व और मन। ३.परमात्मा का प्रकाश। ४. परमात्मा ही परमात्मा। ५. ज़मीन और आसमान। ६. आनन्द और चिद् और सत्। ७. ब्रह्म का स्वरूप। ८. दर्शन। ९.देवता। १०. सूरज और चन्द्रमा।

★ दस्तक=खटखटाहट ★

दिल के दरवाज़े पे इकदिन जाके पूछा कौन हो।
खटखटा १दस्तक़ लगाई खोल दे दर कौन हो ॥१

१. दरवाज़ा खटखटाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दर से फिर [२]चस्पाँ हुआ और ज़ोर से चीख़ा यूं मैं।
मैं न वापिस जाऊँगा ता तुम बता दो कौन हो ॥२
[३]अर्ज़ की है क्यों [४]सख़ी का बन्द दर मेरे लिये।
है सज़ा किस पाप की तुम यह बतादो कौन हो ॥३
जाने बिना हूं मैं तड़पता नीर बिन ज्यों मीन हो।
कह दिया लौटूंगा मैं तो पूछ के तुम कौन हो ॥४
कतरे बन बन इसलिये गिरते हैं आंसू प्रेम में।
[५]मुन्तज़िर हर आंसू है यह सुनने को तुम कौन हो ॥५
खुश्क हैं यह होंठ दोनों रङ्ग भी ख़्वाहे ज़र्द है।
होश पूरी है समझने के लिये तुम कौन हो ॥६
[६]तलमलाहट् से हुआ तय्यार जब [७]दर तोड़ने।
बोला अन्दर से वुही हूं जो है [८]पुरसाँ कौन हो ॥७
तुम हो अन्दर मैं हूं बाहिर किसतरह हम एक हैं।
बोला तमाशा है ख़ुदी को छोड़ देखो कौन हो ॥८
[९]महज़ ख़ुदी तेरी है परदा मेरे तेरे दरमियाँ।
छोड़ दोगे जब इसे फिर एक हम तुम कौन हो ॥९
कर ख़ुदी को तू न्योच्छावर नाम मेरे पर अज़ीज़।
देखना फिर बाहिर अन्दर एक चेतन कौन हो ॥१०

२. चिपटा। ३. प्रार्थना। ४. दाता ५. प्रतीक्षा करने वाले। ६. घबराहट ७. दरवाजा। ८. पूछने वाला। ९. केवल।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पूछा गर ऐसे ही था फिर पैहले कह सकते थे यूं।
बोला गर मैं कह भी देता तुम न समझो कौन हो ॥११

इस किसम की ही तड़प से दिल साफ तेरा हो गया।
झट समझ में आगया पूरण हूँ मैं तुम जौन हो ॥१२

★ अब्दी-सुख=शाश्वत सुख ★

जहां में ढूंडते सब हैं हमें हो १अब्दी-सुख हासिल।
मिलेगा यह वहां से ही जहां रहता है यह २कामिल ॥१

कभी ढूंडे यह औरत में कभी दौलत में इज्ज़त में।
कभी तारीफ़ में अपनी कि नेकी काहूँ मैं ३फ़ाइल ॥२

हकीकत में है सुख रहता प्रभु के चरण-कमलों में।
शरण में जो भी आ जाये उसे होगा जरूर हासिल ॥३

न्योच्छावर करदे सब कुछ ही बना रख्खा है जो अपना।
विना करने ४खुदी को भेंट खुशी अब्दी है*लाहासिल ॥४

५कलामे-आरिफ़ां है यह वुही इसजा रहेगा ख़ुश।
प्रभु की याद में हरदम रहे दिनरात जो ६शाग़िल ॥५

नहीं ७मनशा अलग करने का तुम को ८कारे-दुनिया से।
रखो दिल में प्रभुकी याद जिसम से ख़्वाह रहो शाग़िल ॥६

भले ही वोह रहे ९जाहिल निगाह में दुनियादारों की।
मगर दिलमें प्रभु की याद जिसे हरदम वोह है१०आकिल ॥७

---

१. हमेशा रहनेवाला। २. पूर्णरूप से। ३. करने वाला। ४. अभिमान *अप्राप्त। ५. ज्ञानवानों का कथन। ६.तत्पर ७.तात्पर्य। ८. दुनिया के कारोबार। ९. मूर्ख। १०. बुद्धिमान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

[११]सिदक दिल से सदा जपते रहो तुम नाम ईश्वर का।
बुलाने पर वोह आता है अगर हो तुममें [१२]दरदे-दिल ॥८
रहेगी हर घड़ी ठंडक [१३]सरूरे दिल न टूटेगा।
[१४]फ़नाह् से दिल हटा पूरण रहो [१५]हक् से सदा [१६]वासिल ॥

११. सच्चे। १२. दिल का दरद, तीव्रतम इच्छा। १३. चित्तका आनन्द। १४. नाशवान। १५. सद्वस्तुब्रह्म। १६. मिले हुये।

★ सकूने दिल = चित्त की स्थिरता ★

हर इक [१]फर्देबशर का है यह लक्ष होवे [२]सकूनेदिल।
कहीं [३]दाइम जिससे रहता [४]ब [५]लज्जाते-जहाँ [६]माइल ।१।
[७]करारे-दिल हकीकी गर तुम्हें दरकार है प्यारे।
उठो सत्सङ्ग में अपना करादो काम तुम दाखिल ।२।
बिलानागा हो हाज़िर वाँ रोज़ाना शौक से बैठो।
सुनो हर बात-[८]नासेह की समझकर [९]फज़्लेरब्ब [१०]नाज़िल ।
सुना है जो भी वाँ उसको कहीं एकान्त में जाकर।
पकाओ गौर से सोचो [११]शुनीदा के बनो [१२]आमिल ।
जचे जो बात है सच्ची मगर क्रिया में मुश्किल है।
करो सत् गुर से हल्ल फौरन न होना इसमें तुम गाफ़िल ।५।
[१३]खलूसे दिल [१४]अकीदत से [१५]अदब और [१६]इनकसारी से
जो चाहो पूछो सतगुर से हो आसाँ पल में हर मुश्किल ।

१. मनुष्यमात्र। २. चित्त की स्थिरता। ३. हमेशा। ४. साथ ५ संसार के विषयों का। ६. लिपटा हुआ। ७. चित की स्थिरता। ८. उपदेष्टा ९. ईश्वर कृपा। १०. उतरी हुई। ११ सुना हुआ। १२. क्रियाशील १३. शुद्धचित्त। १४. श्रद्धा। १५. आदर। १६. नम्रता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१७अमल हों नेक जब सारे १८मुताबिक१९हुक्म मुर्शिद के।
ढ़ो फिर २०दरसे वहदत तुम २१बफ़ज़ले मुर्शिदेकामिल ॥७

ज़र में आये जो कुछ भी फ़नाह् है सब न सत् समझो।
जिसकी २२दीद में सारे तुही है २३नूरे हक् फ़ाज़िल ॥८

मुनव्वर खुद बखुद सूरज २४जूं सबका ज़िन्दगी दाता।
वैसे तुम भी खुदरौशन२५बजुज़ इन२६जिस्मो जानोदिल।९

ही है २७ज़ातेनूरानी कि जिससे २८चश्मो-दिल रौशन।
२९शाहिद३०नूरे ज़िन्दा है पकड़ से सबकी ३१नाकाबिल।१०

बां मन दोनो ३२साक़िन हैं दिखाने में असल तेरी।
रो३३बरकतसे३४हरकत में हैं दोनो३५दरअसल३६बातिल।११

टालो दिल३७फ़नाह् से तुम करो३८हक् से इसे३९चस्पां।
म ही खुद४०बेह्रे आनन्द हो जहां पूरण तेरा४१साइल।१२

१७.कर्म। १८.अनुसार। १९.गुरु की आज्ञा। २०.अद्वैत का पाठ। २१.पूर्ण गुरु को कृपा से। २२.दृष्टि। २३.परमात्मा का उत्कृष्ट प्रकाश। *प्रकाशक। २४.जिस तरह। २५.बिना। २६.शरीर और चिदाभास और चित्त। २७.प्रकाशमान स्वरूप। २८.चक्षु और मन। २९.साक्षी। ३०.चैतन्य प्रकाश। ३१.अयोग्य। ३२.चुप। ३३.कृपा। ३४.क्रिया। ३५.वास्तव में। ३६.मिथ्या। ३७.नाश। ३८.सत्। ३९.जोड़ो। ४०.आनन्द के समुद्र। ४१.भिक्षार्थी।

★ जपा कर रटाकर ★

हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर।
महामन्त्र है यह जपा कर रटा कर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अगर है अज़ीज़म तुझे [१]तल्बे राहत।
तू चाहता है दिल से कटे [२]बेखे कुल्फ़त्॥
गुरुदेव कामिल की खिद्मत में जाकर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥२॥

जहाँ में तुझे आन मुश्किल बने जब।
मदद को मददगार लाचार हों सब॥
अकेले मुहब्बत में आसूं बहा कर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥३॥

मिटाने को [३]रंजो अलम है यह नुस्खा।
यह [४]हाज़िक हकीमों का है आज़मूदा॥
[५]मरीज़ाने मुद्दत हुये है [६]शफ़ातर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥४॥

मुख़ालिफ़ है दुनिया अगर तेरे सारी।
ज़मीं आसमां में न जा हो तुम्हारी॥
[७]सिदक दिल से[८]शीरींज़ुबाँ से यह गाकर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥५॥

जहाँ में हैं कहते तुझे गर [९]त्वंगर।
[१०]बफज़्ले खुदा ऐशो इशरत है[११]बरतर॥

१.आराम की इच्छा। २.दुःख की जड़। ३.शोक और चिन्ता। ४.पुराने। ५.पुराने बीमार। ६.स्वस्थ। ७.सच्चे दिल से। ८.मीठे स्वर। ९.अमीर। १०.ईश्वर कृपा से। ११.बहुत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तुझे [१२]तख़्तेताऊस गर है [१३]मुयस्सर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥६॥

[१४]अज़ीज़ो अक़ारब तेरे हैं [१५]मुअद्दब।
तेरे इक इशारे के हैं [१६]मुन्तज़िर सब॥
यह है जाल माया का ख़ुद को बचा कर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥७॥

वही हैं जो करते थे कल तुझसे परहेज़।
बुलाने पे भी भाग जाते थे तेज़॥
हैं अब तेरी [१७]ताबे तेरे पास हैं [१८]ज़र।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥८॥

तेरा एक साथी जो हरजा है [१९]राज़िक़।
उसे राम अल्लाह् कहो कृष्ण या रब्ब॥
वो रहता है पूरण तेरे दिल में हाज़िर।
हरि ॐ तत् सत् जपा कर रटा कर ॥९॥

१२.राजसिंहासन। १३. प्राप्त। १४.सम्बन्धी १५.इज्ज़त करने वाले। १६.प्रतीक्षा करने वाले। १७.आज्ञाकारी। १८.सोना, दौलत, सम्पत्ति। १९.पालन करता।

★ फर्याद=नम्र निवेदन ★

कृष्ण है ❀फ़रियाद मेरी यह तेरे दरबार में।
हर तरफ मैं तुझको देखूं दुनिया के बाजार में॥१॥
बिन तेरे हरगिज़ न देखे आंख मेरी ऐ प्रभु।

❀ प्रार्थना, पुकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

शेहर में बस्ती में हरजा १वादियेतातार में ॥२
चाँद में सूरज में रौशन २अर्श में ३जेरे जमीं।
हो ४अयाँ सूरत तेरी ही ५खेश में ६अग़ियार में ॥३
दिल में तेरी मोहनी मूरत बसे हर हाल ही।
ऐश में और रञ्ज में आराम में ७आज़ार में ॥४
८लुत्फे रूहानी से हो ९लबरेज मेरी जिन्दगी।
रौशनी तेरी अयाँ हो हर मेरे १०किरदार में ॥५
जिस्म मेरा हो ११मुबद्दल नाम तेरे में प्रभु।
गूंजे तेरा नाम हरदम हर रगो हर तार में ॥६
१२जाये-मस्कन होवे तेरा दिल मेरा ऐ साँवले
खुद तु ज़ाहिर हो मेरी हर चाल में १३गुफ़तार में ॥७
ऐ मेरे १४माबूद होवे सब मेरा तुझ में खतम्।
१५जाँ मेरी १६यकजाँ हो तेरी १७जाते—पायेदार में ॥८
इस तरह व्यापक हो जाऊँ मिलके तुमसे मैं प्रभु !
हो सुगन्धि व्याप्त जैसे सारे ही १८गुलज़ार में ॥९
मुझ को तेरा तुझ को मेरा १९रूबरू २०दीदार हो।
मस्त २१रोज़ोशब रहूँ पूरण तेरे दीदार में ॥१०

१.गहरे जंगल। २.आकाश। ३.पृथ्वी के नीचे। ४.प्रकट। ५.अपने
६.बेगाने। ७.दुःख। ८.आध्यात्मिक आनन्द। ९.भरपूर। १०.क्रिया
११.तबदील। १२.रहने की जगह १३.बातचीत। १४.उपास्यदेव
१५. जीवत्व। १६. अभेद। १७. नित्य स्वरूप। १८. बागीचा
१९.आमने-सामने। २०.दर्शन। २१.दिन रात।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ श्री कृष्ण भगवान् द्वारा कहे गये भक्त के लक्षण ★

वाणी उसकी होवे गदगद कण्ठ भी भर्राये है।
चित्त द्रवणशील निरन्तर जिस्म भी थर्राये है।
प्रेम में रोता कभी वोह हंसे और मुस्काये है।
लोक लज्जा त्याग कर नाचे कभी फिर गाये है ॥१॥
श्वास भरता ठंडे हरदम अश्रु का झरना बहे।
हिचिकयां रोमांच आहें चुटकी अपना धन कहे ॥
बेख़बर दुनिया से सारी बाखबर मुझ से रहे।
प्रेम में उन्मत्त हुआ दीवाना दुनिया सब कहे ॥२॥
ऐसे प्रेमी भक्त के ही दूर होवें रोग सब।
छोड़ जावें उसको चिन्ता ग़म फ़िकर और शोक सब।
चरणों में आकर गिरें ऐश्वर्य सिद्धि भोग सब।
दृष्टि और रज से पवित्र उसकी होवें लोग सब ॥३॥
ऐसा मेरा भक्त प्रेमी एक भी गर होये है।
मैल चौदह भवनों की वह चरण रज से धोये है।
चलता हूँ मैं उसके पीछे हर तरफ से जाये कर ॥
और होता हूँ पवित्र रजको उसकी पाये कर ॥४॥
हैं कठन साधन सभी पर भक्त कर दिखलाये है।
छोड़ कर सब धर्मों को मेरी शरण में आये है ॥
हर्ष में और शोक में भी मुझ को ही वोह ध्याये है।
दरजा वह प्रणिधान भक्ति वाला मुझ से पाये है ॥५॥
स्वर्णमल अग्नि से जैसे भस्म सब हो जाये है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अन्य धातु का निशाँ तक स्वर्ण से मिट जाये है ॥
ऐसे मेरा भक्त साधन से सफ़ा हो जाये है ।
हृदय में उस के मेरा आसन तभी लग जाये है ॥६॥
ज्यों ज्यों होवे दीप्त अग्नि मैल सब जल जाये है ।
शुद्ध वह निर्मल स्वर्ण कुन्दन तभी हो जाये है ॥
ऐसे मेरी भक्ति से जब भक्त शुद्ध हो जाये है ।
कर्म के बन्धन से छूटा मुझ में ही मिल जाये है ॥७॥
धन्य है वोह भक्त पूरण गर मिले इक वार भी ।
माल धन संपत्ति चौदह भवनों की दूँ मैं वार भी ॥
जिस्मोजां कुरबान करदूँ अपनी सौ सौ वार भी ।
चरण रज मस्तक लगाऊं जाऊं सद् बलिहार भी ॥८॥

★ भक्त और भगवान ★

[१]राज़ोन्याज़

उसने कहा तू कौन है, मैंने कहा [२]उल्फ़त तेरी ।
उसने कहा तकता है क्या, मैंने कहा सूरत तेरी ॥
उसने कहा क्या चाहिये, मैंने कहा [३]दर्दे जिगर ।
उसने कहा हो कब तलक, मैंने कहा हो [४]ता हशर ॥
उसने कहा क्या खायेगा, मैंने कहा [५]तीरे कज़ा ।
उसने कहा मर जायेगा, मैंने कहा झगड़ा चुका ॥
उसने कहा कुछ मांग ले, मैंने कहा [६]रैहमत तेरी ।

१.गुह्य बातचीत । २.प्रेम । ३.हृदय की पीड़ा । ४.प्रलय तक । ५.मृत्यु का तीर । ६.कृपा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उसने कहा होगा क्या, मैंने कहा ७शोहरत तेरी ॥
मैंने कहा रहते कहां हो, उसने कहा हरदिल में हूँ ॥
मैंने कहा देखा नहीं, उसने कहा किस्मत तेरी ।
मैंने कहा कुछ बदल दे, उसने कहा ८माजूर हूँ ॥
मैंने कहा कुछ थोड़ी सी, उसने कहा मजबूर हूँ ।
मैंने कहा९तदबीर कुछ, उसने कहा१०सजदा न्याज ॥
मैंने कहा ११दीदार होगा ? उसने कहा राजोन्याज ।
सर नविश्ते वायगूं रा रास्त में साज़द न्याज ॥
नक्शे माकूसे नगीं दर सजवा में गर्दद दुरूस्त ।

अर्थः—मस्तक के टेढ़ें लेख (दुष्ट प्रारब्ध) को ईश्वर की भक्ति अर्थात् भगवान् के आगे सिर झुकाने से सीधे हो जाते हैं जैसे अंगूठी में उल्टा लिखा हुआ नाम कागज़ पर झुक कर लगने से कागज़ पर सीधा पढ़ा जाता है। इसी तरह भक्त की दुष्ट प्रारब्ध भी ईश्वर शरण से श्रेष्ठ हो जाती है।

१२रास्त करती है १३इबादत टेढ़ी हो गर १४सरनविश्त ।
१५सजदे से है दुरुस्त होता नाम उल्टा दर १६नगीं ॥

७.शोभा। ८ क्षमार्थी। ९.उपाय। १०.झुकना (आत्म निवेदन भक्ति
११.दर्शन। १२.सीधा। १३.ईश्वरोपासना। १४.मस्तक को लिखावट
१५.झुकने। १६.अंगुठी से (लिखा हुआ)।

★ बना दे ★

ऐ प्रेम के दीवाने दीवाना ही बनादे।
ऐ इश्क के खज़ाने मस्ताना ही बनादे ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

[1]किब्रो [2]फरेब धोखा [3]कीना से [4]पुर है दुनिया ।
विहतर यही है इससे [5]बेगाना ही बना दे ॥२॥
मैदाने जंग में बख़्शा अर्जुन को [6]जामे-इरफाँ ।
मुरझाये दिल को मेरे मरदाना ही बना दे ॥३॥
है यूं तो सब से [7]अफ़ज़ल इनसानी जिस्म लेकिन ।
रौशन [8]शमा का अपनी [9]परवाना ही बनादे ॥४॥
तू [10]लाज़वालो [11]लाहद [12]इल्मोसरुरहस्ती ।
★ख़िरमन गुणों से अपने इक दाना ही बनादे ॥५॥
रौशन तू [13]मेहरो-माह में होता रहे भले ही ।
[14]तारीक दिल को मेरे [15]इरफाना ही बनादे ॥६॥
पीकर पिला के होंगे [16]मदहोश [17]रिन्दो [18]साक़ी ।
[19] वहदत की [20]मय का मुझको [21]पैमाना ही बनादे ॥७॥
[22]मसरुर और [23]मसरुफ़ [24]दाइम रहूँ मैं तुझमें ।
[25]फ़रहत खुशी का मुझको [26]काशाना ही बनादे ॥८॥
करते है [27]सिद्के-दिल से जो याद तेरी पूरण ।
कदमों का उनके मुझको [28] नज़राना ही बना दे ॥९॥

---

१. अहंकार । २. कपट ३. द्वेष । ४.भरीहुई । ५. पृथक ।
६.ब्रह्मविद्या । ७.श्रेष्ठ । ८.दीपक । ९.पतंगा । १०.अच्युत । ११.अनन्त
१२.ज्ञान और आनन्द और सत् । १३.सूर्यचन्द्र । १४.स्याह, अज्ञानयुक्त
१५.ब्रह्मज्ञान वाला ।१६.मस्त ।१७.सत्संगी ।१८.उपदेष्टा ।१९.अद्वैत ।
२०.शराब । २१.गिलास । २२. प्रसन्न । २३. लगारहना । २४.हमेशा
२५.ठंडक । २६.घर । २७.सच्चे दिल से । २८. भेंट । ★ढेर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

★ यादे सनम=प्रियतम की याद ★

मैं सब कुछ भूल जाता हूँ तुझे जब याद करता हूँ।
तेरी ही याद में प्यारे मैं [1]आहें सर्द भरता हूँ ॥१॥
सुना करते थे पहले हम बुझाता आग है पानी।
मगर झूठा [2]बयाँ पाया इसे [3]साबित मैं करता हूँ ॥२॥
जुदाई में तेरी प्यारे कई बरसों तलक रोया।
बहाये [*]अश्कों के दरया समुन्दर रोज़ भरता हूँ ॥३॥
[4]यकीं था आग दिलकी यह बुझायेंगे मेरे आँसू।
मगर उलटा है भड़काई बिना [5]दीदार जलता हूँ ॥४॥
[6]तबीबे मर्ज़े देरीना ने देखी जब नबज़ मेरी।
वह चिल्लाया लगाते हाथ कहा तुझ से मैं डरता हूँ ॥५॥
दिखाया हाथ का छाला कहा ऐ आग के [7]शोले।
[8]तन्नूरे इश्क है तू, मैं तेरी [9]आतिश से जलता हूँ ॥६॥
दवा है मर्ज़ तेरी का तुझे दीदारे [10]दिलवर हो।
किताबों में नहीं मेरी तभी इनकार करता हूँ ॥७॥
[11]सनम आओ न तड़पाओ खबर लीजे दवा दीजे।
[12]वगर्ना नाम तेरे पर खुदी [13]कुरबान करता हूँ ॥८॥
खुदी की बस रुकावट थी वह कुरबाँ की जु ंही पूरण।
[14]आशिकखुद[15]सनम निकला हकीकत[16]फ़ाश करता हूँ ।९।

१.ठंडे श्वास २.कथन। ३.सिद्ध। *आँसुओं। ४.विश्वास। ५.दर्शन। ६.पुरानी बीमारियों के वैद्य। ७.ज्वाला · ८.प्रेम का तन्दूर। ९.अग्नि १०.११.प्रियतम। १२.नहीं तो। १३.न्योछावर। १४.प्रेमी। १५.प्रियतम १६. प्रकट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

★ शुभ इच्छा ★

[१]दुशमने जानी को मेरे [२]नेकबख़्ती [३]यार हो।
[४]इज़्ज़तो हुरमत की उसकी [५]तेज़ोये रफ़्तार हो ॥१॥
गर मुझे [६]काफ़र कहे कोई कहो यह ठीक है।
[७]मोमनों के दरमियां में वह बड़ा [८]दींदार हो ॥२॥
गर मेरे रस्ते में कांटा बोवे कोई बोने दो।
उसके रस्ते में [९]इलाही कांटा हर [१०]गुलजार हो ॥३॥
जिसने खोदा मेरे राह में कुआं है गहरा [११]अमीक।
साफ उसकी राह में कुआं और [१२]ज़मीं [१३]हमवार हो ॥
जो कोई [१४] हासिद हुआ है मेरे [१५]जाहो हश्म का।
उसकी इज़्ज़तमाल दुनिया में [१६]बहक़् [१७]बिस्यार हो ॥५॥

---

१. जान का शत्रु। २. सौभाग्य। ३. सहायक। ४. आदर सत्कार ५.बढ़ता रहे। ६.नास्तिक। ७.आस्तिकों। ८.धार्मिक। ९.परमात्मा १०.बागीचा। ११.बहुत गहरा। १२.पृथ्वी। १३.समतल। १४.मत युक्त। १५.मान बड़ाई। १६.प्रभु की सौगन्द है। १७. बहुत।

❋विराट दर्शन❋

अजब रूप वैराट को देखता हूँ।
तेरा रूप अद्भुत प्रगट देखता हूँ ॥
तेरी देह में ऐ देव सभी देवता को।
सभी भूत जङ्गम स्थावर हवा को ॥
कहीं शिव जी ब्रह्मा कमलजा पिता को।
ऋषिदेव सर्पों को मैं देखता हूँ ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तेरे बाजू सिर भी हैं आंखें हजारों।
तू बेमाप तुझ में बसे शहर हज़ारों॥
न आद अन्त तेरा हैं पाओं हज़ारों॥
तुझे ख़ल्क * खालिक सभी देखता हूँ॥२॥

सजे ताज सिर पर गदा चक्र हाथों।
तू चैतन्य ज्योति चमकता[1] चमाचों॥
हज़ारों हैं सूरज चढ़े तर्फ चारों।
तुझे [2]बेमिसल मैं अजब देखता हूँ॥३॥

तू है एक अक्षर परम जानने योग।
तेरे आसरे हैं सभी भोक्ता भोग॥
तू है धर्म रक्षक हमेशा ही होग।
सनातन पुरुष मैं तुझे देखता हूँ॥४॥

शुरु तेरा आखिर न हर्गिज़ [3]मियाँ है।
तेरा ज़ोर बाज़ू! नहीं कुछ बयां है॥
तेरी [4]मेहरोमाह आँख अग्नि [5]दहां है।
जहां को तपाता तुझे देखता हूँ॥५॥

तेरा तेज फ़ैला ज़मी आस्मां में।
रखा डाल घेरा है तूने जहां में।
तेरा रूप अद्भुत न आवे बयां में।
तेरे भय से [6]लरज़ां जहां देखता हूँ॥६॥

यह सब देवता तुझ में प्रवेश करते।

---

*उत्पन्नकर्ता। १.अत्यन्त। २.सादृश्यरहित। ३.मध्य। ४. सूर्य चन्द्र
५. मुख। ६. कांपता हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कई हाथ जोड़े खड़े हैं वह डरते।
ऋषि सिद्ध सभी स्वस्ति को कहते ।।
स्तुति में तेरी सब जुड़े देखता हूँ ।।७।.
सभी रुद्र सूर्य वसु देवता सब।
सभी साध्य अश्वनी मरुत देवता सब ।।
असुर सिद्ध समूह यज्ञ गंधर्व भी सब।
तुम्हें देख विस्मय सभी देखता हूँ ।।८।।
महत् रूप तेरा है मुख आँख हजारों।
महाबाहो ! तेरे उरु पाद हजारों।
बहुत पेट ६खूंखार हैं डाढ़ें हजारों। ६. भयानक।
तेरे डर से सब को डरा देखता हूँ ।।९।।
तेरी रोशनी है स्वर्ग तक चमकती।
खुले मुख हैं आँखें जु बिजली दमकती।
तुझे देख बुद्धि मेरी भी है डरती।
न धीरज में अपने को मैं देखता हूँ ।।१०।।
तेरे मुख की डाढ़ें करालो महाँ हैं।
तेरी काल अग्नि से जलते जहाँ हैं।।
नहीं जानता हम खड़े भी कहाँ हैं।
प्रसन्न होवो आप अब यही चाहता हूँ ।।११।।
जो चचा के लड़के बड़े छोटे सारे।
सहित द्रोण भीष्म कृपा कर्ण सारे।।
अपने भी सेनापति हैं जो सारे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तेरे मुख में गिरते प्रकट देखता हूँ ॥१२॥

बड़े जोश से मुख में तेरे हैं जाते।
नहीं है पता वह कहाँ जा समाते।
तेरी डाढ़ों में कई लटकते हैं जाते।
कई सिर मैं चूरण हुये देखता हूँ ॥१३॥

बड़े जोर से जैसे नदियां [१]तमाम।
बह जाकर समुन्दर में लें [२]इख़तिताम॥
सभी योद्धा दुनिया के वैसे तमाम।
ग़रक तुझ में होते [३]अयाँ देखता हूँ ॥१४॥

जुं दीपक ज्वलित पर पतङ्गे फ़ना हों।
सहेड़े वह मौत अपनी फिर लापता हों।
वैसे ही सचमुच जहाँ कई हजारों।
भस्म अग्नि मुख में तेरे देखता हूँ ॥१५॥

कहाँ तक कहूँ तेरी महिमा महाँ है।
तेरी शक्लो सूरत यह सारा जहाँ है॥
तुझी से है ज़ाहिर तुझी में [४]निहाँ है।
तेरा रूप अद्भुत महाँ देखता हूँ ॥१६॥

तू हर शै में हर जा ही खुद रम रहा है।
सभी कुछ है तुझ में न तुझ से जुदा है॥
विना तेरे कुछ भी न पैदा हुआ है।
रूप तेरा अव्यय ❀ अयाँ देखता हूँ ॥१७॥

---

१. सम्पूर्ण। २. समाप्ति। ३. प्रकट। ४. छुपा हुआ। ❀प्रकट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तेरी ज़ात अद्वैत जहां में है रमती।
हर इक शै में इक जैसी न बढ़ती न कमती॥
जिधर देखूँ तुझ पर नज़र अब है जमती।
सभी कुछ मैं तुझको बना देखता हूँ॥ १८॥

खड़ा हूँ मैं तुझ में हुये हाथ जोड़े।
तुझी में है लश्कर मेरा रथ यह घोड़े॥
तुझी में है चौदह भवन फिरते दौड़े।
मैं गुम खुद को तुझ में अयाँ देखता हूँ॥१९॥

तू है एक पूरण शुरू से ही पूरण।
कहूँ कब से कहना नहीं बनता पूरण।
शुरू तेरा आखिर हो कैसे ऐ पूरण।
हर इकजा मैं पूरण तुझे देखता हूँ॥२०॥

★रामहृदय★

कहा राम ने था महाबीर को।
प्यारे हो समझे मुझ *आराम को॥ *आनन्द स्वरूप
हकीकत से मेरी क्या वाकिफ़ भी हो।
या राजा हि मुझको सिरफ़ जानते हो॥ १॥

सियारानी बैठी थी बायें तरफ वह।
वह जगतरूनी और जगमोहनी वह॥
यह गूढ़े वचन थी समझती सिरफ वह।
कहा राम ने इसको जो मैं हूँ बता दो॥२॥

विजय पाई हमने सिरफ इसके सदके।
इसी ने ही मारे थे रावण के लड़के॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यही लाया तुमको निशाचर से लड़के।
इसे "अपनी" "मेरी" हकीकत सुझा दो ॥३॥
मेरी सेवा से दिल को मुसफ्फ़ा किया है।
मानो मेरे निमित्त ही यह जीवन धरा है॥
हर इक काम दुर्गम भी पल में किया है।
इतनी मेहनत का अमृत मज़ा तुम चखादो ॥४॥
यह है खास प्यारा मेरा प्राण प्यारा।
हृदय चीर सबको था इसने दिखाया॥
वहाँ मैं भी तूभी था लक्षमण प्यारा।
ज़रा इसको लीला मेरी तुम सुनादो ॥५॥
जु आज्ञा को पाया प्रभु की सिया ने।
कहा ध्यान से सुन पवनसुत सयाने॥
न दुनिया में कोई प्रभु को जाने।
मैं शक्ति श्रीराम की तू समझ ले ॥६॥
जो है "राम" वास्तव में है *नूर के नूर।
वह चैतन्य ज्योति हैं केवल १सरूर।
वह आपा सभी के मगर दूर से दूर।
वह २रूहे रवाँ तू सभी की समझ लो ॥७॥
यह केवल असङ्गी न हैं कुछ खाते।
न पीते न लेते न देते न जाते॥
यह कूटस्थ नित हैं न कुछ खोते पाते।
मैं सब कुछ यह इन में दिखाती समझले ॥८॥

* प्रकाश। १. आनन्द। २. अनुस्यूत। आत्मा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहें 'राम जनमा की लीला बनों की'।
'वहाँ मार राक्षस जो राह लो घरों को'॥
'बने राजा यां और हुई ताज पोशी'।
यह करतूत मेरी सभी तू समझले ॥९॥
जरूरत मुझे इनकी वह १बेज़रूरत।
यह निर्मल बिना पाप पुण्य की २कदूरत॥
मैं चाहती हमेशा हूँ इनकी ३हजूरत।
विना इनके मैं हूँ *सिफर यह समझले।१०।
यह इक रस हमेशा ही सब में व्यापक।
न रखते हैं वाणी मगर सबमें ४नातिक॥
है इनका ही ज़ोर और यह इनकी ही ताकत।
है चक्कर में सारा जहाँ तू समझले।११।
न घट का ५खला जुं जुदा इस खला से।
यदि नाश घट हो तो उसकी बला से।
परिच्छिन्न था आकाश केवल वह घट से।
यूँ आकाश चेतन तू राम है समझले।१२।
यह मुझमें हैं तुझमें अनुस्यूत इक से।
हैं जाग्रत स्वपन में यही खेल करते॥
सुषुप्ति का यह ही पता सब को देते।
जो जीवन का दाता तू राम है समझले।१३।
यह साक्षी बुरे के भले के भी वैसे।

१. निरपेक्ष। २.मैल। ३समीपता। *अभाव ४.बोलने वाले ५.आकाश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

असङ्ग पाप पुण्य से हों दुःख सुख भी कैसे।
न प्रचण्ड सूरज में दिन रात जैसे।
जो केवल है अनुभव वही राम समझले ॥१४॥
यह चैतन्य ज्योति स्वप्रकाश विग्रह।
न हैं लेश दुःख का हैं आनन्द विग्रह।
तू ही राम सचमुच है सत्ता का विग्रह।
इनहें सच्चिदानन्द पूरण समझले ॥१५॥

❀ सांवला ❀

जिसका तू ही सांवले १दिलदार है।
दृष्टि में उसकी जहाँ गुलज़ार है।१।
है उसे २जाइज़ करे जो कुछ करे।
हर तरह उसको तुही ३दरकार है।२।
४लज़्ज़ते दुनिया में क्योंकर वह फंसे।
समझे दुनिया स्वप्न जो निस्सार है।३।
रात दिन तत्पर जो तेरी याद में।
५ऐसे दुनिया से हुआ *बेज़ार है।४।
किसकी ताकत है छुले उसको कोई।
हाँ बनाया जिसने छलिया यार है।५।

---

१. प्रियतम। २. योग्य। ३. अपेक्षित। ४. सांसारिक विषय सुख। ५. विषय सुख। *विरक्त।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिल में जिसके सांवली सूरत बसी।
उसको हर शै में तेरा दीदार है। ६।
पत्ते-पत्ते से मिले उसको पता।
दिल में जिसके तेरा ही बस प्यार है। ७।
सत्ता तेरी से हुए हैं सत् सभी।
वह यदि है फूल या वह [६]ख़ार है। ८।
नूर तेरे से चमकते [७]मेहरोमाह।
तू ही वायु पृथिवी जल और [८]नार है।९।
तू है पूरण इस जगह और उस जगह।
चक्षु दिल में सबके तू [९]बेदार है। १।

६. कांटा। ७. सूर्यचन्द्रमा। ८. अग्नि। ९. जागता।

❀ आत्म निवेदन ❀

आया था तेरी [१]दीद को [२]नादीद हो चला।
[३]चौखट तेरी को चूम के [४]शहीद हो चला।२।
[५]हुस्नो—जमाल सुन तेरा [६]शैदा हुआ था मैं।
अब नक्शेपा को देख [८]बेखरीद हो चला।२।
बाकी थी इक यह जाँ [९]फ़क़त [१०]कुरबान वह भी की।
[११]यकजान होके तुझसे [१२]बेवईद हो चला।३।

१. दर्शन। २. चर्मचक्षुरहित। ३. दहलीज। ४. अर्पित, न्योच्छावर। ५. सौन्दर्य। ६. प्रेमी। ७. चरण चिन्ह। ८. स्वत्व रहित। ९. केवल। १०. न्योच्छावर। ११. अभेद। १२. दूरी रहित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अफसोस नहीं कि जाँ मेरी *बेसूद ही गई। * व्यर्थ।
मनसूर दारा का मैं १३हमताईद हो चला।४।
१४रुतबा अजीब मिटने से मुझको हुआ १५नसीब।
१६शबनम् का एक कतरा १७चूँ १८खुरशीद हो चला।५।
मानिन्द एक १९रेजये नमक की मैं हुआ।
जो *बहरे बेकराँ से मिल २०तोहीद हो चला।६।
२१ज़ाहिद यह २२रमज़े-आरिफाँ तुझको कहाँ नसीब।
२३हूरों का तू २४फ़रेफ़ता २५मुरीद हो चला।७।
हर दो जहाँ की २६आरज़ू से २७पाक है जो दिल।
२८मौला की दीद में वह दिल २९मुफ़ीद हो चला।८।
पूरण की ३०बारगाह में पहुंचेगा वह जरूर।
हस्ती मिटाके अपनी जो शहीद हो चला।९।

१३. एक जैसा। १४. पद। १५. प्राप्त। १६. ओस। १७. जैसे।
१८. सूर्य। १९. टुकड़ा। *अनन्त समुद्र। २०. अभेद।
२१. द्वैतवादी। २२. ज्ञानवानों की गुह्य वार्ता। २३. अपसराओं।
२४. चाहने वाला। २५. सेवक। २६. इच्छा। २७. शुद्ध।
२८. परमात्मा। २९. लाभदायक। ३०. धाम, स्वरूप।

बयाने शहीद = आत्म-समर्पित का कथन

जहां के रञ्जोग़म से था मुझे तब आराम आया।
१तसव्वर में मेरे जब वह २बुतेमहशर ३खराम आया।१।

१. ख्याल। २. महाप्रलय में दर्शन देने वाला। ३. टहलता हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह छुटा ४हूरोगुल्मां के ५मकर के ६दाम से तब ही ।
जभी ७जाहिद के ८लब पर था भरा ९वहदत का १०जाम आया
कदम ११साक़ी पे जिसने ही मिटाई है खुदी अपनी ।
उसी की तू हर इक मुश्किल मिटाने को १२मदाम आया ।३।
खड़ा था १३मुन्तज़िर मैं भी १४दरे मकतल पे सब के साथ।
खुशी से खिलगया मेरे कतल का जब १५प्याम आया ।४।
नहीं फूला समाता हूँ मैं जामे में उसी दिन से ।
तेरी १६फ़ेहरिस्ते शुहदा में मेरा भी जब कि नाम आया ।५।
हुये हैं१७नारेशिरकत से वह जलकर सबही १८खाकिस्तर ।
बग़ल में देखकर मेरी वह पहले १९दिल आराम आया ।६।
२०वसल की २१पाकलज्ज़त से वही है २२बारयाब होता ।
गुज़र कर अपनी हस्ती से २३रहे मौला जो २४काम आया ।७।
हुआ २५रूपोश है २६दिलवर नज़र से सबकी ख़ाह पूरण ।
निगाह में मेरी हरजाही वह हाज़िर २७जेरोबाम आया ।८।

---

४. अप्सराओं । ५. छल, कपट । ६. जाल । ७. द्वैतवादी । ८. होंठ । ९. अद्वैत । १०. प्याला । ११. श्रीगुरुदेव । १२. सर्वदा । १३. प्रतीक्षा करने वाला । १४. कतलगाह का दरवाजा । १५. संदेश । १६. शहीदों की नामावली । १७. मात्सर्य की अग्नि । १८ राख । १९ प्रियतम ।२०. मिलाप । २१. पवित्र आनन्द । २२. लाभवाला । २३. परमात्मा के मार्ग में । २४. मिट गया । २५. आवृत्त । २६. प्रियतम । २७. नीचे ऊपर ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ कनह्या की याद ★

दिल में हो तेरी याद और १गोशये तनहाई हो।
फ़िर तो २ख़िलवत में भी खूब इक ३अञ्जुमन आराई हो।१
सौ साल फकीरी को करूँ यार मैं ४कुरवाँ।
उस ५लम्हे पे जब कि तेरी ६बग़लआराई हो।२।
आ ! कि इक मुद्दत से तेरी चाह दिल में लगी है।
उठ जाये ७परदये ज़ुलमत और दिल में रोशनाई हो।३।
भूल सकता नहीं वह ८ताउमर तेरी मोहनी मूरत।
शीशये दिल में जिसके तूने झलक दिखाई हो।४।
लायके ९दीदार वह हो नहीं सकता हरगिज।
जिसमें अपनी तो कुछ ज़र्रा भी १०खुदनुमाई हो।५।
कौन कर सकता है वींका इक बाल भी उसका।
जिसका ११मददगारे ग़ैबी खुद कृष्ण कन्हाई हो।६।
सुनता हूँ १२बग़लगीर किये रहते हो हमेशा।
१३अश्कों की १४गुहरमाला तुझे जिसने पहनाई हो।७।
यही १५दस्तेदुआ है तेरी सूरत ऐ पूरण।
आँखों में बसे हरदम और दिल में समाई हो॥८॥

---

१. एकान्त। २. एकान्त। ३. सभा। ४. न्योच्छावर। ५. क्षण। ६. मिलाप। ७. अन्धकार का परदा। ८. जीवन भर। ९. दर्शन के योग्य। १०. अहंभावना ११ अदृष्ट सहायक। १२. लिपटे हुये। १३. आंसुओं की मोतियों की माला। १४. मोतियों की माला। १५. प्रार्थना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कुर्बेहक़ = समाधि सुख

खुदा की याद में यकजाँ यह दिल जब यार होता है।
कहूँ क्या बस सरूरे हक़् का इक तूमार होता है।१।
[अर्थ–प्रभु की याद में तन्मय यह दिल जब यार होता है।
कहूँ क्या ब्रह्मसुख का यह बस इक भण्डार होता है।]
अनलहक़् इस्मे आज़म की हक़ीकत फ़ाश करता है।
सरूरे लातग़य्यर से यह दिल *सरशार होता है।२।
[अर्थ–अहंब्रह्म ओंके लक्षों का अनुभव ठीक करता है।
स्याही त्याग कर अपनी यह ब्रह्माकार होता है।
प्रभु के चरण कमलों के अलौकिक रस को पीता है।
अखण्डानन्द से उन्मत्त हुआ सरशार होता है।]
१मुसर्रत और खुशी का एक चश्मा बह निकलता है।
खिले अद्वैत के फूलों का बस इक गुलज़ार होता है।३।
न वाँ पर जिस्म रहता है न मन का ही निशाँ कोई।
न रहती है वहाँ आँखें मगर दीदार होता है।४।
महल शीशे का जैसे हो २मुनव्वर नूरे सूरज से।
यह दिल भी हूबहू वैसे *पुर अज़ अनवार होता है।५।
या जैसे लोहे का टुकड़ा दहकती आग में डालें।
*वह आतिश से हुआ यकजाँ सिरफ अङ्गार होता है।६।

१. आनन्द। २. प्रकाशित। *प्रकाश से भरपूर। * मस्त।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

युं दिल भी लाज़वाल हस्ती सरूरी-इल्म सें यकजाँ।
जिहालत दूर कर अपनी यह तब ३बेदार होता है।७।
[अर्थ-युं दिल भूमा अखण्डानन्द चिद्घन से हुआ तन्मय।
अनादि नीन्द से उठकर यह तब बेदार होता है।
भले ही गुङ्गा मिशरी के ४मज़े को कह नहीं सकता।
खुशी का उसके चेहरे से मगर ५अज़हार होता है।८।
६सरूरे कुर्देहक् सचमुच जिसे हासिल वही जाने।
इशारा बस तुसरंत का न वारा पार होता है।९।
[अर्थ-समाधि का अलौकिक सुख जिसे अनुभव वही जाने।
स्वरूपानन्द अब्धि का न वारा पार होता है।]
७फज़ल हो जिस पे मुरशिद का खुदी जिसने जला दी हो।
उसे ही हक्क् पूरण का बस दीदार होता है।१०।
[अर्थ-गुरुकृपा हुई जिस पर जलाया जिसने देहाभिमान।
उसे पूरण स्वरूप अपने का बस दीदार होता है]

३. जागता है। ४. स्वाद। ५. प्रगट। ६. ब्रह्माभिन्न सुख। ७. कृपा।

नये साल की मुबारक=स्वाराज्य बधाई

१खुदी को अपनी मिटाया जिसने, २नवीद उसको है साले नौकी।
हुआ है जिसको वसाले बारी, नवीद उसको है साले नौ की।१।
हुआ है जिसको वसाले वारी मनुष्य जीवन सफ़ल उसीका।
हुआ है जिसको वसाले बारी, उसी के पाओं आज़ादी चूमे।
हुआ है जिसको वसाले बारी, स्वराज्य की हैं बधाई उसको॥

१. देहाभिमान। २. बधाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहाँ है ताक़त जुबाँ में मेरी, बयाँ करे कुछ खुशी में उसकी।
जो ज़ाते हक् में हमेशा काइम नवीद उसको है साले नौ की।२
है ४जामेवहदत की ५दुर्द भर ही, खुशी जो दोनों जहाँ में फैली।
पिया है जिसने वह जाम भर-भर, नवीद उसको है साले नौ की।
वह ६जावदानी सरूरे यज़्दाँ,है ७इस्मो सूरत की तह में ८पिनहाँ।
९बफ़जले मुरशिद है जिसने पाया, नवीद उसको है साले नौ की।
है इस्मोसूरत यह दोनों *फानी, १०बका हकीकत में इल्मो हस्ती।
फना से जिसने हटाया दिलको, नवीद उसको है साले नौ की।
है इल्मोहस्ती ही ११ज़ाते यज़्दाँ,हैं उससे काइम यह नामो सूरत।
जो खुद में बाहिर भी देखे१२यक्साँ, नवीद उसको है साले नौ की।
न हाथ पाओं न जिस्म हड्डी, न १३चश्म गोशो जुबान हूँ मैं।
मैं जाते यज़्दाँ हूँ जिसने जाना, नवीद उसको है साले नौ की।७
मैं इल्मो हस्ती सरूरे १४वाहिद हमेशा यक्साँ १५बहालोमाज़ी।
१६मिसाल अपनी हूँ आप पूरण, नवीद मुझको है साले नौ की।
मिसाल अपनी हूँ आप पूरण, मनुष्य जीवन सफल है मेरा।
मिसाल अपनी हूँ आप पूरण, मेरे पाओं आज़ादी चूमें।
मिसाल अपनी हूँ आप पूरण, स्वाराज्य की है बधाई मुझको॥

---

३. सत्यस्वरूप, ब्रह्म । ४. अद्वैत का प्याला। ५.लेश। ६. ब्रह्म का नित्य सुख। ७. नाम रूप। ८. छुपा हुआ। ९. गुरुकृपा से । *नाशवान १०. अमर। ११. ब्रह्मस्वरूप। १२. एक जैसा। १३. चक्षु, कान, जिह्वा । १४. अद्वैत। १५. वर्तमान और भूत में। १६. दृष्टान्त।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

निराली शान—अद्भुत महिमा

शान दुनिया में तेरी सबसे निराली देखी ।
सारी ख़ल्कत ही तेरी दर पे स्वाली देखी ॥१॥
और जो देखा १फ़क़त २किबरो—दग़ा का बन्दा ।
ज़ात तेरी ही फ़क़त *ऐब से ख़ाली देखी ॥२॥
एक मुद्दत ही तुझे ३अर्शों में ढूँडा, आखिर ।
अपने दिल में ही तेरी ४सूरते आली देखी ॥३॥
५फ़ज़ले मुरशिद से हुई ६ज़ातेहक़्क़ीकी ज़ाहिर ।
७इस्मो सूरत में ही थी तूने छुपाली, देखी ॥४॥
८ज़ाते वाहिद है तेरी ९दर्दो १०फ़ना से ११बाला ।
*जिस्मे खाकी से खुदी जिसने उठा ली, देखी ॥५॥
गर्चे रौशन है तेरी ज़ाते नूरानी हरजा ।
इस्मो सूरत से नज़र जिसने हटाली, देखी ॥६॥
१२राजे-कोहना से तेरे खूब है वाकिफ १३आरिफ ।
शक्ल दुनिया की ही थी तूने बना ली, देखी ॥७॥
*इल्मोहस्ती है तेरी १४ज़ाते मुकद्दस पूरण ।
दिल में सूरत यह तेरी जिसने बिठाली देखी ॥

१.केवल । २. अहंकार और धोखा । *दोष । ३.आकाशों, (बाह्य) । ४.उत्कृष्ट मूर्ति । ५.गुरुकृपा । ६.सत्यस्वरूपता । ७.नामरूप । ८. अद्वैत स्वरूप । ९. पीड़ । १०. नाश । ११. ऊंची (रहित) । *शरीर । १२. गुप्त रहस्य । १३. ज्ञानवान । ★ज्ञान और सत । १४.शुद्ध स्वरूप ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

१दर्हकीकत सच्चिदानन्द २सिर्फ है ३हाजिर यहाँ।
भूल कर अपनी हकीकत को बना है ४जिस्मोजाँ ॥१॥
है यह सब परमात्मा वह खुद ५जहाँ सा बन गया।
भूला जब वह ६ज़ात अपनी जीव जैसा बन गया ॥२॥
जब यह जाने मैं हूं सब कुछ मुझ बिना कुछ भी नहीं।
वह है खुद परमात्मा उस के बिना कुछ भी नहीं ॥३॥
भूल है इक चीज़ ऐसी जिस से जानें और हूं।
होके खुद परमात्मा यह जीव जाने और हूँ ॥४॥
जो न जाने ठीक खुद को बल्कि जाने और कुछ।
भूल से ऐसा है होता खुद को जाने और कुछ ॥५॥
जिस तरह मशहूर क़िस्सा दस जुलाहों का हुआ।
अपने ही अज्ञान से वाँ दसवाँ जैसे गुम हुआ ॥६॥
दसवाँ था हर एक खुद ही नौ गिने जो भी गिने।
खुद को गिनना भूल कर अज्ञान से नौ हो गिनें ॥७॥
दस थे वाँ मौजूद पूरे ७हाजिरोनाज़िर खड़े।
अज्ञान से गुम था वह दसवाँ दुःख कई सहने पड़े ॥८॥
जूं ही सोचा गौर से पहचाना खुद को खिल गया।
भूल निकली गम ✲ गया वह मैं हूं दसवां मिल गया ॥९॥
हूबहू हालत यहाँ है गिनने वाला गुम हुआ।
जो करे पहचान अपनी पूरण वही ८बेगम हुआ ॥१०॥

---

१. वास्तव में। २. केवल। ३. विद्यमान ४. शरीर और जीव
५. संसार। ६. स्वरूप। ७. प्रत्यक्ष। ८. शोक रहित। ✲ शोक।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaor

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ दशम कथा ★

किस्सा यूं हैं दस जुलाहे घर से बाहिर थे गये।
रस्ते का *मृगवारि नाला पार कर कहने लगे ॥१॥
गिन के पूरे कर लो हम थे जितने भी घर से चले।
गुम न कोई हो गया हो दस थे हम घर से चले ॥२॥
एक जब गिनने लगा बस नौ पे गिनती खत्म थी।
बारी-बारी नौ गिनें सब नौ पर ल्याकत खत्म थीं ॥३॥
हो गया विश्वास सबको दसवां है गुम हो गया।
नाला था गहरा कहीं दसवां उसमें खो गया ॥४॥
दसवें की लाइल्मी ख़ुद दसवां ही कहने लगा।
है नहीं भासे कहां बस रोने चिल्लाने लगा ॥५॥
शोर जियादा मच गया वह पीटते रोते थे वां।
हाय अब दसवां कहां है सब कोई कहते थे वां ॥६॥
शोर सुन इक राहगुज़र ने पूछा रोने का सबब।
दस थे पहले अब तो नौ हैं यह है रोने का सबब ॥७॥
राहगुज़र दाना था दिल में सोच कर कहने लगा।
हैं दसों मौजूद फिर कुछ भूल है कहने लगा ॥८॥
दसवां है मौजूद यां ही घबराओ मत और रोवो मत।
वह मरा खोया नहीं है चीखो मत चिल्लाओ मत ॥९॥
जब सुनी आवाज़ ऐसी चुप हुये ससता गये।
है अगर दसवां यहां दिखलाओ वह कहने लगे ॥१०॥

---

* प्यासे हिरन को सूर्य धूप से चमकती रेत जल प्रतीत होती है वह मृगतृष्णा के जल से भरा नाला=मृगवारि नाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

राहगुज़र बोला हो कैसे नौ ज़रा समझाओ तुम।
एक का बाजू पकड़कर यूं कहा गिनवाओ तुम ।११।
वह लगा गिनवाने सबको एक दो यह तीन चार।
पांच छेह यह सात आठ और नौ की है पूरी कतार ।१२।
दूसरे फिर तीसरे ने बारी बारी सबने ही।
अपनी गिनती छोड़ कर सबने गिनती नौ कही ।१३।
राहगुज़र बोले वह सब से दसवां हर ख़ुद आप है।
हो गये आश्चर्य सुन के दसवां हर यक आप है ।१४।
राहगुज़र हैरानी उनकी देख बोला [1]पुरयक़ीं।
सच है मैंने जो कहा तुम सब करो इस पर [2]यक़ीं ।१५।
मिल के आपस में वह फिर [3]मशवरा करने गगे।
ऐसे [4]दाना से समझना चाहिये कहने लगे ।१६।
गरचे हम को है यक़ीं यह [5]इल्म इनका है दुरुस्त।
जब तलक हम ख़ुद न समझें किस तरह मानें दुरुस्त ।१७।
पाप है कहना बेसमझी से मैं दसवां आप हूँ।
इस लिए चाहिये समझना कैसे वह मैं आप हूं ।१८।
एक बाहिर उन से आया हाथ जोड़ यह [6]अर्ज़ की।
राहगुज़र के चरणों पर सिर रख के यूं थी अर्ज़ की ।१९।
आपके कहने से मुझको दसवें का है परोक्षज्ञान।
बख़शिश से मुझको करायें उसका ही अपरोक्षज्ञान ।२०।

---

१. विश्वास से पूर्ण। २. विश्वास। ३. विचार ४. बुद्धिमान।
५. ज्ञान। ६. प्रार्थना।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कृपा दृष्टि से थे बोले देवता वह राहगुज़र।
गिन ले वह तो नौ खड़े हैं तू है दसवां ऐ ७पिसर ।२१।
देख जब तू नौ को गिनता था न ख़ुद को गिनता था।
छोड़ कर तू आप खुद को सामने नौ गिनता था ।२२।
तू है उनका गिनने वाला बिल्कुल इलहदा दसवां है।
नौ भी तुमसे वह इलह्दा तू उनका साक्षी दसवां है ।२३।
दसवां खुद तू ८हैफ़ है यह तेरी ही लाइल्मी ने।
तेरी असलियत छुपा ली दुःख उठाये ग़म सहे ।२४।
दसवां गुम खोया नहीं है पहले था वह अब भी है।
खुद को पहचानो विचारो दसवां हाज़िर तू ही है ।२५।
सुनके उसने यह ९नसीहत ग़ौर से सोचा जभी।
खुद को दसवां पाया खुश था दूर था बस ग़म सभी ।२६।
फिर हुआ कुरबानो सदके राहगुज़र के कदमों पर।
प्रेम से आंसू बहाये दे दिया १०नज़राना सर ।२७।
साथ पूछा दसवां पाया ज़ख्म तो वैसे ही हैं।
हाथ पाओं छाती बाज़ू दुखते सब वैसे ही हैं ।२८।
राहगुज़र बोले है होता कर्म का क्षय भोग से।
ज्ञान करता दूर अज्ञान और खलासी शोक से ।२९।
कम ११तअल्लुक ज्ञान का प्रारब्ध कर्मों से है।
दसवें का होना जुदा सब जिस्म के धर्मों से है ।३०।
ज़ात से अपनी वह काइम पहले था वह अब भी है।
अज्ञान से ग़ायब सा था ज्ञान में वह अब भी है ।३१।

. पुत्र। पिसर। ८. शोक। ९. उपदेश। १०. भेंट ११. सम्बन्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वह तो थे इक राहगुज़र बस राह पे अपनी चल दिये।
इसने सब साथी जगाये अपने जैसे कर लिये।३२
मिलके सबने अपनी हालत को किया था यूँ *बयाँ।
गुजरे थे जिन२ मरहलों से करते थे ऐसे अयाँ।३३।
दसवां था वह गुम हुआ यह अपना ही "अज्ञान" था।
भासता दसवां नहीं वह है नहीं यह "आवर्ण" था।३४।
रोना था "विक्षेप" और वह है यहाँ था "परोक्षज्ञान"।
मैं हूँ दसवाँ ठीक जाना यह था बस "अपरोक्ष" ज्ञान।३५।
जब हुई पहचान अपनी खुश हुये यह "हर्ष" था।
ज्यों के त्यों कायम हुये यह "शोक का ही नाश" था।३६।
अज्ञान आवर्ण विक्षेप थीं यह बन्ध की ही हालतें।
परोक्ष और अपरोक्ष वाली मुक्ति की थीं हालतें।३७।
अज्ञान को थीं तीन पहली ज्ञान की हैं चार जो।
सब में दसवां ज्यों का त्यों बिल्कुल ज़रा बदला न वोह।३८
ज्ञान और अज्ञान दोनों दरहक़ीक़त मौहूमा थे।
दसवें को छूआ नहीं वह इसलिए मौहूमा थे।३९।
कुछ नहीं दसवें का बिगड़ा ज्यों का त्यों हाजिर रहा।
हूबहू दृष्टान्त इनका रस्सी में जैसे सांप था।४०।
थीं यह सचमुच गुमशुदा दसवें की सारी हालतें।
वहम से थीं मानो हमने अपनी सारी हालतें।४१।
गुम शुदा दसवां ही सचमुच हम में था इक कल्पना।
हालतोंका क्या ही कहना जब वह खुदही था इक कल्पना।४२।

---

* कथन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हम थे साक्षी गुमशुदा और उस की हर हालत के भी।
दुःख दरद ✡फहमीदगी और बाद की राहत के भी।४३।
पहली तीनों बन्ध हेतु दो थीं मुक्ति के लिए।
पिछली दोनों फलस्वरूपा आनन्द मनाने के लिए।४४।
गुम हुआ लाइल्मी थी फिर मिल गया यह इल्म था।
इल्म और लइल्मी का हर साक्षी केवल इल्म था।४५।
इल्म और लइल्मी दोनों ज्ञान अज्ञान की वृत्तियां।
दसवां साक्षी वृत्तियों का हम में नहीं हैं वृत्तियां।४६।
भूल से था गुम हुआ और ज्ञान से दसवां मिला।
दरअसल न वह गुम हुआ और न कोई दसवां मिला।४७।
पहले भी मौजूद दसवां अब भी हाज़िर है खड़ा।
बीच में भी था वह वैसा दसवें का दसवां रहा।४८।
ख़ूब था यह खेल अद्भुत गुम हुआ फिर मिल गया।
खुद थे भूले खुद को पाकर दिल सभों का खिल गया।४९।
दूर ग़म सबका हुआ। मसरूर वह पूरण हुये।
दसवां असली खुद को पाया दस के दस पूरण हुये।५०।

विदेह भाव

है समझा किसी ने यह क्या हो गया।
पतङ्गा १शमा पर २फिदा हो गया।
न समझो कि वह है ३फना हो गया।
वह मिल कर शमा से शमा हो गया।

✡ समझ। १. दीपक २. न्यौछावर ३. नाश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

४सतह पर समुन्दर के इक बुल्बुला ।
फिरे था वह दौड़ इधर से उधर जा ।
उठो लैह्‌र खुद में लिया जब मिला ।
वह झटति हि ५बह्‌रे बका हो गया ।२।

★कड़ा था वह सोने का इक जो पड़ा ।
बिलक्ता था रोता था मर जाऊँगा ।
थी ग़लती जो खुद को था समझा कड़ा ।
खुदी से वह खुद से जुदा हो गया ।३।

बुझाया किसी ने ज़रा ढूँड खुद को ।
हक़ीक़त से अपनी ज़रा ६आशना हो ।
खुदी छोड़ सूरत और नाम की जो ।
बुझाने की थी देर वह ७तिला हो गया ।४।

असल में वह सोने से कब था जुदा ।
कड़ा था हक़ीकत में ख़ालिस तिला ।
फ़क़त नाम सूरत में यूं था बन्धा ।
हटे नाम सूरत तिला हो गया ।५।

घड़ा एक मट्टी से जब ही बना ।
८ख़ला भी था उस में ९मुकय्यद हुआ ।
घड़ा बाद में जब १०शिकस्ता हुआ ।
ख़ला मिल ख़ला से ख़ला हो गया ।६।

रखा था आईना किसी शख़्स ने ।
लिया हाथ में और रखा सामने ।

४. ऊपर ऊपर । ५. नित्यता का समुद्र ★कङ्कण । ६. वाकिफ़
७. स्वर्ण । ८. आकाश । ९. अवच्छिन्न १०. टूट गया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिया धर न अक्स फिर रहा सामने।
वह मिल ११शख्स से अक्स शख्स हो गया ।।७।।
यूं जीते हुये जिस्मो दिल से मिला।
यह चेतन बना जिस्मो दिल सा रहा।
न दिल था यह चेतन न ही जिस्म था।
अलग था वह इनसे अलग हो गया ।।८।।
थे शीशे की मानिन्द यह जिस्म और दिल।
थे चेतन बने दोनों चेतन से मिल।
गया टूट शीशा तो चेतन निकल।
असल में था पूरण असल हो गया ।।९।।

प्रेम की महिमा

कृष्ण को जो घर बुलाये कौन है वह प्रेम है।
टेढ़ पन को जो गंवाये कौन है वह प्रेम है ।।१।।
खेल चौपट में थे वह १सरशार और सरमस्त जब।
चीर पल भर में बढ़ाये कौन है वह प्रेम है ।।२।।
प्रेम के दरबार में हैं २रङ्कों राजा एक से।
एक ही दो बन दिखाये कौन है वह प्रेम है ।।३।।
गर्चे है बिल्कुल असङ्ग और शुद्ध अपनी ज़ात से।
रास में नाचे नचाये कौन है वह प्रेम है ।।४।।
जब हुआ मैदाने जङ्ग में मोह अपने धर्म का।
ज्ञान गीता का सुनाये कौन है वह प्रेम है ।।५।।

११. बिम्ब। १. तन्मय। २. निर्धन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रेम ने ही धर लिया था रूप नन्हे नाई का।
चरणों को जो खुद दबाये कौन है वह प्रेम है।६।
आनन्द पूरण में मगन और स्वरूप से आज़ाद जो।
गोपियों को नाच दिखाये कौन है वह प्रेम है।७।
इन्द्र आदि देवता भी जिसके हैं २मातहत सब।
सारथी बन वह रथ चलाये कौन है वह प्रेम है।८।
लक्ष्मी का जो पति और स्वामी सब संसार का।
तन्दुलों को खुद चबाये कौन है वह प्रेम है।९।
अपनी आज़ादी का इच्छुक हर कोई दुनिया में है।
फंदा अपना खुद बनाये कौन है वह प्रेम है।१०।
प्रेम की राह में नहीं है जिस्मोजाँ का मोल कुछ।
सूलियों पर जो चढ़ाये कौन है वह प्रेम है।११।
याँ नहीं कोई किसी का दुःख उठाये क्यों कोई।
रो के खुद आंसू बहाये कौन है वह प्रेम है।१२।
प्रेम की महिमा कथन में आ नहीं सकती कभी
अंश से पूरण बनाये कौन है वह प्रेम है। १३

बुल्बुल !

अरी बुल्बुल ! तू इस गुल्शन में क्यों दिल को लगा बैठी।
न १गुल अपना न बाग़ अपना तू क्यों ☼दावा जमा बैठी।१।

---

२. अधीन १. फूल। ☼ममत्व।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नहीं मालूम क्या तुझको है धोखे का मकां सारा।
न तेरा है यहां कुछ भी जिसे अपना बना बैठी।२।
गुलों को देख कर ताज़ा न २इतरा इनकी३मजलिस से।
४तिलस्मी खेल है सारा तू मान इनको ५बका बैठी।३।
तुझे बच बच के चलना था बिछा है ६दामे-गुल हर जा।
इन्हें खुशरंगो खुशबूदार समझ खुद को फसा बैठी।४।
७बहारिस्तां में ताज़ा गो मगर जूंही ८खिज़ां होगी।
यह मुरझायेंगे सारे खाह् परों नीचे दबा बैठी।५।
है नक्शा ९ख़्वाब का सारा अजीजो १०अक़बा झूठे।
फना होंगे यह पल भर में तू असलीयत भुला बैठी।६।
हजारों ही तेरी जैसी पटकती सिर को देखी हैं।
वह मल मल हाथ रोती थीं तु क्यों यां घर बना बैठी।७।
सफ़ा कर दिल के दामन को गुलों के प्यार से बुलबुल।
इसे तू जोड़ हक्क से ही फना से क्यों लगा बैठी।७।
तू हट जा प्यारे-दुनिया से गुलों को देखकर मत भूल।
बसाना दिल में ११कादिर था तू १२कुद्रत को बसा बैठी।९।
सम्भल अब भी वक्त काफी सभी सामान है पूरण।
न पछताये कहीं पीछे १३उम्र यूंही गँवा बैठी।१०।

---

२. अभिमान कर। ३. संगति। ४. जादू का। ५. नित्य।
६. फूलों का ज़ाल। ७. वसन्त ऋतु। ८. हेमन्त। ९. स्वप्न।
१०. संबन्धी। ११. परमात्मा। १२.संसार। १३. आयु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किताबे ज़िन्दगी

सोच कर लिख ऐ बशर१ अपनी किताबे ज़िन्दगी।
क्योंकि देना होगा मालिक को हिसाबे ज़िन्दगी ॥१॥
देखना शैतां२ की जानिब३ न चले तेरा कदम।
क्योंकि है पेशे४ प्रभु होनी किताबे ज़िन्दगी ॥२॥
रायगां५ न वक्त खो तू आज कल करते हुये।
है खड़ी हरदम अजल६ सिर पर कसाबे७ ज़िन्दगी ॥३॥
ऐ ८सिरेमग़रूर ! किस पे हो रहा नाजां९ है तू।
जीस्त१० तेरी है जहां में इक हुबाबे११ ज़िन्दगी ॥४॥
यह जो हैं १२हमदम १३अकारब १४आशना १५मतलब के हैं।
हो मुसीबत पर न कोई हमरकाबे ज़िन्दगी ॥५॥
दस्तो१६पा गोशो चश्म भी छोड़ देवें साथ सब।
डूबने पर आता है जब यह १७आफ़ताबे ज़िन्दगी ॥६॥
नेक बन और नेकों से ही १८रिश्तये उल्फ़त बढ़ा।
नगमये१९वहदत सुना कर अज़ *रबाबे ज़िन्दगी ॥७॥
नक्शे दूई को मिटाकर वासले २०यज़दान हो।
बस यही सचमुच है पूरण लुब्लुबाबे२१ ज़िन्दगी ॥८॥

---

१. मनुष्य। २. पाप। ३. तरफ। ४. सामने। ५. व्यर्थ। ६. मृत्यु। ७. काटने वाला, कसाई। ८. अभिमानी। ९. अभिमान। १०. आयु। ११. बुद्बुदा। १२. साथी। १३. करीबी रिश्तेदार। १४. मित्र। १५. स्वार्थ। १६. हाथ, पाओं, कान, चक्षु। १७. सूर्य। १८. प्रेम का सम्बन्ध। १९. अद्वैत का राग। *जीवन की सारङ्गी से। २०. परमात्मा के साथ मिलने वाला। २१ निचोड़।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

❀ ढंडोरा ❀

ग़ाफिल न होना हक्क से मरदानगी[१] है यारो।
दुनिया से दिल लगाना दीवानगी[२] है यारो ॥१॥
हक्क से अगर करोगे पैवस्ता[३] दिल को अपने।
अर्शेबरीं❀ से बढ़ कर फ़रज़ानगी[४] है यारो ॥२॥
है महज़[५] यह जिहालत मानिन्द मगस[६] के मरना।
इश्केखुदा[६] में जलना परवानगी[८] है यारो ॥३॥
सब मालोज़र जभी तक यह जिस्मोजान दिल भी।
मुरशिद[७] के आगे रखना नज़रानगी[१०] है यारो ॥४॥
नक्शे जहाँ से ज़ाहिर नक्काश[११] का है होना।
मुनकिर खुदा से होना शैतानगी है यारो ॥५॥
है चश्मो दिल ज़बाँ में ज़ाहिर चमक खुदा की।
उसका नज़र न आना हैरानगी है यारो ॥६॥
जो ज़िन्दगी है सब की हाज़िर हमेशा हरजा।
उसको जुदा समझना बेगानगी है यारो ॥७॥
खुद बन गया है सब कुछ सब में है खुद समाया।
वाहिद[१२] में कुछ भी बनना दोगानगी है यारो ॥८॥
यह सब खुदा है पूरण सब वह है नीचे ऊपर।
वह्दत में गर्क होना यगानगी[१३] है यारो ॥९॥

१.बहादुरी। २. पागलपन। ३.जोड़ना। ❀ब्रह्मलोक। ४.बड़ाई। ५.केवल। ६.मक्खी। ७.प्रभु प्रेम। ८. पतङ्गपना। ९. गुरुदेव। १०. भेंट ११. तस्वीर बनाने वाला, चित्रकार। १२. अद्वैत। १३. ब्रह्मभाव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जीनये इरफ़ान=वेदान्त की सीढ़ी

बनाया जीवन है जिसने धार्मिक, धरम के बल से वह पार होगा,
यह दिल का शीशा है साफ़जिसका,वही तो लायकदीदार होगा।१
है १प्यारोनफ़रत ही मैल दिलकी, सफ़ा वह यादे प्रभु से होगी।
यह माला तस्बीह सफ़ल हैउसकी, प्रभुसेजिसका ही प्यार होगा।
है ऊँची मनज़िल प्रभु का पाना, दिखावे से है वह दूर कोसों।
मिलेगा उसको जो साफ दिल से, गुरुचरण में २निसार होगा।३
मिलें गुरु जब तो नम्रता से, यह उनसे पूछे 'कहां प्रभु हैं'।
'मैं कौन हूँ' 'यह जहान क्याहै''वह कौन इसका ३मेमार होगा।४
नज़र में आता है जो भी इसजा, फ़ना है सब कुछ बक़ा कहां है।
तलाशे हक्क में हैं छानेजङ्गल,कबहक्कामुझकोदीदार होगा।५
तड़प हो ऐसी ४वसालेरब्ब की,५खलूसेदिल हो यक़ीं भी पुख़्ता।
मिलेगी उसको दवाये७वहदत, जो इश्केहक्कका बीमार होगा।६
कमाल फ़ज़लो करम से सत्गुर, करेंगे बख़्शिश ८कलामे आज़म।
'वह तूहैजिसकी तलाश तुझको', यह सुनके पैदा विचार होगा।७
न मांस हड्डी न मैं लहू हूँ न कान चक्षु ज़ुबान हूँ मैं।
न मन न बुद्धि हूँ महज़ हस्ति,किजिसका सबको आधार होगा।८
ख्याल मेरे से दुनिया काइम, मैं ख़ुदको समझे था ख़्याल पहले।
मैं सबकाख़ालिकनदुन्या मुझमें, न उसका कोई९आसार होगा।९

१.रागद्वेष। २.न्योच्छावर। ३.बनाने वाला। ४.परमात्मा कामिलाप।
५.चित्तकी शुद्धि। ६.विश्वास। ७. अद्वैत। ८. महावाक्य। ९. लेश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

न स्थूल मैं हूँ न मैं हूँ सूक्ष्म, न कारण हूँ मैं हूँ सबका ज्ञाता।
जो जाना जाये वह दृश्य हैमेरा,मेराहीसबकोआधार होगा।१०
कहाँ है मुझ में यहजिस्म तीनों,मैं सबकाद्रष्टा हूँ साक्षी केवल।
मैं ज्ञानघन हूँ अनन्त व्यापक, न पार मेरा न वार होगा। ११
मैं"चश्म "गोशोजु़बानदिलमें,मैं१२मेहरो१३माहमेंहवा१४खला में
गरज़ किहरजा न मुझसेबाहिर,किसीकादम भरगुजारहोगा।१२
खुदी से गो था जुदा सा जा़हिर, मैं खुदहूँअस्लेखुदी भी सबकी।
जुदा हकी़क़त में मुझसेकोई,न बालभर का भी तार होगा।१३
१५वक्तेमुश्किलहूँकामआता,हरइकको धीरजकी बनके सूरत।
जोसच्चेदिलसेहोमेराआशिक़,वहपलमेंमुश्किलसे पारहोगा। १४
नहीं जहाँ में है कोई हरगिज़, जो जा़त मेरी का हो न तालिब।
मिलूँगा उसकोजोसच्चेदिलसे, गुरु चरण में निसार होगा।१५
मिटाई जिसनेखुदीहैअपनी,बनाया१६हक्क़को है अपना प्रियतम।
"मैं"जातेवाहिदहूँहरजा"उसको,यु चश्मेदिलसे दीदारहोगा।१६
मैं१९मह्ज़्२०इल्मों सरूरो हस्ती, बजुज़ न मेरे हुआ न होगा।
है महिमा अपनी मेंआपपूरण,नमुझमें इक दो शुमार होगा।१७

---

१०. आंख।११.कान। १२.सूर्य। १३.चन्द्रमा।१४.आकाश।१५.समय।
१६.ब्रह्म १७.अद्वैतस्वरूप।१८.बुद्धिकेनेत्र। १९.केवल।२०.सच्चिदानंद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

"तू ने"

बनाया खेल जादू का अजब या रब्ब जहाँ तू ने ।
जिसे समझा हमेशा था किया पल में निहाँ[१] तू ने ॥१॥
भले ही हो जहाँ फ़ानी मगर हक्क है तुझे समझा ।
हज़ारों नाम रूपों में किया खुद को अयाँ[२] तू ने ॥२॥
न होती गर खुदी हम में जो ही तू था वही हम थे ।
यह परदा किस लिये डाला है या रब्ब दर्मियाँ तू ने ॥३॥
नहीं मिलती है हस्ति कुछ खुदी के परदे की अपनी ।
झलक नूरानी से अपनी किया इसको अयाँ तू ने ॥४॥
जुंही परदा हुआ रौशन हुआ दीदार तेरा भी ।
वगर्ना लापता तू था छुपा रक्खा जहाँ तू ने ॥५॥
तुझे हर्गिज़ न ख्वाहिश थी ज़मीं[३] पर लोटने की यूँ ।
बनाया दीद[४] का रस्ता बराये[५] बेकसाँ[६] तू ने ॥६॥
मेरी हस्ति दरख्शाँ[७] हो इसी ही लक्ष को लेकर ।
हर इक दिल में बनाया घर है अपना लामकाँ[८] तू ने ॥७॥
बुझाया पीरेकामिल[९] ने वह तू है लमकाँ हस्ति ।
तू ही था नातिको[१०] सामे[११] दिया अपना बयाँ तू ने ॥८॥
हकीकत में नहीं कुछ भी बजुज़[१२] तेरे जहाँ पूरण ।
मचाया शोरोगुल सारा जहाँ में है मियाँ[१३] तू ने ॥९॥

---

१. छुपाया । २. प्रगट । ३. पृथिवी । ४. दर्शन । ५. वास्ते । ६. अल्पज्ञों । ७, प्रकाशित । ८. देश परिच्छेद रहित । ९. पूरे गुरुदेव । १०. बोलने वाला । ११. सुनने वाला । १२. विना । १३. स्वामी

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ज्ञानवान=आरिफ

ज़िन्दगी की ज़िन्दगी और जान की जान हूँ।
मम्बये हक्क हूँ अगर्चे सूरते इनसान हूँ ॥१॥
जुज़ सरूरो इल्मो हस्ति हक्क नहीं है और कुछ।
मैं सरूरो इल्मो हस्ति की भी [३]आला शान हूँ। २॥
है नहीं मुझ इल्मो हस्ती के सिवा कुछ भी जहाँ।
मेरा ही [४]मज़हर है सब कुछ मैं ही सब की तान हूँ ॥३॥
यह ग़लत है मैं [५]मुक़य्यद नाम में और रूप में।
मुझ से काइम नामो सूरत मैं ही उनकी जान हूँ ॥४॥
पैहन कर पौशाक यह इस नाम की और रूप की।
हर जगा हूँ सज्ज रहा मैं यह ही मेरी शान है ॥५॥
मुखतलिफ़ पोशाक से जो भेद ज़ाहिर हो रहा।
तह में सबकी मैं ही अपनी ज़ात से [७]ताबान हूँ ॥६॥
भूलना मत ज़ाहिरी पोशाक से मुझ [८]आब को।
ज़ाहिरो बातिन [९]हुबाबों की मैं ही असले जान हूँ ॥७॥
[१०]इख़तिलाफ़े ज़ाहिरी मुझ को न हर्गिज़ छू सके।
जेवरों में ज्यों तिला मैं एक ही [११]यज़दान हूँ ॥८॥
[१२]जल्वागर हूँ मैं [१३]बकसरत एन मानिन्द *ख़्वाब के।
[१४]अक्सी कसरत से [१५]मुनज़्ज़ा [१६]वाहिदुल्ईमान हूँ ॥९॥

---

१. स्रोत। २.सच्चिदानन्द के विना। ४. उत्तम। ४.प्रत्यक्ष करने वाला। ५.अवच्छिन्न। ६.स्वरूप। ७.प्रकाशमान ८.जल। ९.बुदबुदों। १०.भेद। ११.परमात्मा। १२.प्रगट हो रहा हूँ। १३.भेद सहित। १४. प्रतिबिंबित। १५. रहित १६. अद्वैत धर्म वाला। *स्वप्न।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दुनिया है १८मौजे लतीफ़ मुझ १८बहरेवह्दतमें अज़ीज़।
बुल्बुलों लहरों से ज़ाहिर १७बह्रे बेपायान हूँ ॥१०॥
२०मेह्रोमाह हैं नूर मेरे के कहीं २१अश्रे अशीर।
मुझ से ही२२गौहर यह निकले मैं ही इनकी२३कान हूँ ॥११॥
दिल में है २४मस्कन मेरा गो हर जगा पूरण हूँ मैं।
२५दीदवाले देखते २६वाँ २६मेह्र सा २८ताबान हूँ ॥१२॥

१७.सूक्ष्म लहर। १८.अद्वैत समुद्र। १९ सीमा रहित समुद्र।२०.सूर्य चन्द्रमा।२१.एक जौ का सौंवाँ भाग।२२.मोती। २३.खानि। २४ घर। २५.आंखों वाले। २६.हृदय में २७.सूर्य की तरह। २८. प्रकाशमान।

मसरूर=प्रसन्न

प्रभु की याद में १शाग़िल वही २मसरूर होता है।
मये तौहीद पी जिसने वही मख़मूर होता है ॥१॥
जिसे एकता हुई अनुभव वही मख़मूर होता है।
४हयाते चन्दरोज़ा में अकड़ मत ज़ोरोज़र पे तू।
सराये फ़ानी में रहकर तू क्यों मग़रूर होता है ॥२॥
जवानी में ५अदम के वास्ते सामान कर ग़ाफ़िल।
मुसाफ़िर ६शब को उठते हैं जो जाना दूर होता है ॥३॥
सिताती हैं जिसे ख्वाहिश कहाँ ७फ़रहत हैं उस दिल में।
समा जायें सभी जिसमें वह दिल ८पुरनूर होता है ॥४॥

१.जुड़ा हुआ। २. प्रसन्न। ३.मस्त। ४.जीवन। ५.परलोक। ६.रात्रि (काले बाल)। ७.ठंडक। ८.प्रकाश से भरा हुआ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

अमल कर नेक [10]बेख़्वाहिश प्रभु को याद कर हरदम।
[11]हवादिस् आज़माइश है तू क्यों [12]रञ्जूर होता है ॥५॥
प्रभु का [13]जलवा है सारा वह खुद बनकर यह आया है।
जलादी जिसने [14]ग़ैरीयत वह कब [15]मसहूर होता है ॥६॥
[16]ज़िकर हो उसका हर दम में फ़िकर भी हो उसी का ही।
[17]फ़ज़ल अपना वह करने पर तभी मजबूर होता है ॥७॥
मिटा दी है ख़ुदी जिसने *ब फ़ज़्ले-मुर्शिदे-कामिल।
अहंभाव जिसने छोड़ा है गुरु चरणों की कृपा से।
उसी का दर्दो ग़म पूरण यहाँ काफ़ूर होता है ॥८॥

९. कर्म। १०. निष्काम। ११. तकलीफें। १२. शोकवान। १३. विकास। १४. द्वैतभाव। १५ जादू के अधीन। १६. उच्चारण। १७. कृपा।
*गुरुदेव की कृपा से।

★ मुसाफिर ★

आया भी जो यहाँ पे वह आखिर चला गया।
दो चार दिन रह के मुसाफिर चला गया ॥१॥
जैसा अकेला आया था वैसा चला है एक।
[1]फर्ज़न्दोज़न के देखते मुसाफिर चला गया ॥२॥
धोखा फ़रेब [2]कीना से दौलत जमा जो की।
यूँही धरी रही थी मुसाफिर चला गया ॥३॥
चन्द ठीकरे थे चीथड़ों में बांध रख दिये।
गठड़ी बन्धी रही थी मुसाफिर चला गया ॥४॥

१. पुत्र-स्त्री। २. द्वेष।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बादा किया था हमसे तो मिलने का कल ज़रूर।
वह बात अड़ी रही थी मुसाफिर चला गया ॥५॥
बोई थी खेती इस लिये काटेंगे खुद फसल।
खेती खड़ी रही थी मुसाफिर चला गया ॥६॥
रखते ³निशस्त अपनी थे ⁴मिम्बर पे वह अलग।
चौकी पड़ी रही थी मुसाफिर चला गया ॥७॥
जीवन मिला था इस लिये कि यादे हक्क बने।
खोकर ⁵अबस यह ज़िन्दगी मुसाफिर चला गया ॥८॥
पूरण तू हक्क की याद में दो दिन गुज़ार ले।
⁶वादा निभा के अपना मुसाफिर चला गया ॥९॥

३. बैठक। ४. ऊंची जगह (थड़ा)। ५. व्यर्थ ६. इकरार।

मर्दे आरिफ़=ज्ञानवान

कहां भूला तू फिरता है तू क्या करता है¹तद्बीरें।
निगाहे ²मर्देआरिफ से बदल जाती है ³तक़्दीरें ॥१॥
यह वह ⁴मर्देखुदा हैं जिन के कदमों की ⁵कदम्बोसी।
करे जो ⁶सिदकेदिल से सब मुआफ़ हों उसकी ⁷तक्सीरें ॥२॥
हर इक ⁸रेशयोरग् से है ⁹अनलहक्क की ¹⁰सदा आती।
ख़ुदा में गुम किया खुद को ख़ुदी की काट जञ्जीरें ॥३॥
¹¹सरूरेहक्क से रहते हैं ¹²लबालब यह हमेशा ही।

१.युक्तियां। २. ब्रह्मज्ञानी। ३. प्रारब्ध। ४. प्रभुप्यारे। ५. चरण को चूमना। ६. सच्चा। ७. पाप, गलतियां। ८. नाड़ी नाड़ी। ९. मैं ब्रह्म हूं। १०. आवाज। ११. ब्रह्मानन्द १२. भरे हुये।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हैं[१३]शाहिद राम तीरथ और गुरु अर्जुन की [१४]तहरीरें ॥४॥
मरा जब शाह का बेटा वह लाये *पायेशमस में।
उठाया हुक्म अपने से अनलहक्क की थीं [१५]तासीरें ॥५॥
मिला है[१६]बाग़ेमुर्शिद से इन्हें[१७]वहदत का फल[१८]आला।
[१९]बसात अपनी हैं रखते क्या यह केला सेब अंजीरें ॥६॥
यह काइम [२०]ज़ातेहक्क में है फनाह को है फनाह् समझा।
भुला सक्तीं नहीं इनको लिखी काग़ज पे तस्वीरें ॥७॥
नहीं मौजूद यां कुछ भी न था पहले न फिर होगा।
सिवा हक्क़ के वह मैं खुद हूँ बसी दिल में यह [२१]तनवीरें ।८
हमेशा हक्क़ को देखें और सुनें हक्क़ को सुनायें हक्क।
[२२]शुआयें ज़ातेहक्क की हैं बहक कुल इनकी [२३]तकरीरें ॥९॥
मिले गर [२४]खाके पा इनकी लगाऊँ आँख में पूरण।
बनूँ [२५]बीना मैं[२६]नाबीना नहीं दर्कार[२७]इकसीरें ॥१०॥

१३.साक्षी। १४ लिखावटें। *शमपतन्नेजी के चरणों में। १५. अनुभूतियां। १६. गुरुदेवके बाग़। १७. अद्वैत। १८. उत्तम। १९. तुलना। २०. ब्रह्मस्वरूप। २१-२२. किरनें। २३. कथन। २४. चरणधूड़ी। २५. देखने वाला, सुजाखा। २६. अन्धा। २७. रसायण।

★ अस्बात मनफी=अन्वय व्यतिरेक ★

खुद से नावाकिफ़ की अपना [१]जिह्ल ही [२]कलपायेगा।
[३]ज़ात अपनी से जो वाकिफ वह हि यां [४]कल पायेगा ॥१॥
खुद को गर जाने कि मैं हूँ [५]हस्त्योइल्मो सरूर।

१.अज्ञान। २.दुःखी करेगा। ३.स्वरूप। ४.आराम। ५.सच्चिदानन्द।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

किसलिये वह किस की ख्वाहिश से जिस्म कल्पायेगा ॥२॥
मुरशिदेकामिल की खिद्मत् हो गई जिसको ६नसीब।
वह खलूसे दिल से खुद को सच्चिदानन्द पायेगा ॥३॥
दरहकीकत है यहाँ इक महज ७नूरेजावदाँ।
जिस्मोदिल से जब हो ८यक्जाँ भोक्ता कहलायेगा ॥४॥
९इस्मोसूरत से हो यक्जाँ जब वही १०लासानी नूर।
भोग्य होकर सूरते हरदो जहाँ बन जायेगा ॥५॥
भोग्य भोक्ता दो किसम में कुल जहाँ है ११मुन्कसिम्।
एक है १२जाँदार १३बेजाँ दूसरा कहलायेगा ॥६॥
जानो बेजाँ का जो १४शाहिद आत्मा शुद्ध ब्रह्म है।
उसमें जाँ बेजाँ नहीं आरिफ वह खुद को पायेगा ॥७॥
ख्वाब और बेदारी गहरी नींद तीनों हालतें।
जिस में है १५मफरूजा वह है आत्मा कहलायेगा ॥८॥
आनन्द और विज्ञानमय मन प्राणमय और अन्नमय।
पाँचों कोशों का हूँ द्रष्टा सच्चिदानन्द पायेगा ॥९॥
१६लामकानो१७लाज़माँ१८लाशय१९बरी२०हमजिन्स से।
२१ग़ैरो-२२ग़ैरीयत न मुझ में जानेजाँ कहलायगा ॥१०॥

६.प्राप्त। ७.अविनाशी प्रकाश। ८. अभेद। ९.नाम रूप। १०.अद्वैत।
११.विभक्त। १२. जङ्गम। १३. स्थावर। १४. साक्षी। १५. कल्पित।
१६. देश रहित। १७. काल रहित। १८. वस्तु रहित। १९. रहित।
२०. सजातीय। २१. द्वैत, विजातीय। २२. द्वैतपना।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कुछ नहीं मुझ से जुदा मैं सब में हूँ सब कुछ भी हूँ ।
जाने जो ऐसा[२३]मुबारिक ब्रह्मवित्त कहलायेगा ॥११॥
हो चुकी [२४]अस्वात [२५]मनफी से जिसे [२६]तशखीस यूँ ।
[२७]जाहिरोबातिन में पूरन हक्क हूँ खुद को पायेगा ॥१२॥

२३.पूज्य। २४.अन्वय। २५.व्यतिरेक। २६.विवेक। २७.बाहर भीतर।

मुहाफिज=रक्षक

कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पाछे लागो हरि फिरे कहत कबीर कबीर॥

खुदा खाना बदोशों की करे खुद [१]खानसामानी।
प्रभु सन्तों की भक्तों की करे हाथों से मेहमानी।
नई रोजी नई मन्जिल नया दाना नया पानी॥१॥
उसे ही है फ़िक्र अबतो इनहोंने जब फिक्र छोड़ा।
कहाँ इनको बिठाना है कहाँ से रोजी है लानी॥२॥
बनाये क्यों न खुद सामाँ किये हैं [२]जिस्मोजाँ [३]कुरबाँ।
वह पानी खुद भरे इनका भरे जिसका जहाँ पानी॥३॥
शुकर सद् सद् वह करता है मनाता लाख है खुशियाँ।
वह कर दीदार जीता है करे हाथों से मेहमानी॥४॥
जो पूछा क्यों उठाते हैं *तकालीफ़ इन की खातिर तुम।
[४]फ़ख़र से आप कहते हैं किया मुझ को है रब्बानी। ५॥
सिवा मेरे न समझें यह जहाँ में कोई बस्ता है।

१. रसोई पकाने और परोसने का काम। २. शरीर और जान (सर्वस्व)। ३. न्योछावर। ४. अभिमान। *कष्ट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिलों में गूंजता इन के ५अनलहक्क ६नाराइरफानी ॥६॥
यह देखा भी गया जिसको जो अपनी ज़िन्दगी सौंपे।
उठा कर खुद वह तक्लीफें उसे पहुँचाये आसानी ॥७॥
किसी ने एक दिन पूछा यह दरया से है क्या इनसाफ़।
डबोते लोहे को क्यों हो वज़न ख़्वाह रत्ती ७मीज़ानी ॥८॥
मगर शहतीर सौ मन से करो इतनी मुहब्बत तुम।
उठाये सिर पे फिरते हो है ज़ाहिर इस से नादानी ॥९॥
वह रत्ती भर वज़न लोहा डबोया उसको पल भर में।
यह सौ मन इसको तैराया अजब है ज़ोर हुकमरानी ॥१०॥
जवाबन् ठंडे दिल से यूं कहा दरया ने ८हक्क पर हूँ।
डबो दूं मैं अगर शहतीर मुझे ही शर्म है आनी ॥११॥
मेरा ही है यह ९पर्वरदा मुझी से ताज़ा रहता था।
विना मेरे यह सूखा है रखूं इस को १०बपेशानी ॥१२॥
यह है ११तमसील मेरी ही ख़ुदा ने आप १२फ़रमाया।
जुदा मुझसे नहीं ज्ञानी करूं अपनी निगाहबानी ॥१३॥
१३तअल्लुक् दीनो-दुनिया से है छोड़ा १४वीज़ १५उकबा से।
निगाह इकसीर है इनकी अजब है चाल मस्तानी ॥१४॥
मिले गर १६खाकेपा इनकी लगाऊँ आंख में पूरण।
न्योछावर जिस्मोजां करदूं मिले गर १७बन्दा रहमानी ॥१५॥

५.मैं ब्रह्म हूँ। ६.वेदान्त की ध्वनि । ७.तौल में। ८.सत्यता। ९.पाला हुआ। १०.मस्तक पर। ११.दार्ष्टान्त। १२.उच्चारण किया १३.सम्बन्ध १४. भी। १५. परलोक। १६. चरणधूड़ी। १७. परमात्मा का प्यारा।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

★ साधन ★

ध्वनि ॐकार की प्यारे अकेले में लगाया कर।
बहा कर प्रेम अश्रु को प्रभु अपना बुलाया कर ॥१॥
जलाना हो तो ख़्वाहिश को मिटाना हो तो क्रोध अपना।
गरीबों को कभी भी तू न दबाया कर सिताया कर ॥२॥
अकड़पन छोड़ सादा बन सरल कर वाणी मन दोनों।
श्री सत्गुरु के चरणों में सिर अपना तू झुकाया कर ॥३॥
विषय विष जान हैं सारे हैं बन्धु सब तेरे बन्धन।
कुसङ्गत त्याग कर सत्सङ्ग की गङ्गा में नहाया कर ॥४॥
जमा कर पद्म-सिद्ध आसन घड़ी, आधी घड़ी, घण्टा।
अनन्तर स्नान के मन में [1]प्रणवधारा बहाया कर ॥५॥
मिला है जिस्म का रथ यह जुते घोड़े [2]हवासों के।
लगा वैराग्य की चाबुक इन्हें सीधा चलाया कर ॥६॥
तेरा मन है लगाम इन की है बुद्धि सारथि रथ की।
सुरक्षित मार्ग वैदिक से परम् पद को पहुँचाया कर ॥७॥
श्री सत्गुरु की कृपा और वैराग्य अभ्यास पक्षों से।
बचा खुद को अगन सागर से सुख सागर ले जाया कर ।८
मिटाई थी [3]खुदी अपनी ज्यों स्वामी रामतीरथ ने।
अहं ब्रह्म वेद का डङ्का श्वासों से बजाया कर ॥९।
जनम कर ले सफल पूरण प्रभु हैं आत्मा तेरे।
श्री कैलाश के स्वामी की जय-जय-कार मनाया कर ।१०।

१.ॐकार का प्रवाह। २. इन्द्रियों के ३. अभिमान (देह अध्यास)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

फर्ज़ = कर्तव्य

भजन कर शम्भु का प्यारे अगर भवसिन्धु तरना है।
मनुष जीवन को पा करके यही कुछ तूने करना है ॥१॥
मिला अनमोल हैं जीवन वृथा मत खो तू विषयों में।
घड़ी दो चार है रहना जो आखिर सबने मरना है ॥२॥
वृथा अनमोल जीवन को है खोता झूठे-धन्दों में।
तुझे परलोक की खातिर भी कुछ प्रबन्ध करना है ॥३॥
हैं मरता जिन की खातिर तू रहेंगे देर कितनी यह।
न मरने के समय साथी अकेला तूने चलना है ॥४॥
सजाता जिस्म है हरदम नहीं यह साथ जायेगा।
यह है इक ढेर मिट्टी का चिता में इसने जलना हैं ॥५॥
तेरा मन ही चलेगा सङ्ग बदल दे इसके भावों को।
जनम लेता यही है और इसी ने ही तो मरना है ॥६॥
करम निष्काम कर सारे प्रभु से प्यार पैदा कर।
करो इच्छा से खाली मन शिवोहं इस में भरना है ॥७॥
जपोगे मन्त्र इसको जब निरिच्छत होके कुछ दिन भी।
प्रगट होगा वह आतम ज्ञान जो सुख का एक झरना है ।८।
तेरा है आतमा शुद्ध बुद्ध न जन्म उसमें न मृत्यु है।
है केवल सच्चिदानन्द-घन कराना कुछ न करना है ॥९॥
व्यापक एक अखण्डानन्द परिपूरण स्वाभाविक सत्।
तू है चैतन्य ज्योति रूप न मृत्यु, ताप, न डरना है ॥१०॥

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ॐश्री कृष्णॐ

बनसीवाले की जय जय मनालो, जीवन अपने को धन्य बना लो
जानो निश्चय यह सब कुछ वही है, परदा दूई का दिल से हटालो
उससे परतर यहाँ कुछ नहीं है, तागा माला का उसको बना लो
ज़ाहिर कृष्ण है चेतन में जड़ में, नामरूप का परदा उठा लो
मिलता दर्शन है उसका हर इक जा, हृदय अपने को दर्पणबनालो
है वह हाज़िर हर इक में हमेशा, बैठा हृदय में उसको बुला लो
सोचे दिल में वह बोले ज़ुबां से, देखे आंखों में आंखें मिला लो
चांद सूरज में चमके वह ख़ुद ही, आग तारों में रौशन हुआ लो
मिलनाचाहो तोउसको मिलो यूँ, हस्तिअपनीकोउसमें मिला लो
तूही तूही तुही तूही तूही, तूही तूही की रट को लगा लो
अश्रु प्रेम की धारा बहा कर, शीशादिल का तुमउज्ज्वल बना लो
नहीं दूर न हम से जुदा है, अपना आपा है दिल में बसा लो
पूरण तुमही हो कृष्ण-कनह्या, मुखड़ा अपने से उसका मिलालो

श्रद्धा पुष्पाञ्जलि

प्रातःस्मरणीय श्री पूज्यचरण सद्गुरु श्री स्वामी शिवरामजी सरस्वतीजी के पवित्र चरणकमलों में—

श्री स्वामी के चरणों में करें हम दण्डवत प्रणाम।
पड़े हैं चरणकमलों में करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१॥
कहां से शब्द लायें हम स्तुति में आप की भगवन्।
प्रभु! हो सच्चिदानन्द आप करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥२॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

सभी इतिहास पुराण और वेद गुरु महिमा को गाते हैं ।
कहें नेति वह आखिर में करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥३॥
कहां तक कह सकें महिमा बड़ाई आप की भगवन् ।
निधि हैं ज्ञान की सचमुच करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥४॥
गति भर्ता प्रभु साक्षी निवासः आप हैं स्वाभिन् ।
शरण में आपकी आये करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥५॥
पढ़ाया जो भी समझाया सुझाया आपने हमको ।
उसी में निष्ठा हो सब की करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥६॥
विवेकी सर्वदा हम हों हों तत्पर धर्म पर अपने ।
चलन निश्छल और शुद्ध हो करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥७॥
न समझें भेद ईश्वर में जगत् में आप में खुद में ।
अविद्या नाश हो सब की करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥८॥
प्रभु ! बाहिर में भीतर में हमारी तत्त्वदृष्टि हो ।
ज़ुबां दिल एक हों सब के करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥९॥
अठारह वर्ष इस भूमि को चरणों से पवित्र कर ।
सिमाये हो हर इक दिल में करें हम दण्डवत् प्रणाम ।१०।
हमेशा प्रार्थना मानी दिये दर्शन मेरे सत्गुर ।
करो स्वीकार अब भी अर्ज़ करें हम दण्डवत् प्रणाम ।११।
कहां ढूंडें पता सत्गुर या कनखल उत्तरकाशी में ।
पशुपतिनाथ बैठे हैं करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१२॥
हमारे प्रेम से ज़ियादा ही निकला प्रेम शङ्कर का ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaor

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हमेशा के लिये रखा करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१३॥
कहाँ तक हम करें महिमा बड़ाई आप की सत्गुर।
थे शङ्कर भी प्रतीक्षा में करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१४॥
यह इच्छा आपकी अपनी थी रहने की वहाँ पर ही।
सगुण से हो गये निर्गुण करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१५॥
थे निर्गुण आप पहले भी अधिक था लाभ सगुण से ही।
प्रचण्ड अग्नि सहायक ज्यों करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१६॥
उपाधि अल्प को छोड़ा हुये हैं आप अनन्त पूरण।
बने हैं आत्मा सब के करें हम दण्डवत् प्रणाम ॥१७॥

१००—तारीफ़=स्तुति

तारीफ़ तेरी में [१]हरफ़ सब [२]लाबयां रहे।
[३]आलिम जहाँ के गो तुझे गा [४]यक्ज़ुबां रहे ॥१॥
दरया को अपनी [५]मौज की [६]तुग़ियानियों से काम।
किश्ती किसी की पार हो या दरमियां रहे ॥२॥
किस की [७]मजाल है तेरा कुछ पार पा सके।
दिल में हर एक के ही तू ख़ाहे अयाँ रहे ॥३॥
देखा उसी ने आप को जो हो गया शहीद।
आंखों से सब जहान की ख़ाह तू निहां रहे ॥४॥
हस्ती-सरूरो-इल्म का तू इक [१०]तूमार है।
परदे में नाम-रूप के हरदम [११]दमाँ रहे ॥५॥

१. अक्षर २. अवाचक। ३. विद्वान्। ४. एक स्वर से। ५. लहर। ६. बाढ़ ७. समर्थ। ८. न्योच्छावर। ९. सत्, आनन्द और ज्ञान। १०. भण्डार ११. दीप्तिमान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रौशन जहाँ से हो रही है तेरी [12]ज़ाते-पाक ।
[13]नाअहल के ख़याल में खाह बेनिशाँ रहे ॥६॥
[14]महरूम ही रहेंगे वोह तेरे दीदार से ।
दिन रात खाने-सोने में जो हो [15]ग़ल्ताँ रहे ॥७॥
मुमकिन नहीं कभी भी तो उनको तेरा [16]वसाल ।
अपने से ग़ैर तुझको जो कर बयाँ रहे ॥८॥
मुझ से न हो सके ही तुम हरगिज़ कभी जुदा ।
मानिन्द लैह्र पानी के [17]रूहे रवाँ रहे ॥९॥
नामो निशाँ कमी का तो न नाम को रहे ।
जिस पर हो तेरी बख़शिश और तू मेह्रबाँ रहे ॥१०॥
[18]मुर्शिद की [19]नज़रे-मेह्र से वाकिफ़ तेरे हुये ।
भूले कभी न तू मुझे होता जहाँ रहे ॥११॥
मुर्शिद के [20]पाक कदमों पे सद-बार हूँ [21]फ़िदा ।
कृपा से जिनकी दिल में तू पूरण [22]चमाँ रहे ॥१२॥

---

१२. सत्ता । १३. अज्ञानी १४. वञ्चित । १५. लिपटे हुये । १६. मिलाप १७. अनुस्यूत । १८. श्रीगुरुदेव । १९. कृपा दृष्टि । २०. पवित्र चरण २१. न्योच्छावर । २२. खिला हुआ ।

मुहाफ़िज़ = रक्षक

[1]फ़ानूस बनके जिसकी हिफ़ाज़त हवा करे ।
वह कब बुझे [2]शमा जिसे रौशन ख़ुदा करे ॥१॥

---

१. ढकना । २. दीपक ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उसको न हो मनज़ूर तो क्यों कर [3]शफ़ा मिले।
लुकमान भी अगर वह ख़ुद आकर दवा करे ॥२॥
हरतौर से है जिनको तो उस पर [4]यकीनो-सिद्क।
उनको ही [5]ग़ैब से सदा मदद मिला करे ॥३॥
वह [6]लाज़वालो [7]बेकराँ-[8]हस्ती-सरूरो-इल्म।
उससे अलग न था न है न कुछ हुआ करे ॥४॥
यूँ सुन के उसकी ज़ात को आशिक हुआ शहीद।
[9]हस्ती मिटा के अपनी वह उसमें बसा करे ॥५॥
होगा कभी तो हम को भी तेरा [10]सनम [11]दीदार।
बैठे हैं तेरे [12]दर पे अब जो कुछ ख़ुदा करे ॥६॥
कदमों को सब के इस लिये फिरते हैं चूमते।
[13]वासिल किसी की [*]ख़ाकेपा [14]मौला [15]अता करे ॥७॥
है साफ़ शीशा दिलका जो दुनिया की [16]हिर्स से।
रख के उसे वह सामने [17]दीदे-ख़ुदा करे ॥८॥
[18]मुर्शिद के [19]फ़ज़्लो-कर्म से जिनकी हुई पहचान।
फिरता उनहें वह दायें-बायें पूरण मिला करे ॥९॥

---

३. आराम, स्वस्थता। ४. अटल विश्वास। ५. अदृष्ट। ६. अच्युत। ७. अनन्त। ८. सत्, आनन्द और ज्ञान। ९. सत्ता। १०. प्रियतम। ११. दर्शन। १२. दरवाज़ा। १३. परमेश्वर से मिला हुआ। *चरण धूली १४. परमात्मा १५. प्रदान। १६. लोभ। १७. परमात्मा का दर्शन। १८. गुरुदेव। १९. कृपा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

रूबरू होता

तेरा गर अपने सत्गुर की १हिदायत से २शुरू होता।
यक़ीनन् फिर बग़ल में आज तेरी वह ३खूबरू होता ॥१॥
कभी का मिल गया होता तुझे वह ४चश्मये-हस्ती।
अगर ५बेदार होकर तू ज़रा ६दर-जुस्तुजू होता।२॥
ख़ुदा को तू अन्धेरे में है ढूंडे आँखें बन्द करके।
मिले वह किस तरह क्यों कर तेरे वह रूबरू होता ॥३॥
तेरी आंखों को बन्द करके सुषुप्ति में मिले वह रोज़।
७खुली आँखों उजाले में मज़ा था ८दूबदू होता ॥४॥
९मुसफ़्फ़ा और १०बेहरकत् यह दिल का शीशा गर होता
वह तेरे रूबरू होता तू उसके रूबरू होता ॥५॥
बनाया ११आरज़ूओं ने है १२यज़दाँ से तुझे १३बन्दा।
ख़ुदा ख़ुद था अगर यह दिल तेरा १४बेआरज़ू होता ॥६॥
इन्हीं आंखों से हर शय में तुझे १५दीदारे-रब्ब होता।
बहाया याद में उसकी अगर इनसे लहू होता ॥७॥
जहाँ उसका निशां है यह अगर दिल में बिठा लेता।
तो १६रब्बुल आल्मी से फिर सदा दर१७गुफ़्तुगू होता।८॥

---

१. आज्ञा। २.आरम्भ। ३.प्रियतम। ४.सत्ता का स्रोत। ५.जागकर। ६. ढूंड में। ७. आनन्द। ८. आमने सामने। ९. शुद्ध। १०. विक्षेप रहित। ११. इच्छाओं। १२. परमात्मा। १३. जीव। १४. इच्छा रहित। १५. परमात्मदर्शन। १६. कुल जहानों के मालिक। १७. बातचीत।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तू आया काम जिसको गर मुकम्मल कर लिया होता ।
कभी मालिक के आगे फिर न शर्मिन्दा भी तू होता ॥९॥
तू है[१८]इनसान ज़ाहिर से मगर [१९]बातिन से[२०]ज़ातेपाक ।
हकीकत जानकर अपनी ख़ुदा से [२१]सुरखुरू होता ॥१०॥
[२२]फ़ज़ल मुर्शिद का हासिल कर कमाता गर[२३]सुखन पूरण ।
ख़ुदा फिर[२४]कूबकू मिलता वह मिलता[२५]सूबसू होता ॥११॥

---

१८. मनुष्य । १९. अन्दर । २०. शुद्ध सत्तामात्र । २१. कृतकृत्य ।
२२. अनुग्रह । २३. वचन । २४. गली गली । २५. हर तरफ़ ।

नज़दीकिये यार=प्रियतम की समीपता

(संगृहीत)

ज्ञानी से जाके कहदो सिर अपना वह खपायें ।
ध्यानी से जाके कहदो ध्यान उसका दिल में लायें ।
[१]सूफ़ी [२]मराक्बा में उस [३]बुत से [४]लिव लगायें ।
[५]हुजरे में दिल के कोई उस [६]माह-लक़ा को पायें ।
हम क्या कहें अज़ीज़ो और क्या तुम्हें बतायें ।
वह शोख़ फिर रहा है याँ अपने दायें बायें ॥१॥
पण्डित की पोथियों का वह [७]राजे-मख़फ़ी है ।
और आशिकों के दिल में उसकी [८]अदा खुभी है ।

---

१. ज्ञानयोगी । २. समाधि । ३. प्रियतम । ४. एकता की अनुभूति ।
५. मकान ६. चन्द्रमुख, परम प्रेमास्पद आनन्द स्वरूप । ७. छुपा हुआ रहस्य । ८. विशेष आकृति ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

वह [९]सिर्रे-मारिफ़त है वह [१०]ख़फ़ी-[११]जिली है।
अवतार है [१२]सनम है और वह ही ख़ुद [१३]वली है।
सुनने की गर हो ख़ाहिश आवो तुम्हें सुनायें।
वह शोख़ फिर रहा है याँ अपने दायें बायें ॥२

[१४]शम्सो-क़मर-सितारों में उसका ही नूर देखा।
दिल में [१५]सरूरे-मुतलिक उसका [१६]ज़हूर देखा।
देखा जहाँ पे हमने उसका ज़रूर देखा।
जो देखते नहीं है उनमें कसूर देखा।
गर देखना हो तुम को आवो तुम्हें दिखायें।
वह शोख़ फिर रहा है याँ अपने दाये बायें ॥३॥

[१७]नज़हत-कदा के [१८]आलम में वह ही [१९]फ़ज़ा बना है।
[२०]कुर्रा में वह हवा के शक्ले-हवा बना है।
[२१]वुसअत की [२२]रूह समझो वह ख़ुद [२३]ख़ला बना है।
ख़ुद आके इस जहाँ में सब का ख़ुदा बना है।
लखने की हो तमन्ना आवो तुम्हें लखायें।
वह शोख़ फिर रहा है याँ अपने दायें बायें ॥४॥

वह रूहे-जिन्दगी है [२४]इल्मो-सरूर है वह।

---

९. वेदान्त का रहस्य। १०. छुपा हुआ। ११. प्रकट। १२. प्रियतम १३. समर्थगुरु। १४. सूर्य और चन्द्रमा। १५. केवल आनन्द स्वरू १६. विकास। १७. लम्बा घास का मैदान। १८ हालत। १९. लम्बी हरयावली। २०. गोला। २१. चौड़ाई। २२. आत्मा। २३. आकाश २४. चैतन्य और आनन्द।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

नज़दीक सबके वह है और सबसे दूर है वह।
२५साबर का दिल बना है दिले २६नासबूर है वह।
२७माशूक की अदा में २८नाज़ो-गरूर है वह।
गर जानना होवे तुझको आवो तुम्हें जनायें।
वह शोख़ फिर रहा है यां अपने दायें बायें ॥५॥

२५. सन्तुष्ट। २६. अधीर। २७. प्रियतम। २८. नख़रा और अहंकार।

तेरी याद

मैं सब कुछ भूल जाता हूँ तुझे जब याद करता हूँ।
इसी से दिल की बस्ती को सदा आबाद करता हूँ ॥१॥
हुआ मालूम तेरी याद ही तुझ से मिलाती है।
तुझे मिलने की ख़ातिर ही मैं तुझको याद करता हूँ ॥२॥
नहीं मालूम क्यों अब तक नहीं पहुँची १फ़ुग़ाँ मेरी।
पिघल जाते हैं पत्थर भी मैं जब२फरियाद करता हूँ ॥३॥
कभी जब झंझटे-दुनिया निढाल आ दिल को करते हैं।
मैं तेरी याद से इसको३सनम! फिर शाद करता हूँ ॥४॥
तेरी है याद क्या कहने कोई जादू अचंभा है।
हज़ारों रञ्जोग़म इससे मैं ४बे-बुनियाद करता हूँ ॥५॥
जकड़ लेते हैं जब रंजो५अलम दिल को हर इक जानिब।
सनम! मैं याद तेरी से इसे आज़ाद करता हूँ ॥६॥

१. पुकार २. प्रार्थना। ३. प्रियतम। ४. जड़ रहित। ५. शोक।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

६मसर्रत और ख़ुशी-७फ़र्हत यह ठंडक और बेफ़िकरी।
है लौंडी-बांदियां इसकी तभी मैं याद करता हूँ ॥७॥

जहानों की ख़ुशी का तोल तेरी इस याद के आगे।
नहीं पासंग का पासंग भी तभी मैं याद करता हूँ ॥८॥

तेरी इस याद के ८कुरबाँ ९नज़र इस की करूँ क्या मैं।
हैं जिस्मो-जानो-दिलहाजिर मैं *नज़रे-याद करता हूँ ॥९॥

जो १०अहले-याद है पूरण वह रहते ११शाद हैं हरदम।
मैं१२हस्ति हूँ सरूरो-इल्म हो१३यकजाँ याद करता हूँ ॥१०॥

---

६. आनन्द। ७. ताजगी ८. न्योच्छावर। ९. भेंट। *स्मृति की भेंट।
१०. याद करने वाले लोग। ११. प्रसन्न। १२. सच्चिदानन्द।
१३. अभेद।

मयखाना का घूंट
सत्संग का अमृतपान

कभी १वहदत के२मयखाना में आ इक घूंट पिया होता।
यकीनन् ३दामे-हूरों से ऐ४ज़ाहिद ! छुट गया होता ॥१॥

५तलब अन्दर है दुनिया की है बाहिर से खुदा की याद।
खुदा हाज़िर तुझे मिलता यह दिल गर६बेरिया होता ॥२॥

तू होता आशके ७सादिक़ तो इक ही ८नीम-शब९आह से।

---

१. अद्वैत २. सत्सङ्ग ३. अपसराओं के जाल(विषय भोग)४. द्वैतवादी
५. इच्छा। ६. निष्कपट। ७. सच्चा। ८. आधीरात। ९.ठंडा श्वास।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ख़ुदा ने जागकर तुझको बग़ल में ले लिया होता ॥३॥
ख़ुदा से एक दिन पूछा किसी आशिक़-[१०]कलंदर ने।
न होते गर तेरे आशिक़ तेरा फिर हाल क्या होता ॥४॥
ख़ुदा बोला मैं ज़िन्दा हूँ इक [११]आहे-सर्दे-आशिक़ से।
गरम-झोंकों से जाहिल के कभी का जल गया होता ॥५॥
यह चक्कर आने-जाने के ख़तम ही हो गये होते।
[*]तवाफ़े-गिर्दे मयख़ाना ऐ जाहिद ! गर किया होता ॥६॥
यह खुलता [१२]रोजे-रौशन की तरह [१३]राज़े-हक़ीक़त गर।
ख़ुदी का काट सिर कदमों में [१४]साक़ी के दिया होता ॥७॥
[१५]नक़ूशे-ग़ैर मिट जाते तेरे इस दिल की तख़्ती से।
अगर मुर्शिद से इक बारी [१६]दरस-तौहीद लिया होता ॥८॥
तुझे [१७]लाफ़ानी औ [१८]लाहद्-हक़ीक़ी-ज़िन्दगी मिलती।
अगर [१९]मौहूमा-जीवन से तू मर के फिर जिया होता ॥९॥
ख़ुदी इस जिस्म से मिटती ख़ुदा से एक हो जाते।
[२०]इलम-इर्फ़ान मुर्शिद से अगर हासिल किया होता ॥१०॥
तू जीतेजी आज़ाद होता जिसम की क़ैद से पूरण।
हक़ीक़त अपनीसे दिल को अगर [२१]आगाह किया होता ॥११॥

---

१०. विरक्त। ११. ठंडा श्वास। *प्रदक्षिणा १२. प्रकाशमय दिन। १३. सच्चाई का रहस्य। १४. श्री गुरुदेव। १५. द्वैत संस्कार। १६. अद्वैत का उपदेश। १७. अविनाशी। १८. अनन्त। १९. भ्रम से उत्पन्न हुआ (अध्यास)। २०. ब्रह्मविद्या। २१. वाकिफ, जानकार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सोना और जागना

अहङ्कारो धियं ब्रूते मा सुप्तं प्रतिबोधय।
उत्थिते परमानन्दे नाहं न त्वं नेदं जगत् ॥
अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः प्रबुध्यते।
अजमनिद्रमस्वप्नमद्वैतं बुध्यते तदा ॥ मां॰ का॰

१अक्ल से इक दिन कहा २ख़ुदी ने।
जगा न ३रूह को यह अगर जागा।
न मैं रहूँगा न तू रहेगी।
न मेरा तेरा जगत् रहेगा ॥१॥

★मजे जहाँ में हैं लूटते हम।
है इसके सोने तलक ही सारे।
मुझे ४अजल सी नज़र है आती।
ज़रा सी करवट है जब बदलता ॥२॥

है माला अपनी घुमाता जब यह।
यही है करवट बदलना इसका।
मुझे ज़हरीला है साँप लगता।
कि बस मुझे अब यह डस ही लेगा ॥३॥

लगा के पहरा हर इक तरफ़ से।
ज़रा भी खटका न कोई पहुँचे।

१.बुद्धि। २.अहंकार। ★विषयभोग का सुख। ३.आत्मा। ४. मृत्यु।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हमारी ५मेहनत सफल तभी है।
थपक-थपक कर इसे सुलाना ॥४॥

सुरीले-गाने इसे सुनाना।
खिलाना मीठे-सलूने-खाने।
अजब-अजाइब और ख़ूबसूरत।
रंग नजारे इसे दिखाना ॥५॥

इतर-फुलेल और तेल-ख़ुशबू।
गुलाब गेंदा और फूलमाला।
आराम-कुर्सी व कौच-मख़मल।
नरम गदेले ६बहम पहुँचाना ॥६॥

कभी हो चिन्ता कभी उदासी।
कभी ख़ुशी हो कभी ग़मी भी।
या और धन्दों में इसको हरदम।
लगाये रखना है काम अपना ॥७॥

अकल ख़ुदी ने बस एक मुद्दत।
था रूह को ऐसे सुलाये रखा।
अकड़-अकड़ कर था पाओं रखता।
ख़ुशी से फूला न वह समाता ॥८॥

इसी तरह रुह वह सोया-सोया।
७फर्ज़न्दोज़न में था ऐश लेता।

५. परिश्रम। ६. साथ। ७. पुत्र स्त्री।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मरा जो बच्चा, दुखी हुआ वह ।
था सिर को धुन-धुन के खूब रोता ।।९।।

वह सिर को हाथों से पीटता था ।
जहाँ भी जाता बिलकता रोता ।
ज़रा सा कोई जो नाम लेता ।
बिलक-बिलक कर था रोने लगता ।।१०।।

कहाँ तू प्रियतम ? कहाँ तू होगा ?
गुज़र न होगी बग़ैर तेरे ।
मुझे भी अपने ही साथ लेकर ।
अगर तू जाता तो [8]बेहतर होता ।।११।।

कहाँ गया तू किधर तू होगा ।
यह मौत क्या हैं जो ले गई हैं ।
है कोई ऐसा जो फिर मिलादे ।
हक़ीक़त इसकी मुझे बताता ।।१२।।

बहुत दिनों तक रहा [9]आज़ुरदा ।
तड़प था उठता जब याद आती ।
मिले वह जिससे उसी से पूछे ।
वह कौन है जो चला है जाता ।।१३।।

अचानक इक दिन कथा में पहुँचा ।
वहाँ था जारी [10]कलामे-आज़म ।

---

८. अच्छा । ९. शोकवान् । १०.महावाक्य(का व्याख्यान हो रहा था)

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

है रूह यह ११इल्मो-सरूर-हस्ती ।
न पैदा होता नहीं है मरता ॥१४॥

हक़ीकत अपनी न जान रूह यह ।
है जिस्मो दिल से हुआ जो यकजाँ ।
है पैदा अपनी को मानता यह ।
इसी से फिर-फिर है माने मरता ॥१५॥

ग़ज़ब यही है न पैदा होकर ।
है जाने खुद को हुआ हूँ पैदा ।
है मौत को भी तो मौत इससे ।
मगर यह माने कि मैं हूँ मरता ॥१६॥

जो जन्म-मृत्यु का साक्षी होवे ।
वह पैदा कैसे मरे भी क्योंकर ।
अगर यह सचमुच ही पैदा होता ।
तो इक दिन आखिर जरूर मरता ॥१७॥

मगर न रूह ने है मौत अपनी ।
कभी भी देखी रहा यह इक रस ।
न बदला कुछ भी ज़रा सा इसका ।
अगर्चे जिस्मों को देखा मरता ॥१८॥

अजर अमर है न भूखा प्यासा ।
सुखी नहीं फिर दुखी कहाँ है ।

११. चैतन्य, आनन्द और सत् । १२. अभेद ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हमेशा इकरस समाया सब में।
न पैदा इसकी नहीं है मरता ॥१६॥

घड़ा हो जैसे १३ख़ला में पैदा।
वह पैदा होते ख़ला को घेरे।
है उसके अन्दर ख़ला ही जितना।
वह इतना जाने कि मैं हूं इतना ॥२०॥

घड़ा जो टूटा हुआ वह ठीकर।
ख़ला भी जाकर मिला ख़ला से।
है केवल ऐसा प्रतीत होता।
ख़ला ख़ला से जुदा ही कब था ॥२१॥

न पहले उससे जुदा हुआ था।
जुदाई केवल थी भ्रम से पैदा।
ख़ला वह केवल स्वयं ख़ला था।
जुदा नहीं था न अब है मिलता ॥२२॥

ख़ला में पैदा नहीं है हर्गिज़।
जुदाई होती जो पैदा होता।
असल से अपनी जुदा नहीं है।
न पैदा होता नहीं है मरता ॥२३॥

इसी तरह ही यह रूह भी छोटा।
है जिस्म से ही प्रच्छिन्न सा ही।

---

१३. आकाश।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

असल में व्यापक-सरूर-हस्ती ।
न अंश इसका न कुल है मिलता ॥२४॥
[१४]मिसाल में है घड़ा ख़ला दो ।
घड़ा इलैहदा, ख़ला इलैहदा ।
मगर न इल्मो-सरूर-हस्ती ।
से [१५]ग़ैर कुछ भी कहीं है मिलता ॥२५॥
है ख़ुद यह सब कुछ बना हुआ वह ।
हैं भ्रम से नानापना - प्रतीति ।
नज़र में [१६]आरिफ़ की सच्चिदानन्द ।
हमेशा इकरस है भान होता ॥२६॥
स्वप्न में जड़ या हैं जितने चेतन ।
है ख़याले [१७]ख़ुफ़ता वह केवल सबही ।
न पैदा कुछ भी हुआ है उस में ।
न कीड़ा भर भी है उसमें मरता ॥२७॥
वह ख़ुफ़ता जब भी है जाग जाता ।
हज़ारों शक्लों को एक पल में ।
मिटा के उनका निशान तक ही ।
असल में अपनी सिमा है लेता ॥२८॥
असल में मैं ही अकेला था [१८]वां ।
वही मैं अब हूं [१९]यहाँ भी वैसा ।

१४. दृष्टान्त। १५. भिन्न। १६. ज्ञानवान्। १७. स्वप्नावी का संकल्प। १८. वह (स्वप्न में)। १९. जाग्रत् में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न मुझ में कुछ भी कमी है बेशी ।
न मुझ में पैदा न कुछ भी मरता ॥२६॥
स्वरूप अपने में नित्य हूँ कायम ।
ख़्याल मेरा था २०जानो - बेजाँ ।
न ख़्याल मेरा है न मुझसे बाहिर ।
यही मैं सब कुछ वहाँ बना था ॥३०॥
यह सुन के रूह को हुआ चकाचौंद ।
असल को अपनी पहचान बोला ।
मैं सच्चिदानन्द स्वरूप पूरण ।
न मुझ से कुछ भी जुदा जो मरता ॥३१॥

२०. चेतन और जड़ जगत् । २१. प्रकाश (आश्चर्य अनुभूति) ।

❀ मस्तों की मजलिस ❀

अद्वैतात्मज्ञान के श्रोताओं का समुदाय

इक दफ़ा मस्तों की मजलिस में कहीं मैं पहुँचा था ।
आँखें थीं १मख़्मूर सबकी वां २नज़ारा देखा था ॥१॥
३जाम भर भर देवे ४साक़ी खुद ५सिबू उलटाता था ।
दौर था ६दिलकश न ख़ाली जाम होने पाता था ॥२॥
चुप थे लेकिन जब वह बोलें "साक़ी" बस यह नाम था ।
दमबदम थे ७नोश करते सबके हाथों में जाम भरा था ॥३॥

१. मस्त । २. अलौकिक दृश्य । ३. प्याला (अद्वैतोपदेश) । ४.
गुरुदेव । ५. घड़ा (अद्वैत प्रकरण) । ६. मनोहर । ७. पीते ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

झूमते थे सिर सभों के [८]इश्क से जारी थे [९]अश्क ।
गर [१०]रवानी देखती गंगा भी करती उनसे [११]रश्क ॥४॥
सब के सब थे मुस्कराते दिल भी खुश मसरूर था ।
बैठे-बैठे नाचते थे चेहरा भी [१२]पुर-नूर था ॥५॥
मुन्तज़िर मैं सोचता था किस से पूछूं किस तरह ।
मस्तो-बेख़ुद झूमते हैं मस्त-हाथी जिस तरह ॥६॥
जी में आया ले चलूँ इक मस्त को बाहिर कहीं ।
तब खुलेगा [१४]राजे-मख़फ़ी वरना [१५]हल्ल होगा नहीं ॥७॥
तब उठाया मस्त को इक [१६]तख़लिये में ले गया ।
पूछा उससे कुछ बतादो मस्ती की कीमत है क्या ॥८॥
होश से बेहोश था मख़मूर था मसरूर था ।
[१७]गुफ़्तुगू की [१८]ज़द् से बाहिर वह नशे से चूर था ॥९॥
कई दफ़ा झटके दिये उसको जगाया बार-बार
जागने पर पूछा यह् मस्ती किस तरह मिलती है यार ॥१०।
जूँ ही आया होश कुछ वह भाग कर जाने लगा ।
पकड़ा बाज़ू पूछने पर वह इस तरह कहने लगा ॥११॥
क्यों हो लाये मजलिसे-मस्तों से मुझ को फोड़ कर ।
था यह बेहतर निकल जाती [१९]रूह मेरी [२०]तन छोड़ कर ।१२।

---

८. प्रेम । ९. अश्रु । १०. धारा । ११. मात्सर्य । १२. प्रकाशमान् । १३. प्रतीक्षा में ।। १४. छुपा हुआ रहस्य १५. सिद्ध । १६. एकान्त । १७. बातचीत । १८. सीमा । १९. आत्मा । २०. शरीर ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बस २१मये-तौहीद मेरी बन चुकी है जिन्दगी ।
साक़ी पर है जान २२कुरबाँ यह मेरी है २३बन्दगी ॥१३॥
दमबदम् चलता रहे ख़ाली न हो जामो-सिबू ।
बेख़ुदी बढ़ती चले पर साक़ी देखूँ रूबरू ॥१४॥
कान से उसको सुनूँ मैं २४दीद से दीदार हो ।
ख़ुद को मैं भूला रहूँ और सामने सरकार हो ॥१५॥
हाथ से हो काम उसका पाओं से २५रफ़तार भी ।
हो ज़ुबाँ पर नामे-साक़ी दिल में बस दिलदार ही ॥१६॥
अपनी हर्कत् उसकी देखूँ इस तरह हर बात में ।
जिस तरह कठपुतली नाचे बाज़ीगर के हाथ में ॥१७॥
मेरा मुझ में कुछ न हो उसका हो जो कुछ भी हो ।
जामे-वह्दत से फिरूं मैं मस्त ख़ाह जो कुछ भी हो ॥१८॥
कुछ न बाकी पास मेरे २६मासिवा-साक़ी रहे ।
सब फ़नाह हो उसमें मेरा वह सदा बाकी रहे ॥१९॥
गर तुझे भी मुझ सी मस्ती लेनी ही मन्ज़ूर हो ।
कर ख़ुदी को भेंट तू भी जिस से नित २७मसरूर हो ॥२०॥
बस कहा इतना वह भागा जिस तरफ़ २८मयख़ाना था ।
कद्मों पे साक़ी के जा वह लड़खड़ाता गिर पड़ा ॥२१॥

---

२१. अद्वैत की शराब । २२. न्योच्छावर । २३. उपासना । २४. नेत्र । २५. चलन क्रिया । २६. सत्गुरु से भिन्न । २७. प्रसन्न । २८. सत्सङ्ग भवन ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साक़ी खुद [२९] दरयायेवह्‌दत में पड़ा था [३०]गोता-ज़न् ।
चौंक कर पूछा पियोगे मये-वह्‌दत् ! [३१]जाने-मन् ॥२२॥

लो भरा यह जाम है पीकर इसे [३२]सरशार हो ।
रूबरू मेरे पियो तुम ता तुझे [३३]दीदार हो ॥२३॥

कुल्फ़तो-रंजो-अलम की [३५]बेख़ तक कट जाएगी ।
मौत और पैदायशी की बेड़ी सब कट जाएगी ॥२४॥

"तू है खुद परमात्मा" पीलो यह[३६] शीरीं-शराब ।
पीके होगे मस्त पूरण मस्ती भी फिर [३७]लाजबाब ॥२५॥

---

२९. अद्वैत के समुद्र । ३०. डुबकी लगाये हुये । ३१. हे प्रिय । ३२. मस्त । ३३. दर्शन, अनुभव । ३४. कष्ट, शोक, ग़म । ३५. जड़ ३६. मीठी शराब (अमृतोपदेश का अनुभव करो) ३७. अलौकिक ।

"तब तलक ग़लत्"

भ्रान्ति न निकले जब तलक, है तब तलक ग़लत् ।
सोचा नहीं कभी है क्या ठीक क्या ग़लत् ।
जिस राह पे चल रहा वह है रास्ता ग़लत् ।
बाहिर हैं जो भी देखता, वह चीज सब ग़लत् ।
जो काम कर रहा है वह काम सब ग़लत् ॥
भ्रान्ति से खुद है और बना, है इसलिये गलत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है, तब तलक ग़लत् ॥१॥
पश्चिम में भ्रम हो जिसको कि पूर्व है यही ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जितना भी चल रहा है उसको समझ सही ।
उतना ही उससे हो रहा है पूर्व दूर ही ।
लौटा भी जिस कदम से था सामने पूर्व ही ।
भ्रान्ति से पश्चिम पूर्व था था इसलिए ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥२॥

रस्सी पड़ी थी राह में समझा कि है यह साँप ।
था डर गया कि अब मुझे डस लेगा ही यह साँप ।
भागा था जा रहा कि आया इधर वह साँप ।
बस गिर पड़ा चोटें लगी यह जान करके साँप ।
भ्रान्ति से रस्सी साँप थी था इसलिए ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥३॥

जंगल में वह कहीं पे इक ठूठ था खड़ा ।
जाना उसे है सामने इक चोर सा खड़ा ।
झिजका लगा वह काँपने, भागा, न रहा खड़ा ।
बस लूट लेगा माल वह है इसलिये खड़ा ।
भ्रान्ति से ठूठ चोर था था इसलिये ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक, है तब तलक ग़लत् ॥४॥

हिरनों ने देखा दूर से कि है सामने १सैलाब ।
पी करके तृप्त होंगे पानी वह हम २शिताब ।
कल्लर ज़मीं दोपहर था चमके था ३आफ़ताब ।

१. पानी का बहाव । २. शीघ्र । ३. सूर्य ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पानी का कुछ निशां नहीं था दरअसल ३सुराब ।
भ्रांति से जल कल्पा था था इस लिए ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकलें जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥५॥

लड़के ने जब कहा था ले तक्ले का वल निकाल ।
उसने लिया वह हाथ में झट वल दिया निकाल ।
लड़के ने मांगा 'वल दो' जो तुमने दिया निकाल ।
मज़दूरी दूंगा फिर तुम्हें मैं जेब से निकाल ।
वह वल नहीं था चीज़ कुछ था इसलिए ग़लत् ।
भ्रांति न निकले जब तक है तब कतल ग़लत् ॥६॥

४शाह ख्वाब में ज्यों जाने कि मैं कंगाल हूँ ।
खाने को कुछ नहीं है ५आज़ुर्दाहाल हूँ ।
सोना कमर से छु रहा जाने ६बेमाल हूँ ।
रेशम में लिप्टा जाने दरिद्री ७मिसाल हूँ ।
झप्की ज़रा सी आंख थी था इसलिये ग़लत् ।
जागे नहीं है जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥७॥

बस ग़लती से ही समझे कि "मैं" है यह आदमी ।
८यक्जां हुआ यह जिस्म से जाने हूँ आदमी ।
प्राणों से मिलके मानें हूँ ९जांदार आदमी ।
बुद्धि से मिलके जाने मैं दाना हूँ आदमी ।

३. मृग तृष्णका जल । ४. राजा । ५. चिन्तातुर । ६. विना धन के । ७. न्याईं । ८. अभेद । ९. जीवित ।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भ्रान्ति से जाने आदमी मैं इसलिये ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥८॥
पहचान अपनी करतू तू हस्तिसरूरोइल्म(आनन्द चिद्वपु) ।
व्यापक अखण्ड एकरस हस्ति सरूरोइल्म(आनंद चिद्वपु)।
वह है नही जो है नहीं हस्ति सरूरइल्म(आनंद चिद्वपु)।
तू लाज़वाल एक हे हस्ति सरूरो इल्म(आनंद चिद्वपु) ।
भ्रान्ति निकाल ठीक हो तुझ में नहीं ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥६॥
है [१०]दरअसल तू [११]जिन्दगी पूरण वह [१२]लामकाँ ।
हर हाल में मौजूद तू [१३]इल्मे-लाजमाँ ।
सब कुछ है सब में तूही [१४]लाशय तू[१५]लाबयाँ ।
[१६]मौहूमा तुझ में सब कुछ तू ब्रह्म है[१७]बेगुमाँ ।
तू सच्चिदानन्द स्वरूप है मत जान कुछ ग़लत् ।
भ्रान्ति न निकले जब तलक है तब तलक ग़लत् ॥१०॥

१०. वास्तव में। ११. जीवन। १२. देश रहित। १३. काल रहित ज्ञान स्वरूप। १४. वस्तु चैतन्य रहित। १५. अवाच्य। १६. कल्पित। १७. संशय रहित।

रुबाइयात्

सीने में जिसे यार को अपने सीना नहीं आता ।
सच्च पूछो अगर मुझ से तो उसे जीना नहीं आता ।
मनुष्य नहीं वह पशु से भी है [१]बद्तर ।
[२]मयखाने में आकर जिसे पीना नहीं आता ॥१॥

१. बुरा। २. सत्संग।

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ज़र्रा ज़र्रा है पुरनूर पर नज़र२बीना नहीं आता।
ना*अह्ल की निगाह में नज़र ३दफ़ीना नहीं आता।
मुरशिद के पाक-क़दमों में कर खुदी को कुर्बान।
आबे हैवां है यादे-खुदा तुझे पीना नहीं आता॥

गुरुदेव के पवित्र चरणों में कर अहंकार को न्योच्छावर।
अमृत है यादे प्रभु तुझे पीना नहीं आता॥२॥

कहते हैं कि राहेफ़कर में सोना नहीं अच्छा।
मुखालिफ़ हो अगर हवा तो रोना नहीं अच्छा।
इन्सान है तू कर यादे ख़ुदा वर्ना पछतायेगा।
नायाब है यह हीरा इसे खोना नहीं अच्छा॥३॥

देखना हो तो ख़ुद को देखो देखकर फिर *शाद हो।
याद रख ख़ुद को सदा और याद से आबाद हो।
ख्वाब और बेदारी गहरी नींद का४शाहिद है तू।
अब भी ख़ुद को देख ले और ग़ैर से आज़ाद हो॥४॥

५जलवा फर्मा हूँ कभी और कभी ६मस्तूर हूँ मैं।
७पतंवे नूर ही हूँ ८हमतन नूर हूं मैं।
मुझ पे इनसान का ९इतलाक बजा है लेकिन।
१०फ़हमो-इद्राक की मनज़िल से दूर हूँ मैं॥५॥

*अज्ञानी। २. देखने वाला। ३. छुपा हुआ खज़ाना। ४. साक्षी। ५. प्रगट। ६. छुपा हुआ। ७. प्रकाशक का प्रतिबिंब। ८. पूर्ण प्रकाश। ९. संबन्ध। १०. समझ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहते हैं कि राहेफ़क़र में सोना हराम है।
हम तो यह कहेंगे कि कुछ होना हराम है।
जब ज़ात से है मौजूद स्वयं सच्चिदानन्द।
कुछ बनके बीज ज़हर का बोना हराम है ॥६॥

यह निश्चय है इक दिन सबने यहाँ से जाना है।
जाना उसी का जाना है जिसने ख़ुद को पहचाना है।
आना भी उसी का जो फिर गर्भ में न आये।
वास्तव में न कहीं आना है न कहीं जाना है ॥७॥

होता है जब ज़ाहिर फिर दबाया नहीं जाता है।
इश्क ख़ुद ज़ाने हक़ है कुछ बनाया नहीं जाता।
प्यार किया नहीं जाता प्यार हो ही जाता है।
यह शोला खुद भड़कता है भड़काया नहीं जाता ॥८॥

प्यार इनसानीखासा है कहीं से लाया नहीं जाता।
पर इश्के-हकीकी तो कहीं पर पाया नहीं जाता।
बहादे जोश में दर्या नहीं बुझती यह [1]नारे-इश्क।
प्यार [2]अश्कों से सुलगता है बुझाया नहीं जाता ॥९॥

प्यार न सौदा बाज़ारी खरीद कर लाया नहीं जाता।
बजुज़ फज़ले-ख़ुदा यह गोहर हर्गिज पाया नहीं जाता।
प्यार के लिये खास दिल मखसूस होते हैं।
यह वह नग़मा है जो हर साज़ पे गाया नहीं जाता ॥१०॥

---

१. प्यार की अग्नि। २. आँसूओं। ३. मोती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्रभु के प्यार के लाइक़ यहाँ कोई नहीं देखा ।
जिसे देखा वह अटका ही कहीं पर है कहीं देखा ।
प्यार अपना जिसे देतें हैं उसे और कुछ नहीं देते ।
उसे और सब कुछ दिया जिसको इस लाइक़ नहीं देखा ॥११॥

किसी ने ज्ञानी से पूछा उसे तुमने है कहीं देखा ।
बहुत खोजा मगर हमने न उसको है कहीं देखा ।
जवाबन् ब्रह्म हूँ मैं ही यह कह कर यूं फरमाया ।
सिवा उसके [3]बहक़्क़ हमने कभी है कुछ नहीं देखा ॥१२॥

हर एक दिल के ही [4]सोफ़े पर उसे [5]मस्नद-नशीं देखा ।
जहां कहते "नहीं" हो तुम उसे हमने वहीं देखा ।
हर एक चक्षु में यहाँ वहाँ नीचे ऊपर भी ।
ज़ियादा क्या कहें उसको है हमने [6]तहे-ज़मीं देखा ॥१३॥

जहाँ यह इक मकाँ है इसमें उसको मकीं देखा ।
खुदी का ओढ़ परदा फिर कहीं परदा-नशीं देखा ।
वही है अब भी वक्ता और श्रोता भी बना है खुद ।
है अपने तरफ़ चारों में वही इक-[7]माह-जबीं देखा ॥१४॥

यह सब कुछ ख़ुद बना है ज़मीनो-आसमाँ ख़ुद है ।
मकीं हर दिल में खुद वह ही यह मकाँ खुद है ।
[9]बशर हैवान नबातात [10]फरिश्ते और परिन्दे भी ।

---

३. सौंगन्ध है । ४. कुर्सी । ५. बैठा हुआ । ६. पृथिवी के नीचे । ७. चन्द्रमुख । ८. रहने वाला । ९. मनुष्य । १०. देवता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

(मनुष पशु बनस्पती देवता और पक्षी भी)
कहाँ तक हम गिनायें उसको यह सारा जहाँ खुद है ॥१५॥
न खाली जा कोई ऐसी कि जिसजा वह नहीं निकले।
यह खुशकी क्या तरी में भी वह हाज़िर हर कहीं निकले।
मैं कुर्बां मुर्शिदे-कामिल ! कहा जिसने तू खुद को देख।
(न्योछावर हूँ मैं सतगुर पे कहा जिसने तू खुद को देख।
जो देखा ग़ौर से पूरण तो हरजा खुदहमीं निकले ॥१६॥
आँखें खुली हैं पर वह किसी को नज़र नहीं आता।
हर ज़र्रे में है मौजूद फिर भी नज़र नहीं आता।
गुरुदेव के चरणों में कर अहंपने की भेंट।
नहीं रहेगी शिकायत कि वह नज़र नहीं आता ॥१७॥
इन ज़ाहिरी आँखों से वह नज़र नहीं आता।
धोखा यह देती है इसलिए नज़र नहीं आता।
सद्गुरु की चरण धूड़ी हृदय की आँखों में लगा।
तू खुद कहेगा उसके सिवा कुछ नज़र नहीं आता ॥१८॥
तेरा ही अपना आप है फिर क्यों नज़र नहीं आता।
तू ग़ैर बनके बैठा है इसलिए नज़र नहीं आता।
ब्रह्मविद्या से हो वाकिफ़ और अहंपना छोड़।
१बग़लगीर रहेगा हमेशा क्यों नजर नहीं आता ॥१९॥
तुझे वेह्म ने घेरा है इसलिए नज़र नहीं आता।
पुत्र इस्त्री में तू उलझा है इसलिए नजर नहीं आता

---

१. लिपटा हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ब्रह्म विद्या के प्रकाश से तू खुद को देख ।
तू स्वयं है परम प्रेम अस्पद क्या नज़र नहीं आता ॥२०॥
अज्ञानी को परमात्मा कहीं नज़र नहीं आता ।
ज्ञानी को सचमुच यह जहाँ नज़र नहीं आता ।
उल्टी है यह बात पर सच्च है कि ज्ञानी को ।
सिवा परमात्मा के कुछ नज़र नहीं आता ।२१॥
तू कहता है मुझे परमात्मा नहीं नज़र आता ।
फिर कहो इन खुली आँखों से क्या है नज़र आता ।
तू कहेगा जहाँ तो यह उसका ही है मकाँ ।
वह मकीं है हर जगह क्यों नहीं नजर आता ।२२॥
आ अद्वैत के सतसंग में इक घूँट वो [1]नोश कर ।
तू मनुष है पशु नहीं कुछ तो होश कर ।
गुरुदेव के सत्संग में यह मिलता है अमृत ।
पी फिर होश में न आ परमात्मा को [2]आगोश कर ॥२३॥
तू स्वयं चैतन्य प्रकाश है ज़रा गौर से देख ।
लिप्टा है तेरे साथ वह जरा ग़ौर से देख ।
तुझे अपने से बिल्कुल अभेद है किया ।
तेरा तो कहीं विशाँ भी नहीं ज़रा गौर से देख ॥२४॥
तेरी ज़ात परमात्मा है नहीं खन्ना और कपूर ।
मायिक गुणों में तू अड़ा है तभी ओझल है वह नूर ।
दुख का कारण है यही तेरा गुण अभिमान ।
नाशवान हैं यह सब गुण क्यों इनपे होता है मग़रूर ॥२५॥

१. पी हृदय में अनुभव कर । २. गले लगा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इनसान वही है जिसने परमात्मा को जाना है।
जाना ही नहीं केवल बल्कि उसे पहचाना है।
गुरुकृपा से फिर अपने से किया है अभेद ।
ब्रह्म विद्या का फल यही है इसे आचरण में लाना है ॥२६॥

वह तो सर्वदा अभेद है पर व अलग सा बन गया।
इस देह अध्यास से तू कुछ का कुछ बन गया।
गुरुदेव की कृपा से जब दूर होता है अज्ञान।
फटता है परदये-खुदी जीव ब्रह्म बन गया ॥२६॥

गुरुदेव की चरण धूड़ी को तरसते है[१] फरिश्ते ।
इनकी प्रज्वलित दृष्टि जला देती है सब रिश्ते ।
सौ बार हूँ न्योछावर इन चरणों पे पूरण ।
बख्शी है आज़ादी वरना हमभी फिरते भटकते ॥२६॥

याद वाले

याद में तेरी जो रहते हर घड़ी [१]बेदार हैं।
हर तरह के रञ्जो-ग़म से वह ही होते पार है ॥१॥

रात दिन [२]शागिल जो रहते याद में तेरी प्रभु।
लज्जते हर दो जहां उनके लिए बेकार है ॥२॥

याद की मस्ती से रहते इसकदर हैं मस्त वह ।
बेख़बर अपने से और ना-वाकिफे-[३]अग़्यार हैं ॥३॥

१. जागते। २. निमग्न। ३. बेगाने से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कीमते हरदो जहाँ पूछो तो कहते हैं सुनो ।
स्वर्ग और यह लोक न दोनों तिनके से [४]बिसियार हैं ।।४।।

[५]फ़र्हतो - आराम ठंडक - मुस्कराहट-खुशदिली ।
याद वालों के हमेशा रहते [६]पाबंद-कार हैं ।। ५ ।।

[७]माज़ी का है ज़िक्र छोड़ा बेफ़िकर आइन्दा से ।
(भूत का वर्णन त्यागा चिन्ता भविष्यत की नहीं) ।
[८]हाल में हैं खुश सदा और याद से सरशार हैं ।। ६ ।।

कुछ नहीं लेना किसी से और न कुछ देना ही है ।
साफ़ है लेखा सभी पर [९]चश्मये-उपकार है ।। ७ ।।

हरतरफ़ दीदारे-रब्ब है खुद को जाना रब्ब् जभी ।
(हरतरफ़ वह ब्रह्म देखें खुद को जाना ब्रह्म जभी) ।
है निगाह [१०]इक्सीर और [११]रहमत के [१२]अबरे-बार है ।।८।।

याद वालों से अगर हो मिलने की ख़ाहिश तुम्हें ।
आश्रम है कैलास रहते विष्णु के अवतार है ।। ९ ।।

फिरते हो नाहक्क कहीं तुम खातिरे-दीदारे-रब्ब् ।
(फिरते हो तुम व्यर्थ बाहिर ब्रह्म दर्शन के लिये) ।
इनके हो दीदार पूरण ब्रह्म के दीदार हैं ।। १० ।।

---

४. अधिक । ५. हृदय की शान्ती । ६. सेवक । ७. गुजरा हुआ समय । ८. वर्तमान । ९. उपकार के स्रोत । १०. रसायन । ११. कृपा । १२. वर्षा के बादल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

* सगुण से निर्गुण के दर्शन *

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
हे नाथ नारायण वासुदेव ॥

गोविन्द की जय जय हम सब मनायें।
गोपाल की जय जय सब मिल के गायें ॥ १ ॥
तू आनन्दघन है क्या उपमा बतायें।
तू है ज्ञान सूर्य तेरी सब शुआयें ॥ २ ॥
तू ख़ालिक़ है सबका तू राज़िक़ है सबका।
तुझे छोड़ ध्येय हम किसे क्यों बनायें ॥ ३ ॥
मिटे रंजोग़म और विषाद और विक्षेप।
तेरे चरणों की जब से ली हैं पनाहें ॥ ४ ॥
है कृपा की तेरी हमेशा ज़रूरत।
यह क्रोधादि ताकि न मुझको सतायें ॥ ५ ॥
तेरी याद से दिल को मिलती है ठंडक।
तेरी याद में क्यों न आँसू बहायें ॥ ६ ॥
टपकती हैं बूंदें यह है मैल दिल की।
सफ़ाई से दिल की तुझे इससे पायें ॥ ७ ॥
बिना देखे तेरे नहीं चैन दिल को।
छुपा दर्द दिल का किसे जा सुनायें ॥ ८ ॥
मनोराज मे था यूं बेचैन व्याकुल।
कि इकदम फरकने लगे अंग दायें ॥ ९ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अचानक उसी दिन हुये आप ज़ाहिर।
चरण चूमूं मैं, वह पकड़ मेरी बाहें॥ १० ॥
खुले दिल था मुझको लिया फिर बग़ल में।
मैं कुरबान जाता था लेता बलायें॥ ११ ॥
वह लिपटे थे मुझ से मैं उनसे था यकजां।
उधर प्यार था इधर सर्द आहें॥ १२ ॥
इधर गल्तियां थीं उधर मुआफीयां थीं।
इधर थीं ख़तायें उधर से दुआयें॥ १३ ॥
इधर थी [1]नदामत् उधर थी करामत।
इधर माज़रत थी उधर से निगाहें॥ १४ ॥
लगे पूछने फिर मेरे दिल की हालत।
कहा तेरे दर्शन ने रद्द की बलायें॥ १५ ॥
मिलूँ तुझसे ऐसा न बिछड़ूँ कभी भी।
जो पूछा, कहा, पास सत्गुर के जायें॥ १६ ॥
रहो जाके सेवा में ब्रह्मनिष्ठ की तुम।
मिलन सच्चे की वह हिक्मत् सुझायें॥ १७ ॥
मैं बसता हूँ हर जा ज़रा ध्यान कर तू।
वह अज्ञान का तेरा परदा उठायें॥ १८ ।
विना मेरे कुछ भी जहाँ में नहीं है।
न आगे न पीछे न दायें न बायें॥ १९ ॥
तुझे प्राप्त होगा मिलन फिर सदा का।
मिटेगी यह "मैं तू" जा इक में सिमायें॥ २० ॥

---

१. शर्मिन्दगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गिरा जाके चरणों में सत्गुर के फिर मैं ।
करी प्रार्थना मेल प्रभु का करायें ॥ २१ ॥
मिलूँ उन से ऐसा न बिछड़ूँ कभी भी ।
जुदाई का उनकी मेरा कष्ट हटायें ॥ २२ ॥
मैं सेवा में तत्पर रहा एक मुद्दत ।
वह खुश दिल थे इकदिन कहा आ सुनायें ॥ २३ ॥
कभी न होगी तेरी फिर जुदाई ।
तुझे अपने प्रीतम से ऐसा मिलायें ॥ २४ ॥
ध्यान से फिर मनन इसका करना ।
वृत्ति सजाती का प्रवाह बहायें ॥ २५ ॥
अवश्य होगा साक्षात् हस्तामलकवत् ।
बिना ब्रह्म चित्त में न कुछ भी ठहरायें ॥ २६ ॥
तू साक्षी है जाग्रत स्वप्न का भी वैसा ।
सुषुप्ति की देता खबर जब जगायें ॥ २७ ॥
तू चैतन्य ज्योति चमकता है दिल में ।
तेरे ख़्याल तुझको नज़र जिस से आयें ॥ २८ ॥
तेरी रौशनी से इन्द्रियां भी रौशन ।
प्राण तेरी सत्ता से सब को चलायें ॥ २९ ॥
तू है सच्चिदानन्द असल देख अपनी ।
तू बुद्धि का बोद्धा ज़रा ध्यान जमायें ॥ ३० ॥
स्थूल सूक्ष्म कारण दृश्य तीनों तेरे ।
तू द्रष्टा है इन से ख़ुदी को हटायें ॥ ३१ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

यही तेरा प्रीतम तू प्रीतम है ख़ुद ही।
असल देख अपनी नकल दूर हटायें॥ ३२॥
स्वतः सिद्ध व्यापक हरइक मे समाया।
जूँ आकाश ऐसी बुद्धि बनायें॥ ३३॥
तू चैतन्य ज्योति आनन्द बिग्रह।
निज आत्मा में ज़रा जाग जायें॥ ३४॥
यह उपदेश सुन ब्रह्म पूरण हूँ मैं ही।
खुशी एक होने की हरदम मनायें॥ ३५॥

अपनी वाक्फ़ीयत=निज परिचय

अपना वाकिफ़ आप होना काम है इन्सान का।
वरना हुम का फ़र्क है इन्सान और हैवान का॥ १॥
गर कहो वाकिफ़ हूँ अपना १दस्तोपा मैं जिस्म हूँ।
फ़रज़न्द हूँ वालिद का मालिक बीवी और सामान का॥२॥
(पुत्र हूँ अपने पिता का स्वामी पत्नी सामान का)।
घर मेरा कोठी मेरी यह जायदाद और २पारचात्।
जेवर ज़मींकालीन मेरे मालिक हूँ गुलदान का॥ ३॥
नाम मेरा है फ़ुलां और रिशते मेरे हैं फ़ुलाँ।
पोता हूँ लफ़टन्ट का और दोहता हूँ मलकान का॥ ४॥
कारोबार कई लाख का इस देश में परदेश में।
कारख़ाने कई हैं मेरे अफ़सर हूँ ३नफ़रान का॥ ५॥

---

१. हाथ और पाओं। २. कपड़े। ३. नौकरों का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बेहन के ख़ावन्द का साला सुसर का दामाद हूँ।
अपने चच्चों का भतीजा भाई हूँ ³अख़वान का ॥ ६ ॥

वाक्फ़ीयत यह तेरी बिल्कुल ग़लत् और झूठ है।
⁴ख्याब में होता ⁵अदम है तेरी इस पहचान का ॥ ७ ॥
ग़ौर कर फिर ग़ौर कर फ़ानी है यह सारा जहाँ।
⁶मौहूमा-शै को सच्च जो समझे काम है नादान का ॥ ८ ॥
तू किसी का है नहीं तेरा नहीं कोई यहाँ।
सिल्सला दुनिया का है यह चार दिन मेहमान का ॥ ९ ॥
क्यों भटकता रात दिन है मालोज़र की ⁷हिर्स में।
हो ज़रा ⁸ख़िल्वतनशीं और ध्यान कर ⁹रहमान का ॥ १० ॥
पेट में माँ के किया इकरार भूला उसको तू।
मर्द पूरा है वुही ¹⁰पाबंद जो ¹¹पैमान का ॥ ११ ॥
¹²बाअमल-आरिफ़ से जाके पूछ सचमुच कौन हूँ।
वह बतायेंगे तूझे तू ¹³नूर है ¹⁴इरफ़ान का ॥ १२ ॥
ख़्वाब और ¹⁵बेदारी गहरी नींद का साक्षी है तू।
तुझ से पुररौनक़ हुआ बाज़ार यह ¹⁶इमकान का ॥ १३ ॥
¹⁷जुज़ तेरे कुछ है नहीं होगा नहीं और था नहीं।
ब्रह्म ही है ग़ौर कर तू वेद के फ़रमान का ॥ १४ ॥

---

३. बड़ा भाई। ४. स्वप्न। ५. अभाव। ६. भ्रान्ति से उत्पन्न हुई वस्तु। ७. लोभ। ८. एकान्त स्तिथि वाला। ९. परमात्मा। १०. कटिबद्ध। ११. इकरार। १२. श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ। १३. प्रकाश। १४. वेदान्त। १५. जाग्रत। १६. मौजूद सत्तावाला। १७. बिना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जात तेरी है सरूरो-इल्मो-हस्ती लाज़वाल ।
जाविदाँ तू महज वाहिद नूर है १यज़दान का ।। १५ ।।
स्वरूप तेरा सच्चिदानन्द अद्वैत अच्युत अजर अमर ।
नित्य शाश्वत् चैतन्य ज्योति आनन्द विग्रह कल्याण का ।।१६।।
सुनना, सुन के जानना, और जान कर पहचानना ।
पहचान से फिर एक होना फल है आतम ज्ञान का ।।१७।
यूं हकीकत जान अपनी ब्रह्म में पूरण लीन हो ।
बेख़ुदी में मस्त होकर आनन्द ले २निर्वाण का ।।१७।।

१. परमात्मा । २. मोक्ष ।

★ श्री हनुमान जी का विभीषण को उपदेश ★

हृदय में जिस किसी के भी क्रोध अभिमान रहते हैं ।
हज़ारों कोस दूर उससे श्री भगवान रहते हैं ।। १ ।।
जो लिपटे रात दिन विषयों में भूले नाम ईश्वर का ।
बिना ही पूंछ सींगों के उन्हें हैवान कहते हैं ।। २ ।।
१ ज़नो-२ ज़र के भँवर में दिल न फंसे जिस किसी का ।
भले सूरत है इनसाँ की उसे भगवान कहते हैं ।। ३ ।।
सजाया जिस्म को अपने ज़री-ज़रबफ़त से जिसने ।
मगर सूखा रखा ३रूह को उसे नादान कहते हैं ।। ४ ।।
रगड़ कर खूब चमका ले जिसम मिट्टी के ४तोदे को ।
बतायेगा हकीकत वाँ जिसे श्मशान कहते हैं ।। ५ ।।
वहां होगा यह ५खाकिस्तर. मिलेंगी चन्द जली हड्डियां ।
न खोजे पर मिलें जिनको ज़ुबाँ, दिल, कान कहते हैं ।।६।।

१. स्त्री । २. धन-दौलत । ३. आत्मा । ४. पुतला । ५. राख ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

लगेगी आग जब घर मे न [६]चाह तब खोदा जायेगा।
जो पहले करले बन्दोबस्त उसे इनसान कहते हैं॥ ७॥
बना कर कान के दूने तू भर ले रामयश दिल में।
यह धन तब काम आवेगा जिसे [७]प्रयाण कहते हैं॥८॥
प्रभु के प्रेम की गाथा सुने फिर दिल न पिघले जो।
नहीं इनसान हकीकत में उसे पाषाण कहते हैं॥ ९॥
न्योछावर जिस्मो-जाँ सब कुछ प्रभु पर जो करे दिल से।
प्रभु उसके, प्रभु का वह अठारह पुराण कहते हैं॥ १०॥
प्रभु की चरण भक्ति से मिटाया जिसने [८]ग़म अपना।
मिटाये दर्दे-दिल सबका उसे विद्वान कहते हैं॥ ११॥
विभीषण ! तू मिटा अपनी ख़ुदी रघुवर के चरणों में।
गले फिर वह लगायेंगे श्री हनुमान कहते हैं॥ १२॥
मिटा कर जो ख़ुदी पूरण प्रभु चरणों में जाता है।
मेरा सब कुछ उसी का है श्री भगवान कहते है॥ १३॥

१. कुवाँ। ७. मृत्यु। ८. शोक।

★ सम्बोधन ★

तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सुरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप॥
[१]वक्त [२]गुज़रां है सम्भल खुद को सम्भाल ले।
कीचड़ में पड़ा स्वर्ण है तू बाहिर निकाल ले॥
कर साफ़ और देख ग़ौर से कि सोना है वह ज़रूर।

१. समय। २. बीत रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर ॥
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥१॥

यह मानव जीवन हैं देवता भी इसके लिए तरस्ते ।
मिलता है उन्हें जो पीछे बहुत पुण्य दान हैं करते ॥
इतना यह अमोल्य और फिर तू विषयों में यूँ चूर ।
तू जिस्म नहीं तू हक्क है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर ।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥२॥

दुनिया है तेरे आगे और तू है उसके पीछे ।
तू लौट के नहीं देखता ख़ुद ब्रह्म हैं तेरे पीखे ।
मुँह मोड़ और देख कि वह सदा है [3]हज़ूर ।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् ख़ुद हस्ति इल्मो सरूर ॥
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म स्वयं सच्चिदानन्दस्वरूप ॥ ३ ॥

इन नाशवान अर्थों की क्यों करता है [4]तलब ।
सच्च कहता हूँ तुझे हरगिज़ न तलब हरगिज़ न तलब ॥४॥
वरना यह घसीटेंगे, रौंदेंगे और करेंगे चिकनाचूर ।
तू जिस्क नही तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर ।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥४॥

तलब गर करनी ही है तो कर नेकी की तलब ।
काम क्रोध दोषों के त्याग करने की तलब ।
यूँ छूटेगा इस जाल से फिर न होगा [5]महसूर ।

---

३. सामने । ४. इच्छा । ५. कैद ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥५॥
जैसी भी बन जाये रहो हर हाल में ६शाकिर।
क्या मेहमान भी झगड़ते हैं या लड़ते हैं मुसाफिर।
मत कर किसी की शिकायत न हो हरगिज़ ७मग़रूर।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥६॥
ऋषियों की तू सन्तान, अमृत काहै बेटा।
यूँ किस लिये है *नाहक्क् अज्ञान में पड़ा लेटा।
उठ जाग और देख कि तू है नूरों का भी नूर।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥७॥
हृदय में तेरे जो ज्योति वही तो स्वयं ब्रह्म है।
आकाश की न्याई व्यापक घनानन्द न उसमें ग़म है
इकरस वह ख़ुद तू है नहीं तुझ से वह दूर।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् है ख़ुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥८॥
हर जा है तेरा ८जलवा हर आंख में तू रौशन।
हर कान में तेरा शोर हर दिल है तेरा ९मस्कन।
असल अपनी से ही १०आगाह कर ख़ुदी को ११अबूर।

---

६. सन्तुष्ट। ७. अभिमानी। *व्यर्थ ८. प्रकाश। ९. घर।
१०. वाकिफ। ११. पार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

तू जिस्म नहीं तू हक्क् है खुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥९॥
१२शम्सो-१३कमर १४अंजम में तेरी दीप्ति है चमकती।
बिजली में और आग में तेरी ज्योति है दमकती।
तू १५बहरे-जिन्दगी है सदा नूर से भरपूर।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् है खुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥१०॥
हर जा है तेरा चर्चा क्या मस्जिद में क्या मन्दर में।
क्या गिरजा में क्या बस्ती में क्या खण्डर में।
१६हक्क् तो यह है कि तू १७हक्क् है पूरण १८शाद और मसरूर।
तू जिस्म नहीं तू हक्क् है खुद हस्ति-इल्मो-सरूर।
तू शरीर नहीं तू ब्रह्म है स्वयं सच्चिदानन्द स्वरूप ॥११॥

श्री शिवस्तुति

एकं योगसनाधिना मुकुलितं चक्षुर्द्वितीयं पुनः, ।
पार्वत्या जघनस्थलस्तन तटे शृङ्गारभारालसम् ।
अन्यद्दूरे निरस्तचापमदन क्रोधानलोद्दीपितं,
शम्भोर्भिन्न रसं समाधि समये नेत्र त्रयं पातु वः ॥

प्रभु तेरी महिमा महाँ से महाँ है।
कलम को वह लिखने की ताकत कहाँ है ॥

---

१२. सूर्य। १३. चन्द्रमा। १४. तारे। १५. जीवन का समुद्र।
१६. सत्यता। १७. ब्रह्म। १८. सुख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

समुन्दर की गर मै स्याही बनाऊं।
काग़ज़ ज़मीं, दरख्त कल्में बनाऊं॥
लिखे शारदा गर कई कल्प कोटि।
कहेगी बस लिख लिख यह महिमा है छोटी॥
समाधि में बैठे हुये आप जब थे।
अखण्ड एक चेतन से तन्मय हुये थे॥
ब्रह्मरस को पी-पी कर मख़मूर जब थे।
आनन्द घन और मसरूर जब थे॥
प्रेरत [1]मदन देवताओं से होकर।
धनुष पर चढ़ा बाण खड़े दूर होकर॥
उसे खैंच कर कान तक था चलाया।
खुले नेत्र तीनों तो कौतक दिखाया॥
भिन्न भिन्न रसों के ज्ञापक थे तीनों;।
सतो, रज, तमोगुण के मापक थे तीनों॥
ब्रह्म रस से पूरण जो दायाँ खुला था।
वह आधा तो बन्द था आधा खुला था॥
सतो गुण का रस शान्त दिखला रहा था।
शिव आनन्द घन है यह जतला रहा था॥
शृङ्गार रस से भरा नेत्र बायाँ।
श्री पार्वती को वह देखे [2]नुमायाँ॥

१. कामदेव। २. प्रकट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रजोगुण की क्रिया नजर आ रही थी।
दृष्टि में केवल उमा आ. रही थी॥
क्रोधाग्नि से दीप्त तीजा खुला था।
धनूष सहित उससे मदन जल गया था॥
तमोगुण का रसबीर प्रभु ने दिखाया।
दृष्टि से अपनी था शत्रु जलाया॥
गुणों पर था शासन न उनसे देवे थे।
वह मायापति हैं न इन से हिले थे॥
प्रभावित गुणों से न हो जी वह शिव हैं।
वही वन्दनीय और वही पुरुष दिव्य है॥
यूं कैलाश स्वामी ने कौतक दिखाया।
यह अपना ही कौतक हमें स्वयं सुनाया॥
त्रयम्बक प्रभु शिव को प्रणाम मेरा।
करो रक्षा पूरण मैं सेवक हूँ तेरा॥

★ आत्मा का स्वरूप ★

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं,
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

न सूरज न चक्षु को है रौशनी वाँ।
न है चन्द्रमा और न मन की गति वाँ॥
न तारों की दीप्ति न हैं इन्द्रियाँ वाँ।
न बिजली न अग्नि न बाणी की [१]गम वाँ॥
वह हृदय के अन्दर है चैतन्य ज्योति।
रवी चन्द्र अग्नि की ज्योति की ज्योति॥
यह आकाश वायु अनिल नीर पृथिवी।
उसी की हरइक में सत्ता स्फूर्ति॥
ब्रह्मा से लेकर अणुकीट [२]पर्यन्त।
है भरपूर सब में वह चेतन अनन्त॥
वह प्रकाश उसी का जो हर चीज़ भासे।
बिना चीज़ के वह स्वयं सब में भासे॥
वह आनन्दघन और चैतन्य सत् है।
स्वाभाविक व्यापक अखण्ड एक तत्त्व है।
वह आपा है सबका वही आत्मा है।
वह माया का स्वामी वह परमात्मा है॥
उसी के ही हैं नाम शिवराम गोविन्द।
हरि कृष्ण विष्णु मुरारी मुकुन्द॥
वह पूरण है हर जा [२]ज़मीं में [३]ज़माँ में।
[४]हक़ीक़त में ख़ुद है [५]मकीं हर मकाँ में॥

१. पहुंच। २. पृथिवी। ३. काल। ४. वास्तव। ५. मकान वाला स्वामी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ भगवान विष्णु ★

मायाकल्पितमातृतामुखमृषा द्वैतप्रपञ्चाश्रयः
सत्यज्ञानसुखात्मकः श्रुतिशिरोत्थाखण्डधीगोचरः
मिथ्याबन्धविधूनेन परमानन्दैकतानात्म
मोक्षं प्राप्त इव स्वयं विजयते विष्णुर्विकल्पोज्झितः

माया से कल्पित बना है जो कर्ता।
अविद्या से अपने को जाने जो भोक्ता॥
मृषाद्वैत साधक प्रपञ्च आश्रय जो।
सकल नाम सूरत का आधार जो॥
है वास्तव में पूरण वही सच्चिदानन्द।
अखण्ड एक व्यापक है चेतन घनानन्द॥
हमेशा है हरजा हरइक में समाया।
न पैदा करे कुछ किसी का न जाया॥
साधन सामग्री से अधिकारी बनकर।
श्री सद्गुरु से महावाक्य सुनकर॥
तत् त्वम् के अर्थों से उत्पन्न वृत्ति।
अखण्डार्थ बोधक जो ब्रह्ममय वृत्ति॥
उसी से आरोपित बन्ध को हटाकर।
विकल्पों से खाली खुदी को मिटा कर॥
स्वयं मोक्ष रूप मोक्ष प्राप्त की न्याईं।
विराजे है यिष्णु स्वयं अपने माहीं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

★ श्री गुरु विसिष्ठ—राम संवाद । ★

इक दफ़ा श्री राम जी ने वसिष्ठजी से १अर्ज़ की ।
है प्रभु औषध कोई इस विक्षेप की २मर्ज़ की ॥ १ ॥

बारबार हूँ रोकता पर रुकने में आता नहीं ।
जिस तरफ ले जाना चाहूं उस तरफ़ जाता नहीं ॥२॥

अपनी मरज़ी से चलें मुझ को घसीटे साथ यह ।
काँटों में मुझ को फ़सा कर ख़ुद भी रोवे साथ यह ॥ ३ ॥

इन्द्रियों के गोलको को हठ से बन्द कर सकता हूँ ।
मनका गोलक हृत्कमल वह बन्द नहीं कर सकता हूँ ॥४॥

जीत सक़ता हूँ जहाँ के सबही योद्धा ज़ोर से ।
पर कठन है जीतना इस मन को अपने ज़ोर से ॥ ५ ॥

ऐसी कहिये युक्ति भगवन् जो सरल और अनिन्दित हो ।
काबू में होवे मन मेरे फिर न यूँ स्पन्दित हो ॥६॥

दण्डवत् प्रणाम करके चरणों से लिपटे थे राम ।
अश्रुओं से चरण धोये सिस्कियां लेते थे राम ॥ ७ ॥

प्यार से गुरुदेव जी ने पीठ पर फेरे थे हाथ ।
देते दिलासा बार-बार और शिर पे रक्खा उनके हाथ ॥८

प्रेम से उनको उठाया पूंछे आँसू, कहा, बैठिये ।
सावधान और स्वस्थ होकर बचन सुनिये बैठिये ॥ ९ ॥

१. प्रार्थना । २. बीमारी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जाके फिर एकान्त में यह शब्द मेरे विचारणा।
ठीक बुद्धि में जचें तो इनकी करना धारणा ॥१०॥
संशय रूपी मेघ से गर बुद्धि फिर आच्छादित हो।
सत् असत् निर्णय न ही और मूढता १अपादित हो ॥११॥
ऐसी हालत में तो शीघ्र कुटिया आ जाना राम।
उपदेश की वायु से संशय मेघ छिन्न भिन्न करना राम॥१२॥
समुद्र पीना अग्नि खाना और सुमेरु उखाड़ना।
सहज हैं पर मुशकिल है मन की जड़ को काटना ॥ १३ ॥
है यह सच्च पर सच्च कहूँ मेरे बचन कुद्दाल की।
छू से जड़ कट जायेगी मन की २रञ्जो-मलाल की ॥१४
क्रम से सुन ले चार साधन काबू मन पाने के हैं।
अभ्यास निरन्तर से ही मन को वश में लाने के हैं॥ १५ ॥
पहला साधन ब्रह्म विद्या दूसरा संग ब्रह्मनिष्ठ का।
वासना का त्याग तीसरा चौथा प्राणायाम का ॥१६॥
वाक्फियत ५इल्मे इरफ़ान-६सुहबते-आरिफ सदा।
तर्के-ख्वाहिश, ७हब्से-दम से राम काबू मन पे पा ॥१७॥
सब से ८अफ़ज़ल राम जानो इल्म है इरफान का।
जिस से होता इल्म है ९जिस्मो-जाँ जानान का ॥१८॥
ब्रह्म विद्या से ही जाने साक्षी और फिर साक्ष्य को।
सच्चिदानन्द है साक्षी और असत् जड़ सब साक्ष्य को ॥१९॥

---

१. प्राप्त । २. दुःख शोक । ५. ब्रह्मविद्या । ६. ज्ञानवान ।
७. प्राणायाम । ८. श्रेष्ठ । ९. शरीर-जीव-परमात्मा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

इल्मे-इरफां से है जाने शाहिदो-मशूहूद को।
शाहिद *बज़ात इल्मो-सरूर और झूठ सब मशहूद को ॥२०॥
इल्मे-इरफाँ हैं जताता शाहिद हक्क् खुद *बूद है।
उसके सिवा मशहूद झूठा [10]फ़ानी और [11]महदूद हैं॥२१॥
साक्षी है वह सच्चिदानन्द रौशन अपनी ज़ात से।
तीनों जिस्मों से इलैहदा पाक उनकी [12]सिफ़ात से ॥२२
[13]बे-कराँ है ज़ाते शाहिद महज़ हस्ति इल्मो-सरूर।
हर जगह सब में हमेशा एक रस है *काने-नूर ॥२३॥
उसके जैसा आप खुद वह घँर घँर मौजूद है।
है वह [14]वाहिद [15]लाफ़ना नै [16]आबिदो-माबूद है ॥२५
[17]जाविदानो-लामाकानो-लब्यानो-लाज़वाल।
सब का अपना आप [18]नाज़िर [19]लाज़मानो-बाजमाल ॥२६
पाक है हर सिफ़त से पर सिफ़तों का भण्डार है।
रंजो-मलाल उस में नहीं बस सुख का वह [20]तूमार हैं ॥२६॥
है [21]मुजस्सम-हुस्न वह और सबसे जियादा है [22]हुसीं।
चैतन्य घन आनन्दघन और दिल में सब के है [23]मकीं। २७॥
बन्धन हैं सब मन तलक वह बन्धनों से आजाद है।

---

* स्वरूप से। * अस्तित्व वाला। १०. नाशवान। ११. परिछिन्न। १२. गुणो से। १३. अनन्त। * प्रकाश की खानि। १४ अद्वैत। १५. अमृत। १६. उपासक उपास्य। १७. शाश्वत व्यापक, अवाच्य, अच्युत। १८. द्रष्टा। १६. नित्य प्रकाशमय। २०. ढेर। २१. सुन्दरता का विग्रह। २२. खूबसूरत-सुन्दर। २३. रहने वाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

खुद बखुद है सब में रौशन नित्य तृप्त और २४शाद है ।२८।
जल में जैसे लहरें कल्पें स्वर्ण में ज़ेवर कल्पना ।
रस्सी में जूं सर्प कल्पें युं मन भी है इक कल्पना ।।२६।।
ख़्वाब का ज़ेवर-ज़मीं ज्यों महज़ मन का ख़ियाल है ।
वैसे ही नादानी अपनी से यह मन भी इक ख़ियाल है ।।३०
इस तरह जब स्वरूप अपने का पता मन पाता है ।।
साक्षी मे प्रीति बढ़ा कर तृप्ति उसमें पाता है ।।३१।।
जिसको मन झूठा है समझे उस तरफ जाता नहीं ।
जादू की थैलो को जैसो लेना यह चाहता नहीं ।३२।
दृश्य सभी मिथ्या है मायिक सामने साक्षी के है ।
स्वयं असत् पर सत् सा भासे सत्ता इसकी साक्षी से हैं ।।३३।।
यूँ उलट कर दृश्य से जब निर्विषय होता है मन ।
आत्मा से तेजस्विहोकर दीप्तिमात्र होता है मन ।।३४।।
तामस और राजस से रहित सत्त्वमय हो जाता है ।
एन्धन विना फिर आग की मानिन्द ही हो जाता है ।।३५।।
जिस तरह अग्नि में जाकर लोहा अपनी स्याही को ।
खोके पाता आग से है आग की रोशनाई को ।।३६।।
तेज से भरपूर होकर अपना आप खोता है मन ।

२४. प्रसन्न ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एक रस आनन्द से मख़मूर होता है मन ॥३७॥
सब जगह प्रकाश देखे अन्दर बाहिर एकरस।
पाता है विश्रान्ति पूरण पीता है आनन्द रस ॥३८॥
भेद में विक्षिप्त था भेद का कारण अज्ञान था।
भागता बाहिर था मन जब स्वरूप का अज्ञान था ॥३९॥
ज्ञान दृष्टि खुल गई अज्ञान का तब नाश हुआ।
मिट गई सब भेद दृष्टि जब आत्मा का प्रकाश हुआ ॥४०॥
अब जहाँ जाता है मन ब्रह्म दर्शन करता है।
अपने से भिन्न कुछ भी नहीं बस अपना दर्शन करता है ॥४१॥
भागे कहां जाये कहाँ ब्रह्म से भिन्न कुछ है नहीं।
हर जगह है सच्चिदानन्द आत्मा से भिन्न कुछ है नहीं ॥४२॥
मैं [२५]सरूरो-इल्महूँ और [२६]हक्क् हमेशा लाज़वाल।
यूं पुकारे खुदबख़ुद मन हस्ति हूँ मैं बाजमाल ॥४३॥
सब की जाँ मन ख़ुद बना है तबतलक जब अज्ञानी है।
स्वरूप में गुम करदे खुद को तब ही मन यह ज्ञानी है ॥४४॥
यह है आतमज्ञान रघुवर ब्रह्मविद्या इसको कहते हैं।
अज्ञान का घातक यही विद्वान सबही कहते हैं ॥४५॥
इसलिये है उत्कृष्ट माना सबने इल्म-इर्फ़ान का।
मन को होता ज्ञान हासिल जिससे [२७]जाने-जान का ॥४६॥

२५. आनन्द चैतन्य। २६. ब्रह्म। २७. परमात्मा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जाने-जाँ को जानकर मन जाने-जाँ हो जाता है।
मैं न था बस जाने-जाँ था यह २अयाँ हो जाता है ॥४७॥
यह है सबसे पहला साधन तीन साधन फिर कभी।
अवसर जब हमको मिलेगा तब सुनायेंगे फिर कभी ॥४८॥
जन्म मृत्यु का है नाशक पर्याप्त है यह ही ज्ञान।
तत्पर होकर जब डटोगे पूरण होगा ब्रह्म ज्ञान ॥४९॥

२. प्रकट।

★ गीता ज्ञान ★

१ख़ुद परस्ती छोड़ बन्दे गीता का यह ज्ञान है।
ज्ञान गीता पर अमल कर इसमें ही कल्याण है ॥१॥
किस लिये २नाहक् अकड़ता ३फ़ानी ज़ोरो-ज़र पे तू।
याद रख तू चार दिन का इस जगह मेहमान है ॥२॥
जिन को समझा है तू अपना एक भी तेरा नहीं।
बाप बेटा बेटी औरत भाञ्जा ख़्वाह ४अख़वान है ॥३॥
और किसी को क्या कहें यह जिस्म भी तेरा नहीं।
अज्ञान से इस जिस्म फ़ानी में तुझे अभिमान है ॥४॥
ग़ौर कर अपनी असल पर ज्ञान गीता को समझ।

१. देहाभिमान। २. व्यर्थ। ३. नाशवान। ४. बड़ा भाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कृष्ण तेरा आत्मा है गीता का यह फ़रमान हैं ॥५॥
कृष्ण भक्ति हो न जिस में ज्ञान गीता से ५नाअहल।
शक्ल ख़ाह इनसान की वह निश्चयही हैवान है ॥६॥
अपने ६वायदे को निभा जो पेट में मां के किया।
ज्ञान ७हासिल मैं करूंगा गर्भ का ८पैमान है ॥७॥
पूरा कर इकरार अपना ममता और लालच को छोड़।
दर बदर क्यों है भटकता किसलिये हैरान हैं ॥ ८ ॥
हर समय दुःखों का शिक्वा और न होने का गिला।
कृष्ण में भक्ति नहीं बस इसलिये ९गिरयान है ॥ ९ ॥
कामनाओं ने है तुझ को यूँ घसीटा जिस्म में।
छोड़ ख़्वाहिश देख ख़ुद को, तू ही तो, १०यज़दान है ॥१०॥
कर्म कर निष्काम सारे ईश्वर पूजा के लिये।
उपकार में जीवन बिताना कारे नेक इनसान है ॥११॥
भक्ति भी निष्काम करता जो अनन्य श्री कृष्ण में।
अर्जुन और ऊद्धव का दरजा पाता वह इनसान है। १२॥
निष्काम कर्म और भक्ति से जब मन सफ़ा हो जाता है।
होता है अनुभव कि मेरा आत्मा भगवान है ॥१३॥
मैं नहीं हूँ जिस्म ख़्वाह वह स्थूल सूक्ष्म कारण हो।

५. नावाकिफ। ६. इकरार। ७. प्राप्त। ८. इकरार। ९. रोता है। १०. परमात्मा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जीवन मेरा है कृष्ण वह तो प्राण का भी प्राण है ॥१४॥
हर ज़ुबाँ में बोले खुद वह देखता हर आँख में।
दिल हर किसी का उसका ११मस्कान जानकी भी जान है ॥
मुझमें वह है उसमें मैं हूँ एक है ब्रह्म सत् स्वरूप।
आकाश की मानिन्द है फैला हस्ति है वह ज्ञान है ॥१६॥
मुझ से बाहिर कुछ नहीं है सत् असत् सब मैं ही हूँ।
वाक्य यह भगवान का खुद इसमें ही प्रमाण है ॥१७॥
निश्चय ही कैवल्य मुक्ति पायेगा पूरण वही।
जिसका सबकुछ कृष्ण चरणों में हुआ १२कुरबान है ॥१७॥

११. घर। १२. न्योच्छावर।

★ ख़ुदी की भेंट ★

अग़र १मुरशिद के क़दमों में, ख़ुदी को २तू फ़िदा कर दे।
तुझे बस ३खाके-पा उनकी, उसी दम में ख़ुदा करदे ॥१॥
४वसल में बस रुकावट है, यही तेरी ख़ुदी अपनी।
ख़ुद ख़ुदा तू हक़ीक़त में, ख़ुदी को बस फ़ना कर दे ॥२॥

१. गुरुदेव। २. न्योच्छावर। ३. चरणधूड़ी। ४. मिलाप।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जो जीते जी फना होवें ५बक़ा कब दूर हैं उनसे।
निक़ल ६मौहूमा-हस्ति से, असल अपनी बक़ा करदे ॥३॥
७क़तल होने की लज्ज़त को चखा है जिसने जीते जी।
हुआ वह ८जाविदाँ ज़िन्दा, खुदी खुद से जुदा करदे ॥४॥
९बशर १०बेशर हक़ीकत में, खुदा का नूर है सचमुच।
खुदी शर एक हैं दोनों, तू इनको ११ज़ेरपा करदे ॥५॥
१२ज़ुबाँ का पास कर अपनी, न इहसां भूल तू उसका।
१३हमल में जो किया वाइदा, उसे तू अब १४एफ़ा करदे ॥६
१५नसीबा चमक उठ्ठेगा, नहूसत दूर होगी सब।
१६क़वा १७वक़्फ़े-अमल करदे, ज़ुबां १८वक्फ़े-दुआ करदे ॥७
करूंगा ख़िदमते-मुरशिद, १९बसद्-इजज़ो-रज़ा पूरण।
(करूंगा सद्गुरु सेवा मैं जानो-दिल से सदा पूरण)।
निशाँ यह २०नेकबख़्ती का, मुझे २१मौला २२अताकरदे ॥८

---

५. अमृतपना। ६. कल्पित। ६. मिथ्या अभिमान। ७. तत्त्वमसि महावाक्य द्वारा देह अभिमान के त्याग का आनन्द। ८. शाश्वत ९. इनसान। ११. बुराई से रहित। ११. चरणों के नीचे। १२. अपने इक़रार का ध्यान कर। १३. गर्भ। १४. पूरा। १५. भाग्य। १६. इन्द्रियां। १७. निष्काम कर्म में लगादे। १८. प्रार्थना में अर्पण करदे। १९. अत्यन्त निर्मानता और श्रद्धा से। २०. सौभाग्य। २१. परमात्मा। २२. दे देवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ कैलासपति ★

हृषीकेश श्री कैलासाश्रम के महामण्डलेश्वर अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी विष्णुदेवानन्द जी महाराज के चरणों में भेंट।

हमें नींद से आन जगाया है, कैलासपति की जय होवे।
दुःख दर्द से आन छुड़ाया है, कैलासपति की जय होवे ॥१॥
हम शरीर हैं इतना समझते थे, दिन रात इसी में उलझे थे
हमें साक्षी देह का बताया है, कैलासपति की जय होवे ॥२॥
नित्य विषयों में लम्पट रहने थे और क्रोधाग्नि से जलते थे
ज्ञान अमृत से शीतल बनाया है, कैलासपति की जय होवे ॥३
हम अन्धेरे में ठोकरें खाते थे और पीड़ा से कुरलाते थे।
अब ज्ञान का दीप जगाया है, कैलासपति की जय होवे ॥४॥
हमें मोह माया के फंदों से और जगत् के झूठे धन्दों से।
ऊपर खैंच कर बाहिर निकाला है कैलासपति की जय होवे॥५
जो तीनों देहों का साक्षी है वह सच्चिदानन्द अविनाशी है।
वही पूरण ब्रह्म बताया है कैलासपति की जय होवे ॥६॥

★ तड़प

तड़प में तेरी तड़प रहा हूँ तड़प मिटा दे तड़पाने वाले।
बग़ैर मिलने तड़प न हरगिज़, मिटेगी सुन ले रुलाने वाले॥१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भटक रहा हूँ मैं दर-बदर में, न चैन बाहिर मुझे न घर में।
फंसी है क़िशती भँवर में मेरी, निकाल बाहिर बचाने वाले ॥२॥
न बल्ली पहुँचे न चप्पू लगता, हवा मुख़ालिफ़ न ज़ोर लगता।
सिवाय तेरे है कौन सुनता, तू पहुंच डुबते बचाने वाले ॥३॥
मैं फाड़ दिल को दिखाऊं किसको, मैं बेकसी को बताऊं किसको।
वह ख़ुद है रोता सुनाऊं जिसको मिटादे ग़म ग़म मिटाने वाले
थी जिनपे उम्मीद न कोई पहुंचा, न भाई १वालिद न २ताया चच्चा
ग़ज़ब अभी तक न तू भी पहुंचा, दिलों में सब के ओ रहनेवाले
है वक़्त अब भी मुझे बचा लो; ग्राह के फंदे से गज्ज छुड़ा लो।
मेरी भी बिगड़ी बनादो पूरण, हो बिगड़ी सबकी बनाने वाले।

१. पिता। २. पिता का बड़ा भाई।

★ तेरा कहते कहते ★

मैं खो जाऊं खुदको ख़ुदा कहते कहते।
मिलूं तुझसे तुझको तेरा कहते कहते ॥ १ ॥
सफ़र जिन्दगी का ख़तम यूँ हो मेरा।
१जज़ा को भी हरदम २रज़ा कहते कहते ॥ २ ॥
न भूलूं कभी तेरी ३रहमत को हरगिज़।
४जफा को भी तेरी ५वफ़ा कहते कहते ॥ ३ ॥

१. कर्मफल। २. तेरी इच्छा। ३. कृपा। ४. कष्ट। ५. नेकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सिवा तेरे मुझमें रहे कुछ न बाकी।
ख़ुदी को मिटा दूं ख़ुदा कहते कहते ॥ ४ ॥

तू आ मिल मेरे दिल की है रौशनी तू।
६ख़ता मुआफ़ करके ७अता कहते कहते ॥ ५ ॥

तू ८राज़िक़ है सबका ज़मीं आसमाँ में।
मिटें ग़ैरख़्वाहिश दुआ कहते कहते ॥ ६ ॥

हटूंगा न पीछे भले मुझको मोड़ें।
मेरे दर्द की तू दवा कहते कहते ॥ ७ ॥

तू है रौशनी चाँद सूरज की दिल की।
मिटे ९तीरगी १०माहलक़ा कहते कहते ॥ ॥ ८ ॥

भले ही न मुझको कहे तू है मेरा।
मरूं दर पे तेरे तेरा कहते कहते ॥ ९ ॥

तू पूरण है सब में फ़ना कुछ नहीं है।
११बक़ा हो गया हूँ बक़ा कहते कहते ॥ १० ॥

---

६. ग़लती। ७. कृपा। ८. रोज़ी (जीविका) देने वाला। ९. अन्धेरा (अज्ञान)। १०. चन्द्रमुख (प्रकाशमय)। ११. अमृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ मुहब्बत ★

यह सब सूरत खुदा की है,
यह [1]जलवा सब [2]सिफाती है।
निगाहे·ग़ौर से देखो,
सिफ़ाती खुद यह [3]ज़ाती है ॥ १ ॥

मुहब्बत ज़ात-रब्ब् की खुद,
यह शकलें बन के आई है।
नक़ल से जो हटे उसको,
असल फिर नज़र आती है ॥ २ ॥

फंसा है जब तलक दिल यह,
[4]जहाँ के [5]नक़्शे—रंगीं पर।
वसल [6]नामुमकिन है [7]रब्ब् का
भले पीटे वह छाती है ॥ ३ ॥

[8]वसाले-यार गर चाहो,
मिलो तुम [9]वासिलों से जा।
कि [10]हिकमत यार के मिलने
की उनको ख़ूब आती है ॥ ४ ॥

---

१. जाहिरी दृश्य। २. गुणों का। ३. स्वरूप का। ४. संसार। ५. विचित्र चित्र। ६. असम्भव। ७. परमात्मा। ८. परमात्मा का मिलाप। ९. मिले हुये(ब्रह्मनिष्ठ)। १०.तरीका, युक्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जगाकर [11]रूह को अपनी
खुदा का [12]इश्क़ पैदा कर।
मुहब्बत [13]सूरते-महबूब
वह बासिल बन के आती है ॥ ५ ॥

तड़प मिलने की हो [14]अख़लास
[15]हिम्मत और [16]अक़ीदत [17]शुक्र।
यह पाँचों दुरुस्त जिस दिल में
मुहब्बत रंग लाती है ॥ ६ ॥

मुहब्बत इस [18]हक़ीक़ी का
अजब [19]पुर-लुत्फ़ है [20]शेवा।
बिठा [21]आग़ोश में अपने
[22]मये वहदत पिलाती है ॥ ७ ॥

मुहब्बत ही [23]मुसर्रत है
यह शक्लें सब हैं [24]मफ़रूज़ा।
मुहब्बत अव्वल आख़िर है
जो पूरण से मिलाती है। ८ ॥

---

११. आत्मा । १२. प्रेम। १३. प्रियतम की मूर्ति । १४. शुद्ध हृदय। १५. पुरुषार्थं तत्परता। १६. श्रद्धा। १७. संतोष। १८. सच्ची । १९. आनन्द भरा हुआ। २०. तरीका । २१. २१. गोदी। २२. अद्वैत की शराब (परमात्मा से एकता का बोध) २३. आनन्द, खुशी। २४. कल्पित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

★ आरिफ़ ज्ञानवान् ★

१ख़ुदी को छोड़ कर जिसने
है समझी २रमज़े-इरफ़ाना।
३फ़ना से उठ गया वह ही
४बक़ा उसका है ५काशाना ॥ १ ॥

तिलिस्मी-सैरगाह दुनिया
फ़ना है ज़ात से अपनी।
हक़ीक़ी इसको समझे जो
वही मानो है दीवाना ॥ २ ॥

निगाह ७हक्क्-बीं खुली जिसकी
है जागा ८ज़ात अपनी में।
वही है ॐमरदे मैदाँ और वही
९आक़िल वही १०दाना ॥ ३ ॥

११फ़ज़्ल अपने से १२साक़ी ने
१३पिलाया जाम भर जिसको।
कहाँ उसको है रहता याद
कहीं आना कहीं जाना ॥ ४ ॥

---

१. देह अभिमान। २. वेदान्त का गुह्य रहस्य, ब्रह्मात्मा का एकत्व। ३. मृत्यु। ४. अमृत। ५. घर। ६. जादू की बनी हुई। ७. ब्रह्मदृष्टि। ८. स्वरूप। ॐबहादुर ९. बुद्धिमान। १०. स्याना। ११. कृपा। १२. गुरुदेव। १३. महावाक्य प्रदान किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

[१४]मये-वहदत् की मख़मूरी
नसीबे में मिली जिसको।
उसे [१५]मोहमल है हो जाता
सभी करना करवाना ॥ ५ ॥

[१६]असीराने-हवा-ओ-हिर्स
मये-वहदत से है [१७]महरूम।
[१८]मगस मुरदार पर ख़ुशदिल
कहाँ [१९]हिम्मते-परवाना ॥ ६ ॥

छुड़ाती रंजो-ग़म से है
मये- तौहीद साकी की।
[२०]मुखन्नस की कहाँ किस्मत हैं
पीते जो हैं मरदाना ॥ ७ ॥

गुज़रना अपनी हस्ति से
न कुछ बाकी निशाँ रखना।
यह राहे-इश्क़ हैं मानो
बिन आई मौत मर जाना ॥ ८ ॥

[२१]मुसर्रत और ख़ुशी झलके
हर एक [२२]किरदारे-आरिफ़ से।

---

१४. एकत्व की शराब। १५. तुच्छ व्यर्थ। १६. अनात्म इच्छा और लालच के कैदी। १७. रहित। १८. मक्खी। १९. पतंगे की हिम्मत। २०. खुसरा बुज़दिल २१. आनन्द। २२. ज्ञानी की क्रिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नहीं [२३]ताज़ीस्त-क़ैदी को
इलम [२४]अत्वारे-शहाना ॥ ९ ॥
[२५]सरूरो-इल्मो-हस्ति का
[२६]मुजस्मा आरिफ़े-कामिल ।
वही [२७]यज़्दान है पूरण
जो वाक़िफ़ [२८]रम्ज़े-यज़्दाना ॥ १० ॥

२३. जीवन भर का क़ैदी । २४. बादशाहों के तरीके २५. सच्चिदानन्द । २६. विग्रह मूर्ति । २७. ब्रह्म । २८. ब्रह्मविद्या का रहस्य ।

———

श्री गुरुदेव के पवित्र चरणकमलों में भेंट

[१]महफ़ल में तेरी फिर से दीवाने आ गये हैं ।
आशिक न, इश्क के यह [२]अफ़साने आ गये हैं ॥१॥
[३]तपशे-जिगर का इनकी यह [४]आफ़ताब है शोला ।
दीदार की [५]मशल से भड़काने आ गये हैं ॥२॥
ऐ [६]शमए-रूये-साक़ी ! [७]परतव [८]हुसन पे तेरे ।
हस्ति जलाने अपनी [९]पर्वाने आ गये हैं ॥३॥
[१०]सोज़े-जिगर से तप कर हालत हुई जो दिल की ।

१. सभा । २.कहानियां । ३.हृदय की गरमी । ४.सूर्य । ५.मशाल । (जलती हुई लकड़ी) । ६. गुरुदेव के मुखरूप दीपक । ७. झलक । ८. सौंदर्य । ९. पतंगे । १०. हृदय की जलन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

दरदे-जिगर के फोले दिखलाने आ गये हैं ॥४॥
बीमार इश्क के यह दीदार का जो ११दरमाँ।
१२हाज़िक-हकीम से अब करवाने आ गये हैं ॥५॥
१३चारा नहीं है सूझा १४जुज़ इसके और कोई।
आंखों में १५खाके-पायत डलवाने आ गये है ॥६॥
कदमों पे तेरे १६सदके कई पागये १७शफ़ा।
१८बिन्द-मोतिया की आंखें बनवाने आ गये हैं ॥७॥
१९वहदत् की मय का जुर्रा काफ़ी हमें है साक़ी।
ख़ाकी बदन की सूरत २०पैमाने आ गये हैं ॥८॥
वहदत् के घर की अपनी २१जिहालत से बन्द-ताकी।
२२नज़रे-कलीद् से तेरी खुलवाने आ गये हैं ॥९॥
कुरबान तेरे साकी सब पर २३फ़ज़ल है तेरा।
वहदत् की मय के २४शाइक़ मस्ताने आ गये हैं ॥१०॥
२५अश्कों से अपने धोयें कदमों को तेरे साक़ी।
यह जिस्मो जानो दिल को २६नज़राने आ गये हैं ॥११॥
तू आफ़ताब बनके रौशन जहाँ में सारे।
२७तारीक-दिल को रौशन करवाने आ गये हैं ॥१२॥

---

११. इलाज। १२. तजरबाकार वैद्य। १३. आश्रय। १४. विना। १५. तेरी चरण धूलि। १६. न्योच्छावर। १७. स्वस्थता। १८. मोतियाबिन्द। १९. अद्वैत की शराब का एक घूंट। २०. गिलास। २१. अज्ञान। २२. दृष्टिरूप चाबी। २३. कृपा। २४. शौक़वाले, इच्छुक। २५. आँसुओं। २६. भेंट। २७. अंधेरे वाला हृदय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

२८वहदत् के रंग में ख़ुद को रंगा है ख़ूब २९साकी।
यह दिल का टुकड़ा पूरण रंगवाने आ गये हैं ॥१३॥

२८. अद्वैत। २९. गुरुदेव।

मृत्यु के समय एक भक्त से एक साथी के सवाल (प्रश्न) ले चले

किस लिये आये यहां और क्या हैं १सामां ले चले।
फूलों से क्या २ख़ारों से भर अपने ३दामां ले चले ॥१॥

४वादा करके आये थे जो ५हम्ले-मादर में अज़ीज।
पूरा करके हैं चले या उसका ६अरमां ले चले ॥२॥

है सफ़र लम्बा वह सिर पर चलना भी ७दुशवार वहाँ।
दर्द होगा राह में उसका क्या है ८दरमाँ ले चले ॥३॥

पुर-ख़तर ९तारीक है वह १०मन्ज़िले-दीगर-जहाँ।
दूर ११ज़ुलमत करने को क्या १२शमये-ताबाँ ले चले ॥४॥

१३शहवतो-कीना-ग़ज़ब को जीत कर जाते हो या।
साथ ही अपने हो क्या तुम यह १४सलाखां ले चले ॥५॥

---

१. सामान। २. काँटों। ३. झोलियाँ। ४. इकरार। ५. माता के गर्भ में। ६. (न पूरा करने के कारण) शोक। ७. कठिन। ८. इलाज। ९. अंधेरा। १०. दूसरे जहान के रहने का स्थान। ११. अन्धेरा। १२. जगता हुआ दीपक। १३. काम द्वेष क्रोध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जिन्दगी इनसानी का था जो भी १५मुद्दआ ऐ अज़ीज़ ।
१६हल्ल् कियाहैउसकोक्या यादिलको१७नालाँले चले ॥६॥
खिलखिलाया करते हो याँ वाँ भी खुश रहने की या ।
ग़म की क्या हो गठड़ियां सिर बाँध,१८नादाँ ले चले ॥७॥
१९मारिफत से २०अनुसरी-काशाना को तोड़ा है या ।
जिस्म खुद को जान कर २१हमराह हो२२जन्दाँ लेचले ॥८॥

१५. तात्पर्य । १६. सिद्ध । १७. रोते हुये । १८. अज्ञानी । १९. ब्रह्मविद्या । २०. महाभूतों का घर देह । २१. साथ । २२. जेलखाना ।

★ भक्त का उत्तर ★

क्या बतायें तुझको १हमदम क्या है सामाँ ले चले ।
२चश्मों में ३उल्फ़त भरे हम ४अबरे-बाराँ ले चले ॥१॥
५हस्रते-दीदारे-जानाँ ६बज़्म में लाई हमें ।
बज़्म से हम हस्रते-दीदारे-जानाँ ले चले ॥२॥
रात दिन आहों का ७मजमा तड़प में दीदार की ।
८दस्तबस्ता-माज़रत् हम ९पेशे-रहमाँ ले चले ॥३॥
मिलने पर कुछ माँगे मुझसे गर १०ज़याफ़त के लिए ।
११चश्महाये-जामपुर-नम १२सीना-बिरयाँ ले चले ॥४॥

१. साथी । २. नेत्रों । ३. प्रेम । ४. वर्षा के बादल । ५. प्रियतम के दर्शन की इच्छा । ६. सभा (संसार) । ७. ढेर । ८. हाथ जोड़े हुए क्षमा । ९. परमात्मा के सामने । १०. खाने-पीने । ११. जल से भरे नेत्रों के प्याले १२. भूना हुआ हृदय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गर वह फ़रमायें हमें दरकार है ठंडी हवा ।
[14]हिजर की वह सरद आहें कई हज़ारों ले चले ॥५॥
इससे बिहतर और तुहफ़ा है नहीं कुछ मेरे पास ।
[14]बेश-कीमत सिर समझ कर [15]नज़रे-जानाँ ले चले ॥६॥
[16]ख़ाके-पाको चूमकर मैं सिर रखूंगा कदमों पर ।
फिर उठाऊंगा न हरगिज़ बस यह सामाँ ले चले ॥७॥
गौर कर इस [17]पद से पूरण छोड़ दे अपनी ख़ुदी ।
ख़ुश रहो हर जा जहाँ पे तुझको [18]जानाँ ले चले ॥८॥

---

१३. जुदायगी । १४. बहुत मूल्य वाला । १५. प्रियतम की भेंट । १६. चरण धूलि । १७. नसीहत, उपदेश । १८. प्रियतम परमात्मा ।

★ फ़रमाने-इलाही-भगवदादेश ★

जो मुझ से प्यार करता है, उसी से प्यार होता है ।
जहाँ में है [1]मिसल प्यारे से सबका प्यार होता है ॥१॥
जहाँ की ऐशो-इशरत में, है [2]घ़लतां रात-दिन जो भी ।
मुहब्बत मेरी से ख़ाली, [3]सगे-मुरदार होता है ॥२॥
जो ख़ुद को जिस्म समझे हैं, ख़ुदी के मानो हैं पुतले ।
बुलायें भी अगर मुझको, तो साफ़ इनकार होता है ॥३॥
नहीं [4]लज़ाते-दुनिया में, फंसे दीदार का [5]तालिब ।

---

१. कहावत । २. लम्पट । ३. मुरदा खाने वाला कुत्ता । ४. विषयों के आस्वादन । ५. इच्छुक ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

६हक़ीक़त-आशना आशिक़ का मुझ से प्यार होता है ॥४॥
चढ़ाता हूँ परख की मैं कसौटी पर हर इक को ही ।
मिसल सोने के ख़ालिस जो उसे दीदार होता है ॥५॥
मैं रहता हर घड़ी तय्यार उसे मिलने को आगे से ।
जो ७तारक बन मुझे मिलने को ही तय्यार होता है ॥६॥
ख़ुदी को काटकर जड़ से जो सौंपे मुझको अपना आप ।
मैं उसके पास वह मेरी ८बग़ल-का-यार होता है ॥७॥
पिलाता ९जामे-वहदत् हूँ उसे भर भर के मैं ख़ुद ही ।
मेरे ही इश्क़ का ख़ालिस जो ही बीमार होता है ॥८॥
१०मये-तौहीद से मख़मूर जो यकजाँ मुझ से है हर दम ।
जहाँ रहता ११ज़ियारत-गाह १२दरो-दीवार होता है ॥९॥
भले ही लोग दुनिया को ज़मीं आसमाँ कहते ।
उसे मालूम पूरण का खिला गुलज़ार होता है ॥१०॥

६. सच्चाई को जानने वाला । ७. त्यागी । ८. अत्यन्त समीप रहने वाला । ९-१०. अद्वैत की शराब । ११. पूजा के स्थान । १२. दरवाज़ा और दीवार ।

★ प्रार्थना ★

तुझे मालूम है मैं क्यों यह १बारे-ग़म उठाता हूँ ।
ग़रज़ किससे मैं २जूये-अश्क हर शब को बहाता हूँ ॥१॥

१. शोक का बोझा । २. आँसुओं की नदी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नहीं मालूम था मुझको बिछुड़ना जुलम ढायेगा।
खुदी के जाल में फँसकर पड़ा मैं फड़फड़ाता हूँ।।२।।

हर इक से ३गिरियाज़ारी की मगर सुनता नहीं कोई।
हैं मतलब के सभी हमदम तुझे साथी बनाता हूँ।।३।।

मदद कर अब तुही मेरी गढ़े से अब निकालो तुम।
फ़सा या रब्ब ! हूँ दलदल में तेरे दर पर कराहता हूँ।।४।।

जिसे देखो फँसा खुद वह सहारा लूँ तो किसका लूँ।
तू सबका ४खैर-ख्वाह ईश्वर मुआफी पिछली चाहता हूँ।५।

तेरी ही ५पाक-रहमत का भरोसा मुझको बाकी है।
६गुज़शता से हूँ पछताता ७पनाह तेरी में आता हूँ।।६।।

उमड़ते इन गुनाहों का कहीं धब्बा न लग जाये।
गिनो तेदाद मत इनकी तुझे मैं सच्च बताता हूँ।।७।।

हूँ इतना गरचे ८आलूदा ९फ़ज़ल का फिर भी१०तालिब हूँ।
फ़ज़ल का यह ढंडोरा है "गुनाहों को मैं खाता हूँ" ।।८।।

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ।।९।।

११पनाहगीर का१२मुहाफिज़ हूँ तेरा इकरार है१३मोहकम्।
करो पूरा इसे अब तुम तुझे मैं याद दिलाता हूँ।।१०।।

---

३. रोना (दुःख) कहा। ४. शुभेच्छु। ५. पवित्र कृपा। ६. पिछली बीती हुई। ७. शरण। ८. पापी गंदा। ९. कृपा। १०.इच्छुक। ११. शरणागत। १२. रक्षक। १३. पक्का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥११॥
सुनो अब [14]इल्तिजा पूरण पकड़ कर कान है तौबा।
फ़ज़ल कर रह्म कर या रब्ब्! तुझे दिल में बसाता हूँ।१२।

१४. प्रार्थना।

❀ शिकायते-दुनिया और ज्ञानवान का उत्तर ❀

किसी ने पूछा था दुनिया यह क्या मालूम होती है।
बहुत खोजा हमें तो यह सज़ा मालूम होती है।।१।।
हज़ारों रंजो-ग़म इसमें ठिकाना है नहीं जिनका।
हर इक का दिल है रंजीदा गुनाह मालूम होती है ॥२॥
नहीं आराम ज़रा इसमें जिसे देखो है [1]अफ़सुरदा।
भरी यह [2]बुग़ज़ [3]कीना से हवा मालूम होती है ।।३।।
लड़ाई और झगड़े है फ़सादात् [4]फ़ितनाबाज़ी है।
दगा और झूठ की आंधी [5]बपा मालूम होती है ॥४॥
न [6]फ़रहत चैन सुख इसमें जिधर देखो [7]फ़कत[8]कुलफ़त।
[9]तकब्बर और [10]बखीली की [11]वबा मालूम होती है।५।

---

१. मुरझाया हुआ, (अप्रसन्न चित्त)। २. कपट। ३. द्वेष। ४. फसाद की जगह। ५ फैली हुई। ६. आराम। ७. केवल। ८. दुःख ९. अहंकार। १०. बुराई। ११. गन्दी हवा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जरा सी च्योंटी से लेकर बड़े जो बाबा आदम तक ।
तिलों के कोह्लू में पिसने की जा मालूम होती है ॥६॥
शहिन्शाह पल में है [१२]नादार ग़रीब होते शहिन्शाह हैं।
यह है इक खेल जादू का बना मालूम होती है ॥७॥

★ ज्ञानवान का उत्तर ★

कहानी कह चुका अपनी था जब वह पूछने वाला ।
तो आरिफ़ ने कहा हम को ख़ुदा मालूम होती है ॥८॥
तेरे ही [१३]ख़ियाले-ज़ाहिर से सज़ा है या गुनाह दुनिया ।
मगर [१४]बातिन से गर देखें [१५]अता मालूम होती है ॥९॥
[१६]शरीयत और [१७]तरीकतदाँ हैं कहते इसके बारे में ।
सज़ा तो यह नहीं हरगिज़ [१८]रज़ा मालूम होती है ॥१०॥
हकीक़त देखने वाले यक़ीं रखते हैं यूँ इसका ।
[१९]ज़हूरे-हक्क् का बाग़ीचा खिला मालूम होती है ॥११॥
किसी आशिक़ ने दुनिया के मुतल्लिक़ यूँ कहा है सुन ।
मेरे माशूक़ की नाज़ुक अदा मालूम होती है ॥१२॥
[२०]बचश्मे-मारिफ़त देखो हटाकर दूई का परदा ।
है वाहिद [२१]मजमा कसरत का बना मालूम होती है ।१३।

१२. भूखा नंगा । १३. बाहिरी ख़ियाल । १४. अन्दर । १५. कृपा । १६. कर्मकाण्ड । १७. उपासक । १८. ईश्वर इच्छा । १९. परमात्मा के प्रगट होने का स्थान । २०. ब्रह्मविद्या की दृष्टि । २१ पुंज ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ख़ुदा की हस्ति से है हस्त उसी से ही हुई ज़ाहिर।
तुझे बस ख़ियाल अपने से जुदा मालूम होती है ॥१४॥
२२तिला से बनती अँगूठी उसी में ही ख़तम हो फिर।
वह अव्वल और आख़िर में तिला मालूम होती है ॥१५॥
जो अव्वल और आख़िर में वही है दरमियाँ में भी।
सही कर ख़ियाल फिर देखो ख़ुदा मालूम होती है ॥१६॥
२३मुकद्दस-ज़ात पूरण में नहीं दूई की गुंजाइश।
हमें तो अब हर इक सूरत ख़ुदा मालूम होती है ॥१७॥

---

२२. सोने। २३. शुद्ध स्वरूप।

★ भगवद्-स्तुति ★

परमात्मा कहाँ है और क्या है:—

यह दिल उसी के ही सब मकाँ हैं। हो कहते क्यों फिर वह लामकाँ है ।१
है १ज़ात अपनी से सब में रौशन। न पहुँचे उसमें अकल का २तौसन ।२
न आंख पहुंचे न हाथ पहुंचे। न पाओं पहुंचे न बात पहुंचे ॥३॥
न रंग उसमें न रूप उसमें। न छाया उसमें न धूप उसमें ॥४॥
३ज़मीं नहीं वह हवा नहीं है। न आग, पानी, ४ख़ला नहीं है ॥५॥
न आग उसको जला है सकती। ज़ुबाँ न उसको बुला है सकती ॥६॥
न पानी उसको गला है सकता। न ५बाद उसको उड़ा है सकता ।७

---

१. स्वरूप। २. घोड़ा। ३. पृथिवी। ४. आकाश। ५. वायु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

न ऊंचापन है न उसमें पस्ती । उसी में सारी दुनिया है बस्ती ।८
ज़मीं है पानी पे जिससे काइम । हुक्म में उसके है [६]बह्‌र [७]दाइम ।।९
है सब के अन्दर यह [८]ज़ूद उसका । बना है ख़ुद वह [९]वजूद सबका ।१०
ज़ुदा नहीं है वह [१०]इल्मो-हस्ति । हर एक हस्ति की वह है हस्ति ।।११
है इतना नज़दीक पर लापता है । सिवाय उसके यह सब फ़ना है ।१२
न जा से अपनी कभी हिला वह । न ग़ैर होकर कभी मिला वह ।१३
है हस्ति ख़ुद वह हर इक बक़ा की । ख़बर वह देता हर इक फ़ना को ।१४
न उसमें जाग्रत न उसमें सुपना । न [११]ख़्वाबेगफ़लत न बनना मिटना ।१५
वह एक है और हमेशा इक रस । न मौत उसकी न पैदा [१२]अजकस ।१६
उसी के ज़ाहिर में सब निशाँ हैं । मगर वह [१३]बातिन में बेनिशाँ है ।१७
न कान उसके मगर है सुनता । हर एक दिल में है जाल बुनता ।।१८
न आंख उसकी वह देखे सब कुछ । न हाथ उसके वह पकड़े सब कुछ।१९
ज़ुबाँ नहीं पर वह सबमें बोले । [१४]अदल के कांटे पे सबको तोले ।।२०
न जाना जाये जनाये सब कुछ । न देखा जाये दिखाये सब कुछ ।।२१
मजाल किसकी बचे जो नज़र से । हैं चाँद सूरज [१५]दवाँ वह डर से ।।२२
न आज तक है कभी वह बदला । यह जिस्म बदले पर वह न बदला ।२३
उसी से आवाज़ को हैं सुनते । उसी से षट रस को सब हैं चखते ।।२४
उसी से महसूस सख़्ती नरमी । उसी से अनुभव हो सरदी गरमी ।।२५
उसी से रूप है नज़र में आता । उसी से गंध को है सूंघा जाता ।२६

---

६. समुद्र । ७. हमेशा । ८. बल । ९. शकल । १०. चैतन्य सत्ता । ११. सुषुप्ति । १२. किसी से । १३. अन्दर । १४. न्याय, इनसाफ । १५. दौड़ रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

है [१६]नूर उसका अकल में मन में। उसी की ताकत है सारे तन में ॥२७॥
हर किसी का वह [१७]खैर-ख्वाह है। [१८]आज़ुरदा खातिर की वह [१९]पनाह है।२८
हर एक मुशकिल का [२०]हल्ल उसी से। कर्म सब का है फल उसी से।२६
उसी से रौनक है सब जहाँ की। उसी से आबादी इस मकाँ की ॥३०
वही चमकता हर इक के देह में। हो जैसे अग्नि से लाली लोह में।३१
उसी से सुख का है अनुभव होता। उसी से दु ख का है अनुभव होता।३२
है [२१]जामो-साक़ी-ओ-मय की हस्ति। है [२२]रिंदों की वह ख़ुमारो-मस्ति।३३
है ऐश-महफ़ल में खिलखिलाता। है रंजो-ग़म में वह बिलबिलाता।३४
[२३]ख़ुदी से ख़ुद को है समझे कैदी। ख़ुदी को छोड़े मिले आज़ादी।३५
है [२४]इल्मो-हस्ति [२५]सरूर-दाइम। है [२६]ज़ात पूरण में अपनी काइम।३६

१६. प्रकाश। १७. शुभिच्छु। १८. दु.खी दिल। १६. शरण। २०. खुलना। २१. पियाला (महावाक्य) और उपदेष्टा और शराब (वृत्ति) २२. शराब पीने वाले सत्सङ्गी, अद्वैत अनुभव करने वाले। २३. देह अभिमान। २४. ज्ञानस्वरूप, सत्, नित्य, आनन्दस्वरूप। २५. स्वरूप सत्ता।

अहले याद

परमात्मा को याद करने वालों की महिमा

याद में [१]हक्क् की जो रहते हर घड़ी [२]मख़मूर हैं।
क्या कहूँ मैं उन के [३]बारे वह तो [४]अरशी-नूर हैं ॥१॥
[५]शहवतो कीना [६]ग़ज़ब और [७]बुग़ज़ लालच नीज़ [८]हसद।

१. परमात्मा। २. मस्त। ३. संबन्ध में ४. आकाश में चमकने वाले प्रकाश। ५.काम और द्वेष। ६. क्रोध। ७. वैर। ८. मात्सर्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

नफ़रतो-मूज़ी ख़ुदी सब उनसे रहते दूर हैं ॥२॥
जिस्म और जिस्मानी सिफतें छू नहीं सकतीं उन्हें।
हक्क् से हैं यक्जाँ हमेशा हक्क् में ही ९मामूर हैं ॥३॥
१०लाज़वालो-जाविदाँ हस्ति सरूरो-इल्म को।
समझें अपना आप रहते इस लिये ११मसरूर हैं ॥४॥
१२पुर हमेशा १३जामे-वहदत् दम्बदम् फिर १४नोश भी।
बेख़बर वह १५ग़ैरे-हक्क् से हक्क् की १६मय से चूर हैं ।५॥
अपने १७अज़ली-हुस्न पर वह आशिको-शैदा हुये।
कब भुला सकते उन्हें यह १८हुस्ने-फ़ानी हूर हैं ॥६॥
किस हुसन के वह १९घ़नी हैं कौनसी दूं मैं मिसाल।
२०मिह्र की उनकी निगाह से २१मिहरो-माह के नूर हैं ॥७॥
मस्त अपनी मस्ती से वाँ ग़ैर की तो जा नहीं।
२२बह्रे-वहदत् में कहाँ २३नाजिर-नज़र मन्जूर हैं ॥८॥
२४घ़ोताजन हैं इस क़दर फुरसत् नहीं आने की बाहर।
२५रजो-राहत में हैं २६यकसाँ दर्दो-ग़म काफ़ूर हैं ॥९॥
मिटती हैं सब २७कुलफ़तें दीदार से गुफ़्तार से।

---

९. जुड़े हुये। १०. अच्युत और सदा सच्चिदानन्द। ११. प्रसन्न। १२. भरा हुआ। १३. अद्वैत का प्याला। १४. पीते। १५. परमात्मा से भिन्न। १६. शराब। १७. अनादि सौंदर्य आत्मस्वरूप। १७. नाशयुक्त अप्सराओं का सौंदर्य। १९. भरे हुये। २०. कृपा। २१. सूर्यचाँद। २२. अद्वैत के समुद्र। २३. द्रष्टा, दर्शन, दृश्य। १४. डुबकी लगाये हुये। २५. दुःख-सुख। २६. एकरस। २७. तकलीफें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सदियों के बीमारों की ख्वाह कितने ही २८रंजूर हैं ॥१०॥
२९ख़ाके-पा उनकी तो मिलनी गरचे है ३०नायाब ही ।
३१रोज़ो-सब दीदार हासिल क्यों कहूँ वह दूर हैं ॥११॥
ढूंडने पर भी है मुशकिल मिलना ३२अहले-याद का ।
३३ख़ुशनसीबो से वह पूरण ३४रूबरू पुर नूर हैं ॥१२॥

२८. दुःखी। २९. चरण धूड़ी। ३० दुर्गम । ३१. दिन-रात, (सदा) । ३२. याद करने वालों । ३३. सौभाग्य । ३४. सामने प्रकाशमान ।

★ चेतावनी ★

बिगड़ती जा रही है बात् बनालो कुछ सँवरने की ।
सँवरना जिसको समझे हो वह है बात बिगड़ने की ॥१॥
भले सोया तो सो जाये न जाने आग है घर में ।
अगर जागा भी सो जाये कहाँ उम्मीद बचने की ॥२॥
भले अन्धा तो गिर जाये न जाने है कुंआं आगे ।
खुली आँखें १दानिन्दा भी गिरे हैरानी है गिरने की ॥३॥
गुज़रता जा रहा हैं वक्त है सोये २ख़ाबे-ग़फ़लत में ।
हिलाने पर भी खुर्राटे तो कब उम्मीद जगने की ॥४॥
है इतना हो चुका बाक़ी है थोड़ा बस ख़तम समझो ।
न टूटेगी ३अदम तक भी यह जंजीर है जकड़ने की ॥५॥

१. जानने वाला। २. गहरी नींद। ३. प्रलय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हज़ारों बार गरछोड़ो न ४दामन छोड़ेगी दुनिया ।
फँसाना काम है इसका लो सोचो कुछ निकलने की ।।६।।
है लाखों जल गये बाकी मिली न ५उस्तखां तक भी ।
यह६गुलख़न है नहीं ७गुलशन न जा पलभर ठहरने की ।।७
भड़कती आग भठ्ठी की नहीं नज़दीकी तक अच्छी ।
तपश भी तो जलाती है नहीं दानाई जलने की ।।८।।
८कमर-बस्ता ९सुख़न-मुरशिद का दिल में बसा लेना ।
१०अमल पैरा उसी का हो घड़ी है यह संभलने की ।।९।।
निकल ग़ैरों के पंजे से तू आ वाहदत् के गुलशन में ।
खिड़ी गुलज़ार है पूरण तू मन्ज़िल जीत जीने की ।।१०।।

४. पल्ला । ५. हड्डी । ६. भठ्ठी । ७. बागीचा । ८. सावधान होकर कमर बाँधकर । ९. गुरु वाक्य । १०. अनुष्ठान करने वाला ।

———

★ अधिकारी को संबोधन ★

१दरस २तौहीद का दिल को अगर तुम ने पढ़ाना है ।
तो पहली शर्त है अपने चलन को नेक बनाना है ।।१।।
नहीं कीचड़ भरे जामे पे रंग कोई चढ़ाता हैं ।
चढ़ाये भी तो रंग को ही ३फ़क़त *ज़ाया बनाना है ।।२।।
अगर जामे को रंग देने से पहले ४खार से धोलें ।
मुस्फ़फ़ा करके रंग देवें वह ✡ज़ेबाइश बढ़ाना है ।।३।।

१. सबक । २. अद्वैत । ३. केवल । * व्यर्थ । ४. सज्जी । ✡ सुन्दरता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

५खुदी ६शहवत् भरा घुसा हो लालच जिस किसी दिल में।
कहाँ ७वहदत् की गुंजाइश ८कदूरत का ठिकाना है ॥४॥
बुरी आदत बुरी संगत बुरा खाना बुरा पीना।
ग़रज़ हर इक बुराई से दिल अपने को हटाना है ॥५॥
९ग़िलाज़त से सफ़ा करके बुराई से हटा करके।
हक़ीक़त का वह रंग पुख़्ता इसी पर फिर चढ़ाना है ॥६॥
सफ़ा ऐसे ही दिल पर रंग निखार अपना वह लाता है।
१०अनलहक् से ११मुअस्सर हो हक़ीक़त में समाना है ।७।
तरक भी १२आरज़ुओं का है करना लाज़मी दिल से।
मिटाकर ख़्वाहिशें दिल को यह १३पाकीज़ा बनाना है ।८।
१४फ़क़्र १५फ़ाक़ा के साबुन को लगाकर कूट१६जामा--दिल।
१७इबादत का बहा पानी मुसफ़्फ़ा यूँ बनाना है ॥९॥
लगेगा फल मिलें रंगरेज़ शकल मुरशिद की बन कर वह।
१८अनलहक् रंगे-वहदत् से इसे पूरण रंगाना है ॥१०॥

---

५. अभिमान। ६. काम। ७. अद्वैत। ८. गंदगी। ९. गंदगी। १०. अहं ब्रह्मास्मि। ११. असर वाला। १२. इच्छाओं। १३. पवित्र। १४. संतोष। १५. इन्द्रियदमन। १६. दिल का कपड़ा। १७. उपासना, भक्ति। १८. अहं ब्रह्मास्मि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

❋ तड़प ❋

आजा-आजा सांवर्या

आये मिलन के ज़माने-आजा

जरा सी [1]आहट क़दमों की मैं जब कानों में पाता हूँ।
खड़ा फौरन् हूँ हो आता तुझे आया समझता हूँ।
न तुझको देखकर वापिस [2]ब-खस्ता-दिल पलटता हूँ।
हो फिर [3]गोशानशीं वैसे पकड़ सिर को मैं धुनता हूँ।

वायदे निभा पुराणे—आजा

आजा सांँवर्या, आये मिलने के ज़माने-आजा ॥१॥
नहीं काबू में रहता दिल तेरा जब नाम लेता हूँ।
निकलती चीख़ है दिल से [4]मिसल-माही तड़पता हूँ।
भड़क उठती है [5]नारे-इश्क [6]हिज्र में तलमलाता हूँ।
झड़ी [7]अश्कों से राह तेरी पे मोती मैं बिछाता हूँ।

छोड़ दे बहाने—आजा

आजा सांवर्या, आये मिलने के ज़माने आजा ॥२॥
निकलते [8]अश्कों से पूछा हो बाहिर किसलिये निकले।
लगे कहने हैं घर में आग बुझाने को है हम निकले।

---

१. आवाज़। २. टूटे हुये दिल से। ३. कोने में बैठकर। ४. मछली की तरह। ५. प्रेम की अग्नि। ६. जुदाई। ७.-८. आँसूओं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मगर उलटा असर देखा कि ज्यों ज्यों हम बहुत निकले।
भड़कती ही गई वह आग हुआ ⁹अरमाँ कि क्यों निकले।

★ढारस बन्धाने आजा ★
आजा साँवर्या, आये मिलने के जमाने आजा ॥३॥

न आना तेरा है लोहा तो मेरे पास आह की आग।
पिघल जायेगा लोहा खुद भड़क उठी जब आह की आग।
¹⁰फ़लक में यह नहीं सूरज मेरी ही है वह आह की आग।
शकल तारों में बिजली में है बिखरी मेरी आह की आग।

❀ ¹¹रहमत छिड़काने आजा— ❀
आजा सांवर्या, आये मिलने के जमाने, आजा ॥ ४ ॥

छुपे इस दर्दे-दिल की तो न कोई भी दवा जाने।
नहीं ¹²हमदम है कोई जो तसल्ली भी दिला जाने।
तू रहता दिल में है सबके, न तुझ से कुछ-छुपा, जाने।
सिवा तेरे भला कोई किसी का दर्द क्या जाने।

★ वह दर्द मिटाने आजा— ★
आजा सांवर्या, आये मिलने के जमाने आजा ॥ ५ ॥

जहाँ के ऐशो-इशरत की ¹³तलब हरगिज नहीं मुझको।

९. अफसोस। १०. आकाश। ११. कृपा। १२. साथी। १३. इच्छा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भले [14]जन्नत में [15]दोज़ख में [16]सनम रक्खो कहीं मुझको।
तड़प तेरी हर इक जाही सितायेगी वहीं मुझको
तेरे [17]दीदार से यह दर्द मिटेगा है [18]यकीं मुझको।
★ पूरण ! सूरत दिखाने, आजा ★
आजा सांवर्या, आये मिलने के जमाने आजा ॥ ६ ॥

★ अध्यारोप-अपवाद ★

आरोप—

ब्रह्म के अज्ञान से आकाश बुद्बुद उत्पन्न हुआ।
आकाश से वायु हुई और वायु से अग्नि हुआ ॥१॥
अग्नि से फिर जल हुआ और जल से पृथिवी हुई ॥
पृथिवी से सब अन्न हुये और अन्न से यह सृष्टि हुई ॥२॥

अपवाद—

पृथिवी जलमें जल अनल में अग्नि वायु में लयकरो।
वायु फिर आकाश में और आकाश अव्यक्त में लयकरो।३।
अव्यक्त को शुद्ध ब्रह्म में वह मैं हूं निश्चय दृढ़ करो।
शिव हरि गोबिन्द विष्णु मैं हूँ निश्चय दृढ़ करो ॥४॥
भेद स्वगतादि से शून्य मैं सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ।
परिच्छेद अवस्था ताप तीनों से रहित मैं ब्रह्म हूं ॥५॥

१४. स्वर्ग। १५. नरक। १६. प्रियतम। १७. दर्शन। १८. निश्चय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ऐसा निश्चयवान् ज्ञानी होता कभी नहीं दीन है।
तृप्त है नित्यमुक्त पूरणब्रह्म में वह लीन है ॥६॥

★ आत्म निवेदन ★

भगवान् का आदेश है:—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥

साधक इस आदेश के अनुसार आत्मनिवेदन करता है:—

यत्करोमि यदश्नामि यज्जुहोमि ददामि यत्।
यत्तपस्यामि हे नाथ तत्करोमि त्वदर्पणम् ॥

इसका अनुवाद:—

काम करता जो भी खाता दान हवन मैं करता हूँ।
जो कुछ तपस्या करता भगवन् अर्पण तुझे मैं करता हूँ।१।
देखता तेरे लिये और चलता हूँ तेरे लिये।
बोलता तेरे लिये और सुनता हूँ तेरे लिये ॥२॥
तू ही द्रष्टा दृश्य भगवन् क्या छुपाऊं तुझ से मैं।
चित्त के भीतर स्वयं तू देखे कब मिलूँगा तुझ से मैं ॥३॥
पाप से मुझको बचाना चरणों का दो प्रेम दान।
सब जगह मैं तुझ को देखूँ बख़शो अपना स्वरूप ज्ञान।४।
तुच्छ यही सेवा है पूरण चरणों में प्रणाम हो।
स्वीकार करना इसको भगवन् कोटि कोटि प्रणाम हो ५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हवादिस दुःख

तकलीफे क्यों आती हैं; इसका जबाबः——

तू समझता है हवादिस हैं सिताने के लिए।
यह हुआ करते हैं ज़ाहिर आज़माने के लिये ॥१॥

मिलती है १राहत हमेशा २रंज के ३अंजाम में।
रात आती है ४फक़त यह दिन के लाने के लिये ॥ २ ॥

५सख़तिये-बादे-मुख़ालिफ से न हो हैरां ६उक़ाब।
यह तो चलती है तेरे ऊँचा उड़ाने के लिये ॥ ३ ॥

देता है रंगरेज़ ७जामे भठ्ठियों में बार बार।
साफ़ करके उन पे पुख़ता रंग चढ़ाने के लिये ॥ ४ ॥

काटता दरज़ी है कपड़ा इसलिये ८मिक्राज़ से
तन की ज़ेबाइश का जामा ठीक् बनाने के लिये ॥ ५ ॥

झाड़ देती है यह कुदरत् सरदी में ९बर्गे-शजर।
मख़मली पोशाक सब्ज़ा नई पहनाने के लिये ॥ ६ ॥

ढालता सांचों में सोना पानी करके है सुनार।
पहलुओं को है रगड़ता ज़ेबर बनाने के लिये ॥ ७ ॥

चीरता है निश्तरों से ज़ख़मों को १०जर्राह भी।

---

१. शान्ति। २. दुःख। ३, अन्त। ४. केवल। ५. विरोधी हवा की सख़्ती=प्रतिकूल प्रारब्ध। ६. पक्षी विशेष। ७. कपड़े। ८. कैंची। ९. वृक्षों के पत्ते। १०. डाक्टर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दूरकर के गंदगी मरहम लगाने के लिये। ८।
छीलता बढ़ई है लकड़ी काटता गांठें भी है।
रंदा फेरे तख़्ताहाये-किश्ती बनाने के लिये ॥ ९ ॥
११कामयाबी की हुआ करती है नाकामी १२ दलील।
रंज आते हैं तुझे १३फ़रहत् दिलाने के लिये ॥ १० ॥
रख यक़ीं ईश्वर का पूरण याद क़ा चप्पू लगा।
किश्ती है इनसानी-जामा पार जाने के लिये ॥ ११ ॥

११. सफलता। १२. अभीष्ट लाभ न होना। १३. आराम।

दीदार-व-गुफ़्तारे-आरिफ़

ज्ञानवान का दर्शन और कथन।

हासिल होता १लुत्फ़ आरिफ़ के है गो दीदार से।
२हज़्ज़े लुत्फ़े-ख़ास मिलता उनकी है गुफ़्तार से ॥ १ ॥
३खुशनसीबी गरचे ज़ाहिर उनके हैं दीदार से।
४सिर्रे-इरफ़ाँ होता ज़ाहिर उनकी ही गुफ़्तार से ॥ २ ॥
ज़ाहिरी आँखों को ठंडक उनके गो दीदार से।
दिल की आंखें खुलती है पर उनकी ही गुफ़्तार से ॥ ३ ॥

१. आनन्द। २. विशेष आनन्द का अनुभव। ३. सौभाग्य।
४. वेदान्त का रहस्य।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

५तौर-सालिक जाना जाये उनके गो दीदार से ।
६मस्लये-वहदत् का हल हो उनकी ही गुफ़्तार से ।। ४ ।।
कटती ज़ंजीरे-खुदी है उनके गो दीदार से ।
७रूह को मिलतीहै ८ग़िज़ा पर उनकी ही गुफ़्तार से ।। ५ ।।
९इश्के-रब्ब् है जागता गो उनके तो दीदार है ।
"मैं ही ब्रह्म हूँ" जाना जाये उनकी ही गुफ़्तार से ।। ६ ।।
मिलती १०रूह-अफ़ज़ा-मुसरंत उनके गो दीदार से ।
११आबे-हैवाँ मिलता पूरण उनकी ही गुफ़्तार से ।। ७ ।।

५. परमार्थ के पथिक का चरित्र । ६. अद्वैत की कठिन समस्या । ७. आत्मा । ८. खुराक । ९. परमात्मा का प्यार । १०. चित्त को ठंडा करने वाली खुशी । ११. अमृत ।

©××©

दुर्वासना-प्रतीकार

कृ० स्वा० विद्यारण्य मुनि

हृदय की दुष्ट वासनाओं का इलाज

प्रातर्वैदिककर्मस्तदनु सद्वेदान्तसञ्चिन्तया
पश्चाद्भारतमोक्षधर्मकथया वासिष्ठरामायणात् ।
सायं भागवतार्थतत्त्वकथया रात्रौ निदिध्यासनात्
कालो गच्छतु नः शरीरभरणं प्रारब्धकण्ठार्पितम् ।।१।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुवाद=प्रातः काल वेद विहित कर्म अनुष्ठान कर
पाछे ब्रह्मविद्या के श्रवण को करो मन ।
पाछे महाभारत की कथा मोक्ष धर्म की
योगवासिष्ठ के कथन को करो मन ।
सांझ समय भागवत के तत्त्वों की व्याख्या
रात बैठ चुप निदिध्यासन तुम करो मन ।
व्यतीत होवे काल ऐसे शरीर के तो भरण को
गले प्रारब्ध के अर्पन तुम करो मन ।।१।।

श्लोक=अज्ञानं त्यज हे मनो मम सदा ब्रह्मात्मसद्भावनात्
कामं साधनसाधनश्रमपरिध्यानादजस्रं त्यज ।
संकल्पानखिलानपि त्यज जगन्मिथ्यात्वसंभावनात्
क्रोधं तु क्षमया सदा जहि बलाल्लोभं तु सन्तोषतः ।२।।

अनुवाद=तज दे अज्ञान मन आत्मा है ब्रह्मरूप,
ऐसी सद्भावना से सुख की जो खाणी है ।
त्याग दे संकल्प मन मिथ्या संसार सब,
आकाश माँहि नीलता मरु का ज्यूँ पानी है ।
विषयों के साधन में साधन श्रम अधिक होवे,
कामना को त्याग मन माया तानाबानी है ।
क्रोध को तू त्याग मन क्षमाशील स्वभाव से,
सन्तोष से ही होवे मन लोभ की तो हानी है ।।२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्लोक—जिह्वोपस्थसुखभ्रमं त्यज मनः पर्यन्तदुःखेक्षणात्
पारुष्यं मृदुभाषणात्त्यज वृथालापश्रमं मौनतः।
दुस्सङ्गं त्यज साधुसङ्गमबलात्गर्वं तु भङ्गेक्षणात्
निन्दा दुःखमनिन्द्यदेवमुनिभिर्निन्दाकथा संस्मृतेः॥

अनुवाद—रसना उपस्थ का सुख-भ्रम त्याग मन,
दुःख ही दुःख पाछे भोग के तो होवे है।
कटुता जो बाणी की मृदु मीठे वचन से,
त्याग वृथालाप मन मौनता से होवे है।
कुसंगता को त्याग मन साधुसंग सेवन से,
गर्व भङ्ग देख अपमान जब होवे है।
निन्दा का दुःख त्याग निन्दा किस की हुई नाहीं,
पूज्य देव ऋषि या अवतार कोई होवे है ॥३॥

श्लोक—निद्रासात्त्विकवस्तुसेवनतया स्वप्नं सदा जागरात्
रोगाञ्जीर्णमिताशनाञ्जहि सदा दैन्यं महाधैर्यतः।
अर्थानर्थपरिग्रहं त्यज वृथासंसर्गसन्त्यागतः
स्त्रीवाञ्छां त्यज दोषदर्शनबलाद्दुःखं सुखात्मेक्षणात्॥

अनुवाद—नींद को त्याग मन सात्त्विक आहार से
दीनता को त्याग मन जागरन स्वभाव से।
रोगों का त्याग कर हित मित भोजन से
दीनता को त्याग मन धीरता के भाव से।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अर्थों का संग्रह कर अनर्थ जान त्याग मन
धनियों का सङ्ग त्याग वैराग्य के स्वभाव से ।
स्त्री की वाञ्छा त्याग घृणा दोष दर्शन से
दुःखों को त्याग मन सुख आत्म स्वभाव से ।।४।।

श्लोक—दारासक्तिमनादरात् सुतधनासक्तिं त्वनित्यतः
स्नेहं मोहविसर्जनात्करुणया नैष्ठुर्यमन्तस्त्यज ।
औदासीन्यसमाश्रयात्त्यज सुहृन्मित्रारिदुर्वासनां
सर्वानर्थकरान्दशेन्द्रियरिपूनेकान्तवासाज्जहि ।।५।।

अनुवाद—दारा की आसक्ति को अनादर से त्याग मन,
सुत-धन-आसक्ति का नाशपना धार के ।
मोह के विसर्जन से स्नेह को त्याग मन,
अन्तर कठोरता को दया चित्त धार के ।
सज्जन और शत्रु की गणना को त्याग मन
माया रूप जान सब उदासपना धार के ।
इन्द्रिय जो दश एह शत्रु तेरी जान के
त्याग दे सङ्ग मन एकान्त वास धार के ।।५।।

श्लोक—आलस्यं त्वरया श्रमं शमधिया तंद्रिं समुत्थानतो
भेदभ्रान्तिमभेददर्शनबलान्मिथ्यात्वतः सत्यताम् ।
मर्मोक्तिं निजमर्मकर्मकथया क्रोधं स्वसाम्येक्षणात्
आक्रोशं कुशलोक्तितस्त्यज मनश्छिन्ध्यप्रमादाद्भयम् ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनुवाद—शीघ्रता से आलस को शमता से श्रम को
तन्द्रा को त्याग मन उत्थान भाव ठान के।
भेदरूप भ्रान्ति को अभेद ब्रह्म दर्शन से
त्याग जग सत्यता मिथ्या रूप जान के।
अपने ही दोष कह पर के न दोष देख
क्रोध को त्याग सब अपने समान जान के।
फटकारने को त्याग मन कुशलता की वाणी से
छेंदन कर भय अप्रमाद हिये ठान के ॥ ६ ॥

श्लोक—भूतार्थस्मरणं वृथा श्रमधिया प्राप्तं तु हानेक्षणात्
भव्यार्थव्यसनं सदा त्यज मनः प्रारब्धं चोद्येक्षणात्।
शिष्टाशिष्टजनक्रिया त्यज वृथा कष्टानुसन्धानतः
स्नेहाद् द्वेषमतिं सदा त्यज जनं भस्मान्तता संस्कृतेः ॥७॥

अनुवाद—बीते हुये भोगों को न याद कर मेरे मन
हाथ नहीं आवे कछु वृथा श्रम विचार के।
वर्तमान अर्थ सब नाश रूप जान मन
त्याग भावी चिन्ता प्रारब्ध पर डार के।
विषयी और पामर की क्रिया सब त्याग मन
कष्ट दुःख फल होवे हिये विषे धार के।
द्वेष वाली बुद्धि को स्नेह से त्याग मन
कुटुम्ब का प्यार त्याग नाशवान निहार के ॥७॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्लोक=अध्यात्मादिभवं सदा त्यज मनस्तापं स्वभावेक्षणात्
वैषम्यं समभावतः परकथाविक्षेपमक्षोभतः ।
धिक्काराभिभवं तु दुःखमनिशं तद्योग्यताभावनात्
तज्ज्ञातज्ज्ञशिशुन्क्षमस्व कृपया कर्मक्षयात्ताडनम् ॥८॥

अनुवाद=आधि और व्याधि ताप दृश्य जान त्याग मन
साक्षी स्वरूप मैं स्वभाव के विचार से ।
विषमता को छोड़ मन समरूप ब्रह्म देख
परकथा दुःख त्याग अक्षोभता विचार से ।
अपमान धिक्कार के दुःख को तू सहन कर
शरीर इसके योग्य इस उत्तम विचार से ।
ज्ञाति अज्ञाति को बालक जान क्षमा कर
कर्मों का क्षय जान ताडन व्यवहार से ॥८॥

श्लोक=आयुर्गच्छति पेटकामिव जलं सन्त्यज्य देहं जवात्
गच्छन्तीन्द्रियशक्तयोऽपि कुलटा यद्वन्नरं निर्धनम् ।
प्रज्ञा गच्छति दावदाहसमये नीडं मृगीवत्क्व वा
ज्ञात्वा सत्वरमाश्रयात्मपदवीं देहं वृथा मा कृथाः ॥९॥

अनुवाद=जैसे बहे जात जल शीघ्र ही पटारी स्यों
तैसे आयु देह को शीघ्र छोड़ जात है ।
इन्द्रियों की शक्ति सब निकस गई तन से
नर निर्धन को ज्यों वेश्या छोड़ जात है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जवानी वाली बुद्धि भी वृद्ध भये भाग गई
ज्यों आग लगे वन मृगी घर छोड़ जात है।
आत्मा की पदवी का आश्रय ले मेरे मन
देह को न वृथा खो काल बीतो जात है ॥९॥

श्लोक—धैर्यैरावतशान्तिधेनुदमनमन्दारवृक्षं सदा
मैत्र्याद्यप्सरसं विवेकतुरगं सन्तोषचिन्तामणिम्।
आत्मज्ञानमहाऽमृतं समरसं वैराग्यचन्द्रोदयम्
वेदान्तार्णवमाश्रयन्ननुदिनं सेवस्व मुक्तिश्रियम् ॥१०॥

अनुवाद—धीरता का हाथी और शान्ति कामधेनुवत्
इन्द्रिय दमन का मन्दार वृक्ष सेवन कर।
मैत्री आदि अपसरा विवेक के तू घोड़े चढ़
सन्तोष चिन्तामणि का नित्य ही सेवन कर।
आत्मा के ज्ञान का अमृत रस पान कर
वैराग्य रूपी चन्द्रमा की चांदनी का सेवन कर।
सागर वेदान्त का आश्रय ले नित्य पूरण
मुक्ति रूपी लक्ष्मी का सर्वदा ही सेवन कर ॥१०॥

श्लोक—प्रसादाद् दक्षिणामूर्तेः श्रुत्याचार्यप्रसादतः।
दुर्वासनाप्रतीकारदशकं रचितं मया ॥११॥

अनुवाद—साधक जब ज्ञान के साधनों में हो अग्रसर
आत्मा की कृपा का आरम्भ तब होवे है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

साधन निष्काम देख ईश्वर फिर कृपा कर
ब्रह्मवेत्ता गुरु का मेल कर देवे है।
गुरु तब कृपा कर महावाक्य उपदेश देवें
तत् त्वम् पदार्थों की एकता होये जावे है।
शास्त्र की कृपा फिर अर्थं सब स्पष्ट होवें
साधक होये ब्रह्मरूप मुक्ति वह पावे है ॥११॥
चारों इन कृपा का फलरूप दशक यह
नाम दुर्वासना प्रतिकार जानिये।
चित्त की मलिनता जो बाधक ब्रह्मज्ञान की
काटे कतक रेणुवत् जो हृदय में ठानिये।
साधक कोई व्यक्ति जो साधनों में ही तत्पर
जीवन में उतारे कृतार्थं सोई जानिये।
आवागमन छूट जावे मोक्ष फल जीतेजी
पाये सोई साधक नहीं संशय कोई मानिये ॥१२॥
दुर्वासना प्रतिकार विद्यारण्य स्वामी कृत यह
महाराज ब्रह्मप्रकाश से धन यहं पायो है।
सस्कृत श्लोक जांको कठिन प्रतीत होवें
उनके निमित्त हिन्दी भाषा में बनायो है।
एक-एक अक्षर यह अमृत फल देन वाला
मुमुक्षु का ही धन जान आपको पहुँचायो है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जीवन में उतारे जो मोक्षरूप फल पावे
ब्रह्मज्ञानी ऐसे को शीश मैं झुकायो है ।।
सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय
यह अभिलाषा हृदय की भगवन पूरण होय ।।
इति श्री स्वामी परिपूर्णानन्दकृत हिन्दी दुर्वासना-
प्रतिकार दशक समाप्तम् ।।

★ व्यापकता ★

१हक़ीकत खोज कर देखो वही हरजा समाया है ।
२गदागर की वह सूरत में कहीं ३सुल्ताँ बन आया है ।। १ ।।
कहीं ४इशरत् की ५महफ़िल में हँसे काह् काह लगाकर वह ।
कहीं रोता है ज़ारो-ज़ार वह बेकस बन के आया है ।। २ ।।
है फिरता शाल दोशाले को पहने बन ६त्वंगर वह ।
कहीं पहनी फटी गुदड़ी ग़रीबी ने सिताया है ।। ३ ।।
कहीं है घूमता फिरता ७मुकद्दस तीर्थों पर वह ।
कहीं ८नापाक करके ९जुर्म ज़रा नहीं डग्मगाया है ।। ४ ।।
कहीं चालाक की सूरत् कहीं पर भोला भाला है ।
है दोनों में वह यक्साँ ही जिहालत ने भुलाया है ।। ५ ।।
कहीं नादान बनकर वह है करता १०इल्म को हासिल ।

१. सच्चाई । २. भिक्षु । ३. बादशाह । ४. खुशी । ५. सभा ।
६. अमीर । ७. पवित्र । ८ अपवित्र । ९. पाप । १०. विद्या ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कहीं ११मुरशिद की सूरत में १२दरस-तौहीद पढ़ाया है ।।६।।
कहीं बादल कहीं बिजली कहीं बारिश कहीं दरया ।
कहीं बन १३बह्रे-लामहदूद लहरों में लहराया है ।। ७ ।।
उसी का खेल है सारा हकीकत में न कुछ बिगड़ा ।
हज़ारों गहनों की सूरत वह सोना बनके आया है ।। ८ ।।
नहीं १४इल्मो-सरूर-हस्ति से ख़ाली एक ज़र्रा भी ।
न ख़ाली है जगह पूरण वह सब में खुद समाया है ।। ९ ।।

११. गुरुदेव । १२. अद्वैत का सबक । १३. अनन्त समुद्र ।
१४. चैतन्य आनन्द सत् ।

★ श्रीराम की याद ★

सी लिया सीने में जिसने सीतापति है राम को ।
हो गया बस १अल्विदा सब रंजो-ग़म २आलाम को ।। १ ।।
सीना क्या है याद रखना राम सब का आत्मा ।
भूल जाना खुद की और दुनिया के ख़ियाले-ख़ाम को ।। २ ।।
तब तलक था ज़ोर उनका जब न थे श्रीराम याद ।
कूच डेरा कर गये सब सुनते ही इस नाम को ।। ३ ।।
झंझटे-दुनिया से दिल जब होता है मुरझायासा ।
याद से है ४शाद होता पाता है आराम को ।। ४ ।।
याद में है इतनी ताकत दिल को तह से हो अगर ।

१. विदायगी । २. दुःख । ३. झूठा संकल्प । ४. प्रसन्न ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मन्ज़िलें सब तय हों पहुँचे ५मारिफ़त की ६बाम को ॥ ५ ॥
ज़ाहिरी रस्मों रिवाजों से हुआ आज़ाद वह ।
नित खुमारी में है रहता ७वहदत् के पी-पी ८जाम को ॥६॥
इतना है ९सरशार रहता याद में श्रीराम की ।
भूल जाता है वह सब कुछ क्या सुबह क्या शाम को ॥ ७ ॥
याद का है ख़ूब्सूरत बेशक़ीमत हीरा यह ।
ख़ास इसके १०मुस्तहिक हैं मिलता नहीं है ११आम को ॥८॥
१२ख़ासीयत हक्दार की यह नेक हो उसका १३चलन ।
कड़वे लगें दुनियावी सुख सौंपे ख़ुदी श्रीराम को ॥ ९ ॥
दुनिया की ख़्वाहिश नहीं और स्वर्ग की भी चाह नहीं ।
रूबरू दीदार पूरण उनको उनका राम को ॥१०॥

---

५. ब्रह्मविद्या । ६. छत । ७. अद्वैत । ८. प्याला । ९. मस्त ।
१०. अधिकारी । ११. हर किसी । १२. विशेषता । १३. चरित्र ।

★ श्रीशिव-स्तुति ★

माया तेरी से मोहित नहीं आपको पहचाना ।
भूले हुये हैं शम्भु मारग हमें बताना ॥ १ ॥
है छानबीन देखा संसार सब है झूठा ।
सद्वस्तु तुम हो शम्भु चरणों में दो ठिकाना ॥२॥
दुःखरूप है यह दुनिया सुख का निशां नहीं है ।
चरणों में हम पड़े हैं बाजू पकड़ उठाना ॥३॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दुनिया है दुःख का सागर फँसे भँवर में हम है ।
देकर सहारा शम्भु तट पर हमें पहुंचाना ॥४॥

चारों तरफ हैं डाकू बैठे हुये यह घेरे ।
कामारि तुम हो शम्भु इन से हमें बचाना ॥५॥

अज्ञान के ही कारण फदे में फंस गये हैं ।
बल ज्ञान का देके शम्भु फंदे से ले छुड़ाना ॥३॥

बुद्धि के दोष हर लो हर जी ! तुम समर्थ ह ।
थोड़ा यह काम शम्भु मेरा भी कर दिखाना ॥७॥

शुभ मारग में हों प्रेरित देह इन्द्रियप्राणबुद्धि ।
सत् कर्म अनन्य भक्ति ब्रह्मज्ञान हो निशाना ॥८॥

अमृत के तुम हो दाता शीतलता के ही सागर ।
दर्शन से अपने शंभु तृष्णा मेरी बुझाना ॥९॥

भण्डार शुभ गुणों के कल्याण के वपु तुम ।
पापों को मेरे धोकर रंग नाम का चढ़ाना ॥१०॥

कृपा तेरी के इच्छुक आये शरण है पूरण ।
दृष्टि से अपनी शम्भु पावन हमें बनाना ॥११॥

ईश्वर प्रार्थना

जय जय पिता परम आनन्ददाता ।
जगदादि कारण मुक्तिप्रदाता ॥ १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे ।
सृष्टि का स्रष्टा तू धारता संहारता ॥२॥

सूक्षम से सूक्षम तू है स्थूल इतना ।
कि जिसमें यह ब्रह्माण्ड है सारा समात्ता ॥३॥

मैं लालत व पालत हूं पितृ स्नेह का ।
यह प्राकृत संबन्ध तुझसे है ताता ॥४॥

शरण तेरी आया प्रभु दीनबन्धु ।
सहारा मुझे दो दुखीदीनत्राता ॥५॥

जहां में सहारा हर इक को किसी का ।
मेरे तो तुम ही हो पिता और माता ॥६॥

न खाली तेरे दर से कोई भी लौटा ।
भिखारी हूं दर्शन का देदो ओ दाता ! ॥७॥

मिटावो मेरे भय आवागवन के ।
फिरूं न जनम पाता और बिलबिलाता ॥८॥

हृदय की लगन को हो जानो प्रभु तुम ।
समजाऊँ तुझमें अभेद होके ताता ॥९॥

अभी रस।पिलावो कृपा करके मुझको ।
रहुँ सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता ॥१०॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

काबिल

यह दुनिया नहीं दिल लगाने के १काबिल ।
तमाशा है यह २महज़ भुलाने के काबिल ॥१॥

मैं सच कह रहा हूं यह मुरादार दुनिया ।
न दीवाने के और न स्याने के काबिल ॥२॥

यहाँ गुल के साया में पतले हैं काँटे ।
यहाँ की खुशी है रुलाने के काबिल ॥३॥

दबाया न गर ३नफसे-सरकश तो एक दिन ।
रखेगा न यह मुंह दिखाने के काबिल ॥४॥

मिली जिन्दगी ४खुदशनासी की खातिर ।
नहीं एक ५लमहा गंवाने के काबिल ॥५॥

मैं ६इल्मो सरूर और ७हस्ति हूं ८वाहिद ।
हमेशा है दिल में बिठाने के काबिल ॥६॥

न मेरे सिवा कुछ हुआ है न होगा ।
९हकीकत है पूरण कमाने के काबिला ॥७॥

---

१. योग्य । २. केवल । ३. दुष्ट अहङ्कार । ४. अपनी पहचान । ५. थोड़ा सा समय । ६. चैतन्य और आनन्द । ७. सत्ता । ८. अद्वैत । ९. सच्चाई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

शौक—वहदत्

[१]वहदत् का यह शौक जागे जिसको ही जवानी में ।
[२]नेकबख्ती जागी समझो उसकी है [३]पेशानी में ॥१॥

ऐशो–इशरत दुनिया की वह जहर ही है जानता ।
रहने की है आदत होती उसकी [४]बियाबानी में ॥२॥

कारोबारे·दुनिया सारा झूठा है वह जानता ।
करती हे यह फिरती दुनिया सारी ही नादानी में ॥३॥

[५]हक्क् का है ख्वाहिश्मंद सचवाई का [६]मुतलाशी है ।
दिल को है नहीं लगने देता किसी चीज [७]फानी में ॥४॥

ढूँढ़ता है फिरता वह [८]आरिफ पीरकामिल को ।
जब तक नहीं मिलते मुरशिद रहता है परेशानी में ॥५॥

शौक़ उसका बन के मुरशिद मिलते है जब सामने ।
समझाते हैं नहीं [९]फर्क कोई तेरे और [१०]दिलजानी में ॥६॥

मुरशिद मिहरबान से जब पाता है [११]तौहीद को ।
खुद को वह खुदा जाने [१२]माहिर [१३]हक्·दानी में ॥७॥

---

१. अद्वैत। २. सौभाग्य। ३. मस्तक। ४. जंगल (एकान्त) ५. सत्य। ६. ढूंढ़ने वाला। ७. नाशवान्। ८. ज्ञानवान् पूरा गुरू। ९. भेद। १०. परमात्मा। ११. अभेदता। १२. निपुण। १३. परमा- के जानने में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

देखता है हक़ को और सुनता भी वह हक़ है ।
बहाये देता खुदी को वह हक़ की है [14]तुग़ियानी में ॥८॥

रात दिन [15]मशग़ूल रहता यार को ही याद में ।
[16]जल्वा देखे यार का क्या खुश्की में क्या पानी में ॥९॥

मौज में है रहता हरदम [17]ज़ात में [18]मसरूर है ।
खेलता खुदा के साथ जैसे लहरें पानी में ॥१०॥

हालत उसकी ज़ाहिर की पूरण किसी [19]शाइर ने ।
डूबे जो पियालों में फ़िर उभरे न ज़िंदगानी में ॥११॥

---

१४. बाढ । १५. तत्पर । १६. दर्शन । १७. स्वरूप । १८. प्रसन्न ।
१९. कवि ।

*

सुराग़े—ज़िंदगी

दिल की तह में डूब कर पाले [1]सुराग़े-ज़िंदगी ।
खुद-ब-खुद रौशन मिलेगा यह [2]चिराग़े-ज़िंदगी ॥१॥

[3]दुख़्तरो-फरज़न्दो-ज़न को अपना क्यों है जानता ।
नोच कर हैं खाने वाले सब ही [4]ज़ाग़े-ज़िंदगी ॥२॥

क्या तुझे मालूम हैं यह [5]कीना-ओ-शहवत्-ग़ज़ब ।
[6]नफरतो-नख़वत हसद् है सबही दाग़े-ज़िंदगी ॥३॥

---

१. जीवन का पता । २. जीवन का दीपक । ३. बेटी और बेटा और पत्नी । ४. जीवन के कव्वे । ५. द्वेष और काम, क्रोध । ६. घृणा और अहङ्कार, मात्सर्य ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

७जिस्मी-जाँ की ही खुदी से रंजो-घम में ८मुब्तला ।
छोड़ दे अपनी खुदी फिर देख ९फ़राघे-जिंदगी ॥४॥

रंजो-घम फिर पास तेरे फटकेंगे हरगिज नहीं ।
१०खुद-शनासी से मिटेंगे सब ही दाघे-ज़िंदगी ॥५॥

पैदा कर ११अख़लाक़ खुद में नेकों से सोहबत बढ़ा ।
नेक बन ता खिल उठें १२गुलहाये-बाघे-ज़िंदगी ॥६॥

१३फ़रहतो-आरामो-ठंडक और १४मुसर्रत चैन के ।
१५गुल करेंगे सब १६मुअत्तर ऐशबाघे ज़िंदगी ॥७॥

दिल का १७गुल जब खिल उठेगा पा के १८राजे ज़िंदगी ।
मैहकता १९हरसू मिलेगा सबमें बाघे ज़िंदगी ॥८॥

२०हक्क़ हक़ीक़ो ज़िंदगी २१वाहिद २२सरूरो-इल्म तू ।
२३घोतजन हो खुद में पूरण पा सुराघे-ज़िंदगी ॥९॥

---

७. शरीर और जीवत्व। ८. फँसा हुआ। ९. जीवन की आजादी। १०. अपनी पहचान। ११. शुद्ध चरित्र। १२. जीवन के बाघ के फूल। १३. चित्त की शान्ति और सुख शीतलता। १४. प्रसन्नता खुशी। १५. फूल। १६. सुगन्धित। १७. फूल। १८. जीवन का रहस्य। १९. हर तरफ़। २०. सत्य। २१. अद्वैत। २२. आनन्द और चैतन्य। २३. डुबकी।

आरजू

जिससे सब आबाद हैं उसको क्या आबाद करें ।
वाजिब है उससे खुद आबादी की फ़रयाद करें ॥१॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उजड़ा है बहुत देर से यह [1]कश्तज़ारे-दिल ।
आ [2]बाग़बाँ सम्भालता इसे आबाद करें ॥२॥

[3]ग़ैरियत के बहुत पौदे इस दिल में हैं पैदा ।
तेरी नज़दीकी है कुद्दाल आ इन्हें [4]बेबुनियाद करें ॥३॥

दुनिया के रंजो-ग़म से दिल रहता है मुरझाया ।
ऐ [5]अब्र-रहमत् आ कि तुझ से दिल को शाद करें ॥४॥

जंजीरे-ख्वाहिशात् से दिल जकड़ा है [6]हरसू ।
आ खोल दे इस की गांठे ता इसे आज़ाद करें ॥५॥

ऐ [7]रूहे-खाँ राम ! तुम भला कहीं नहीं भी हो ।
जब भूले ही नहीं कभी तो क्या याद करें ॥६॥

---

१. दिल का खेत। २. माली। ३. द्वैत। ४. जड़ से उखेड दें।
५. कृपा के बादल। ६. हर तरफ। ७. व्यापक आत्मा।

हे परमात्मा

अपने कदमों से मुझे न मालूम क्यों तूने दूर किया ।
इसी फिक्र ने ही बस मुझे हरदम है रंजूर किया ॥१॥

तेरी हस्ति से हुई [1]ग़फलत शायद उसकी यह सजा है।
क्या अब भी न अपना आगे जो मुहब्बत ने मजबूर किया ॥२॥

---

१. अज्ञान ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

२करीम तुझको समझकर मैंने किया था ३घरूर ।
४इलाही ! तू ही बता अब क्या मैंने है कसूर किया ।३।

मेरे गुनाहों की बख्शिश अगर है ५नामुमकिन् ।
तो अपना यह नाम "करीम" तूने क्यों मशहूर किया ।४।

६उल्फते-देरीना को कर याद मुझे तेरी कसम् ।
कितनी देर से हूँ ७मुनतज़िर कभी आके न ८मसरूर किया ।५

९जामे-वसल का हूँ ख्वाहिशमंद जरा गौर तो करो ।
क्या गुजरती है मुझ पर पिलाके कभी न मखमूर१२ किया ।६

जागना तो क्या बहक्११ मुझे सोना भी हराम है ।
कदमों ने तेरे मुझे है कैसा ही १२ससहूर किया ।७।

इधर तो यह हालत उधर वह तेरी खुदावन्दी ।
इस ओहदे पर तुझे किसीने क्या इसलिये १३मामूर किया ।८।

अब भी अगर आने में तुम जरा देर करोगे ।
पलटेगा यह तख़्ता न कहना फिर खि़लाफ़ दस्तूर किया ।९।

२. दाता । बख्शिश करने वाला । ३. अभिमान । ४. परमात्मा । ५. असंभव । ६. पुराना प्रम । ७. प्रतीक्षा करनेवाला । ८. प्रसन्न । ९. मिलाप के पियाला । १०. मस्त । ११. सौगन्ध है । १२. जादू के अधीन । १३. नियुक्त ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१४इलाजे-मरजें-हिजर करो न १५महजूर को मारो।
१६शफ़ा होगी यकीनन् जब १७दीदारे-हजूर किया।१०।
कहते हैं यह दुनिया बड़ा १८बहरे-रंजो-घम है।
पूरण कदमों के तेरे सहारे किसने न अबूर१९ किया।११।

---

१४. विरह की बीमारी का इलाज। १५. विरही।
१६. स्वस्थता। १७. आप का दर्शन। १८. शोकसागर।
१९. पार।

कादिर-परमात्मा

परमात्मा से भूला हुआ एक फूल बगीचे में अपने आप को सर्व प्रकार से सुन्दर समझ कर अभिमान कर रहा था कि मेरे जैसा और कोई सुन्दर नहीं। इतने में हवा का झोंका आया। उसकी पंखड़िया टूट कर पृथिवी पर गिर गई। और सब अभिमान चूर हो गये इसपर एक कवि ने लिखा।

मारे तमांचे मुंह पर बादे-सबा ने सरवर।
दावे किये जो गुल ने उस बुत की हमसरी के।

रुबाई

* हुसोन जान खुद को खिलखिला रहा था।
आया हवा का झोंका वह फूल गिर गया था।

---

*सुन्दर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मट्टी में मिल रही थीं नाजुकेसीं पंखड़ियां सब ।
अभिमान कभी न करना यह उपदेश कर गया था ।।

जिस परमात्मा की आज्ञा में यह कुदरत का सब खेल हो रहा है उसकी स्तुति में यह कविता है:—

औसाफ१ क्या बताऊँ उस मौत से २बरी के ।
है दिल में सबके रौशन इनसान क्या परी३ के ।१।

वुह ४ज़ात से है ५वाहिद ६इल्लो-सरूर हस्ति ।
७सानी नहीं करे कौन ८दावे बराबरी के ।२।

९नूरानी मिहरो१० माह हैं वह ज़िन्दगी है सबकी ।
मुरदे नहीं है होते ज़िन्दा बराबरी के ।३।

जितने बने है जेवर सब उसके ही बने हैं ।
लेकिन न हाथ देखें ११जरगर की १२जरगरी के ।४।

किसकी मजाल तोड़े जंजीरे-हुकम को उसकी ।
जकड़े हुकम में १३जीरूह खुश्की के क्या तरीके ।५।

मारे तमाँचे१४ मुंह पर १५बादे सबाने १६सरवर ।

---

१. गुण । २. रहित । ३. अप्सरा । ४. स्वरूप । ५. अद्वैत । ६. चैतन्य और आनन्द सत्य । ७. दूसरा । ८, अधिकार । ९. प्रकाशमान । १०. सूर्य और चन्द्रमा । ११. सुनार । १२. कारीगरी । १३. जीव । १४. थप्पड़, चपेट । १५. प्रातः काल की वायु । १६. कवि का नाम ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

दावे किये जो १७गुल ने उस १८बुत की १९हमसरी के ।६।
होगा २०वसल न जब तक नहीं दर्द-दिल मिटेगा ।
आरिफ से मिल के पूछो मिलने के जो तरीके ।७।
आरिफ की हक्-निगाह में २१फानी जहां है सारा ।
मट्टी हैं पारचा२२ सब २३जरबफ्त क्या २४जरीके ।८।
उसके सिवा न कुछ भी होगा था नहीं है ।
"मैं" "तू" के हैं निशां यह अपनी ही २५खुदसरी के ।९।
२६तालिब हूं हर घड़ी इक २७लत्फे-निगाह का उसकी ।
उसकी कलाम पूरण वाकिफ न २८शाइरी के ।१०।

१७. फूल । १८. परमात्मा । १९. बरावरी । २०. मिलाप । २१. नाशवान ।. २२. कपडे । २३. मख्मल । २४. सोने । २५. अहंकार । २६. इच्छुक । २७. कृपादृष्टि । २८. कविता ।

तेरी याद

याद में तेरी जो गुजरे वह घड़ी ही नेक है ।
हर घड़ी जो याद रक्खे वह तो कोई एक है ।१।
१नेक बख्ती की निशानी याद तेरी जिस घड़ी ।
याद है उसको ही आती २फेल जिसका नेक है ।२।
यादवाले तुझको देखें हर घड़ी हर चीज में ।

१. सौभाग्य । २. कर्म, आचरण ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

चियोंटि से [३]आदम तलक ख्वाह बद कोई ख्वाह नेक है।३।
इन्सान में [४]हयवान में बेजान[५] में बाजान[६]में।
सबमें सब कुछ तुझको देखें नैशकर[७] ख्वाह ध्रेक[८] है।४।
जात[९] से ना[१०] अहल तेरी याद से गाफिल हैं जो।
[११]लाशरीक् तुझमें यह माने हिन्दु है यह शेख है।५।
जात तेरी है [१२]मुबर्रा [१३]खाक-आबो नार से।
पाक है [१४]बादो-खला से इन सबकी तूही [१५]टेक है।६।
महज हस्ति तू सरूरो-इल्म [१६]लाशय [१७]लाबयां।
दुनियां [१८]माफीहा का तुझ में नाम है नैं रेख है।७
याद में तेरी है खोया जिसने अपने आपको।
मिल गया पानी से पानी तुझ से पूरण एक है।८।

---

३. ब्रह्मा। ४. पशु। ५. स्थावर। ६. जगम। ७. गन्ना। ८. नीम की जाति का कड़वा वृक्ष। ९. स्वरूप। १०. नावाकिफ। ११. अद्वैत। १२. रहित। १३. पृथिवी, जल, और अग्नि। १४. वायु और आकाश। १५. आधार। १६. वस्तु परिच्छेद से रहित। १७. वाणी का अविषय। १८. परलोक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्रीस्वामी रामकृष्णजी वैकुण्ठ आश्रम हृषीकेश वालों की सेवा में श्रद्धाञ्जली (१)

उठ गये जहाँ से यारो रस्ता बताने वाले।
राह टेढ़े- से हटाकर सीधा चलाने वाले।१।

खूबी थी इश्क़ निराली पहले सुनी न देखी।
खुद मौन होके फिर भी उपदेश सुनाने वाले।२।

साधन कठिन है जब भी सुनते थे हमसे स्वामी।
दे हौसला औ हिम्मत धीरज बंधाने वाले।३।

रंजीदगी का उनमें नामोनिशां नहीं था।
जब भी चरण छुये वह झट् मुस्कराने वाले।४।

चिहरे से क्या टपकती लाली थी ज्ञान की वह।
वैराग्य की थी मूर्ति अभ्यास बताने वाले।५।

मीठी रसीली वाणी ऐसी कि शहद क्या है।
सरकश नफस की गरदन बल से झुकानेवाले।६।

मस्ती भरी थी रहती आंखों में हर घड़ी ही।
दृष्टि से अपनी अमृत हरदम पिलानेवाले ७।

सरशारो-मस्त रहते मस्ती में अपनी पूरण।
थे बेखबर जहां से बिगड़ी बनाने वाले।८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्रद्धाञ्जली (२)

सेवा में स्वामी रामकृष्ण, वैकुण्ठ आश्रम शेषधारा।

वैकुण्ठ निवासी स्वामी वैकुण्ठ में फिर से आजा।
ख़ाली पड़ा है [1]वैकुण्ठ फिर से इसे बसा जा।१।
सेवक पुराने सारे सेवा में तेरी हाज़िर।
आंखें बिछा खड़े हैं राहमें तू फिर से आजा।२।
[2]आहट जभी हैं सुनते खुलने की तेरे [3]दर की।
बस आगये स्वामी ! यूं [4]मुन्तज़िर हैं आजा।३।
दिल में उमड रहा है इक प्रेम का समुंदर।
चरणों को अश्रुओं से धोयेंगे बस तू आजा।४।
[5]बारे·गुनाह से गरचे हम हैं भरे हुये ही।
फिर भी पड़े हैं दर पर बखशिश को करते आज्ञा।५।
दर्शन के हम भिखारी सिर को झुकाये बैठे।
है आज व्यास पूजा दर्शन दिखादे आजा।६।
गरचे नहीं है लाइक् पावन दरश के तेरे।
दृष्टि से अपनी पूरण पावन बना दे आजा।७।

---

१. वैकुण्ठ आश्रम। २. शब्द। ३. दरवाजा। ४. प्रतीक्षा करने वाले। ५. पाप का बोझ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

"परदा नशीं"

हर किसी की आंख में हर दिल में वह ही रहते हैं ।
है [1]तअजुब फिर भी खुद को परदा नशीं वह कहते हैं ।१।
किस ज़ुबां से मैं करूँ उन के न मिलने का गिला ।
क्या यह एहसां कम है उनका दिल मेरे में रहते हैं ।२।
वैसे तो वह हैं [2]मुबर्रा दुनिया के दुख दर्द से ।
पर [3]अज़ीज़ों की वह खातिर दुख को भी खुद सहते हैं ।३।
[4]ज़ात से वह गरचे [5]वाहिद इल्मो-[6]हस्ती हैं सरूर ।
जिस्मो जानो दिल से मिलकर "हम जुदा हैं" कहते है ।४।
गरचे इनसे मिलना मुशकिल यह मुर्दा हैं वह जिंदगी ।
पर मिले से वन खुद को ढ़ूड़ते ही रहते हैं ।५।
[8]इल्मे मुतलिक हैं मगर वह परदा जिहोलत ओढ़कर ।
मैं हूँ [10]जाहिल वेसमक्त नादां से खुद को कहते हैं ।६।
मैं ज़िस्म हुँ मैं जान हूँ मैं दिल जुबानो कान हूँ ।
इस तरह अपनी जिहालत खुद जबां से कहते हैं ।७।
हाथ में सिद्को-[11]यकीं और दिल में मिलने की तड़प ।
[12]मुर्शिदों के कदमों में जा "मैं कौन हूँ" यह कहते हैं ।८।

---

१. आश्चर्य । २. रहित । ३. भक्तों । ४. स्वरूप से । ५. अद्वैत । ६. चैतन्य और सत् । ७. आनन्द । ८. चैतन्य मात्र । ९. अज्ञान । १०. अज्ञानी । ११. श्रद्धा विश्वास ।। १२. गुरुदेव ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मुर्शिद हैं समझाते तू यह जिस्मो जानो दिल नहीं।
इनका १३शाहिद लो१४-नघ्य्यर इल्मो-हस्ति कहते हैं।६।
बस ज़रा जब गौर से देखा हूँ इल्म मैं।
बन के फिर १६बहरे-सरूर ला-तघय्यो बहते हैं।१०।

१३. साक्षी। १४. विना तबदीली के एकरस। १५. चैतन्य घन। १६. आनन्द का समुद्र।

निष्कामता

प्रभु के नाम पर सब कुछ मैं दिन भर काम करता हूँ।
१अता उसकी पिहरदम ही यकीं कामिल मैं रखता हूँ।१।
उसी का है भरोसा और २मुआवन भी वही मेरा।
उसी के नाम से मुश्किल हर इक आसान करता हूँ।२।
वही है रोज़ीरसां राज़िक वही ३ख़ालिक है सब का ही।
फिकर की कैद से दिल को मैं यूं आज़ाद करता हूँ।३।
वह है इल्मो-सरूर-हस्ती वह ४रहमां और ५अलीमुलग़ैब।
वही है ६रूहे-रवां सबकी उसी का ध्यान धरता हूँ।४।
वही ७बादो-८ख़ला-९आतिश वह पानी हो के बहता है।
वही है मम्बये-१०हस्ती उसी को दिल मे भरता हूँ।५

१. कृपा। २. मददगार। ३. पैदा करने वाला। ४. दयालु। ५. भविष्यत् को जानने वाला। ६. आत्मा। ७. वायु। ८. आकाश। ९. आग्न। १०. अस्तित्व का उद्‌भव स्थान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

वह ११कादिर है १२मकीं दिल में वही है १३बैहरो-बरमे भी।
जुदा उसको समझने से हमेशा मैं तो डरता हूँ।६।
हैं १४लरजां १५मिहरो-माह १६अंजम १७दवां दिन रात हैं डर से
वगर्ना सब पलट देते यह नक्शा सच मैं कहता हूँ।७।
ज़रा उसके हुकम की जो १८अदूली करता है इस जा।
पकड़ता उसको गर्दन से उसे १९आदिल समझता हूं।८।
वही २०फ़ाइल वही है २१फ़ेल, वही २२मफऊल है पूरण।
बजुज़ उसके नहीं कुछ भी उसे वाहिद समझता हूँ।९।

११. सर्व शक्तिमान। १२. रहने वाला। १३. समुद्र और पृथिवी में। १४. काँपते। १५. सूरज चन्द्रमा। १६. सितारे। १७, दौड़ रहे। १८. न मानना। १९. इनसाफ करने वाला। २०. कर्ता। २१. क्रिया। २२. कर्म।

ग़ज़ल

१मुर्शिदे-कामिल से इक दिन मैंने की थी यह २अरज़।
३मसलये-वहदत है क्या, और क्या समझने की ग़रज़।१।
शीरीं-४ज़ुबां वह ५फरिश्ता-सीरत बोले सुन तू ऐ अज़ीज़
दूर है वहदत से होती ६कोहना कसरत को ७मरज़।२।
इल्मो-हस्ती-ज़ात से मौजूद खुद ८ज़ेरो-जबर।

१. गुरुदेव। २. प्रार्थना। ३. अद्वैत सिद्धान्त। ४. मधुरवाणी। ५. देवता स्वरूप। ६. द्वैत की पुरानी। ७. बीमारी। ८. नीचे ऊपर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सूत ही है सूत हूँ जैसे कपड़ें का [९]तूलो-अरज़ ।। ३ ।
यह है वहदत ज़ाते·मौला के सिवा कुछ भी नहीं ।
नामो-सूरत हैं फ़कत यह ख़्वाब की सी ही [१०]तरज़ ।४।
[११]दिल नशीं होने पि वहदत इखततामे·[१२]गर्ज़ हो ।
बोझ सब का ही उतरे जितने इनसानी फरज़ ।। ५ ।।
रातदिन हैं लोग रहते इसलिये ही [१३]ग़म·ज़दा ।
दिल में रहती है तड़प "यह गरज़ है वह गरज़" ।। ६ ।।
ग़ैर के दरपर नहीं हैं जाते वह अहले-यक़ीं ।
जिनकी घर में पूरी कर देता है खुद मौला गरज़ ।।७।।
[१४]मुबतलाये रजोग़म हैं दुनिया में अहले-ग़रज ।
बे-गरज़ बे·ग़म [१५]मुवाहिद क्या किसी से कुछ गरज़ ८।
मैं ही जब हूं खुद सरूरो·इल्मो-हस्ती लाजवाल ।
किस पे मेरा मुझ पे किसका कब रहा कोई [१६]करज़ ९।
खुश व खुर्रम ज़ात पूरण से है सारा जहां ।
किस लिये जाये किसी पे क्या पड़ी उसकी गरज़ ।१०।

९. तना बाना । १०. नियाई । ११. दिल मे दृढ़ होने से । १२. तृष्णा की समाप्ति । १३. शोक से व्याकुल । १४. फसे हुये । १५. अद्वैत दर्शी । १६. कर्जा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

गायत्री अनुवाद

हृदय के अन्दर जो चैतन्य ज्योति।
रवि चन्द्र अग्नि की ज्योति की ज्योति ॥ १ ॥

वह परमात्मा ॐ सबका प्यारा।
वही सच्चिदानन्द त्रिलोकी सहारा ॥ २ ॥

पिता सबका मालिक वरण करने लायिक।
वह आनन्द मूर्ति उपासना के लायिक ॥ ३ ॥

परम प्रेमास्पद अविद्या का नाशक।
असंग पाप पुण्य से सबका प्रकाशक ॥ ४ ॥

करूं ध्यान उसका वह परमात्मा है।
वृत्तियों का प्रेरक वही आत्मा है ॥ ५ ॥

अशुभ से हटाकर हमें शुभ में चलाये।
यही प्रार्थना है हमें अपना बनाये ॥ ६ ॥

न उन से जुदा एक जर्रा न तिनका।
वह पूरण हैं सबमें न आदि अन्त जिनका ॥ ७ ॥

सौभाग्य

जब किसी को मिलता है धन जाने है सौभाग्य जागा।
बन गई कोठी नई बस माने हैं सौभाग्य जागा ॥ १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मिल गई ऊँचे घराने की सुशील सुन्दर इस्त्री।
फूला नहीं मन में समाता जाने है सौभाग्य जागा ॥ २ ॥

मोटर गाड़ी अपनी है सेवक हैं सेवा के लिये।
हैंड रेडियो हाथ में जब जाने है सौभाग्य जागा ॥ ३ ॥

घेर कर संबन्धी रहते हर घड़ी वह इर्द गिर्द।
तारीफ अपनी सुन के खुश जाने है सौभाग्य जागा ॥ ४ ॥

इतना कुछ होते हुये भी पुत्र विना शोकातुर था
हो गया जब वह भी पैदा जाने है सौभाग्य जागा ॥ ५ ॥

पूछा श्रीगुरुदेव से क्या सचमुच यही सौभाग्य है।
या और कुछ इसके इलावा कब जाने है सौभाग्य जागा ।६

मुस्काराये और प्रेम से समझाया यह सौभाग्य नहीं।
बे समझ ही जाने भ्रम से इस तरह सौभाग्य जागा ॥ ७ ॥

प्राणी मात्र को ही हैं मिल रहे यह स्त्री पुत्र धन सभी।
दुख के हेतु नाशवान हैं खाक है सौभाग्य जागा ॥ ८ ॥

सौभाग्य वह सौभाग्य पूरण जो विषयों से वैराग्य हो।
इन्दर आदि जिसको ढूंढ़ें वैराग्य ही सौभाग्य है ॥ ९ ॥

निर्मानता

समझा रहे शजर है जीवन बसर यूँ करना।
संसार सिन्धु से तुम चाहते अगर हो तरना ॥ १ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

झुक झुक के बट की डाली यह कह रही है सबको।
इतना बड़ा भीं होके अभिमान को न करना॥ २॥
पत्तों से फल से जड़ से छाया से हर तरह से।
जो भी शरण में आये दामन सभी का भरना॥ ३॥
लकड़ी का खादिशमन्द गर काटना भी चाहे।
ले लो खुशी से तुम भी कहने से यूं न डरना॥ ४॥
तुम अपना काम कर लो राजी हैं हम रज़ा पर।
जीवन का लक्ष हमारा सेवा तुम्हारी करना॥ ५॥
पक्षी जो छोटे छोटे जब आके बैठते हैं।
भर जाता हूँ खुशी से ऐसा प्यार करना॥ ६॥
सिर पर हैं कूदते खेलें भी नाचते हैं।
फूला नहीं समाता खुश होके वाह वा करना॥ ७॥
जीवन बनाओगे गर मानिन्द हमारी तुम भी।
पदवी अमर मिलेगी छूट जाये जीना मरना॥ ८॥
हैं १बेजुबाँ यह कहते हम २बाज़ुबां को पूरण।
कल्याण के लिये ही जीवन व्यतीत करना॥ ९॥

---

१. गूंगे वाणी रहित स्थावर। २. बोलने वालों को।

विचार का तरीका=आध्यात्मिक प्रश्न

कौन हूं मैं किसलिये और कैसे आया हूँ यहाँ।
लेके जाना क्या यहाँ से और जाना है फिर कहाँ॥ १॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कर रहा हूं क्या ज़रा है ग़ौर करना इस पे भी ।
भेजा गया क्या इसलिये जो कर रहा हूँ मैं यहाँ ॥ २ ॥

जीता है यह जिस्म कैसे सुख दुःख आते किस तरह ।
मेरी मर्ज़ी से उलट कर होता है क्यों 'और सां' ॥ ३ ॥

है बनाने वाला कोई क्या इस-जहानो-जिस्म का ।
या खुद बखुद हैं बन गये यह सब जमीं आस्मां ॥ ४ ॥

कौन हैं यह १फर्जन्दो २दुख़्तर कौन ३वालिद,४बीबी ५वालिदा
क्या चलेंगे साथ यह जमीं ज़ोबर मकाँ ॥ ५ ॥

कौन है वह क्या है ईश्वर मुझ से क्या सम्बन्ध है ।
लेने वाला भी है कोई पाप पुण्य का कुछ बयां ॥ ६ ॥

है नजर के सामने जो क्या यही संसार है ।
इससे वह है या एलहदा जिसको कहते हैं जहाँ ॥ ७ ॥

इससे क्या सम्बन्ध मेरा क्या इसमें कुछ मेरा भी है ।
या यह है ६मौहूमा सब कुछ जिस तरह ७मार हो ८दर रेसमां ॥८

इन सवालों को किया ९हल्ल जिस किसी इनसान ने ।
सद्गुरु की कृपा से मुक्त है पूरण यहाँ ॥ ९ ॥

---

१. पुत्र । २. पुत्री । ३. पिता । ४. धर्मपत्नी । ५. माता । ६. भ्रम से बना हुआ । ७. सर्प । ८. रस्सी में । ९. सुलझाया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अद्वैतानुभव

१जुरंये-मय से हुआ हूं दीवाना और मस्ताना भी।
२जामे-वहदत ने किये एक ३काबा और ४बुतखाना भी।१।

सदबार हूं ५फ़िदा कदमों पे ६साकी के मैं ७निसार।
दिल में हो दिखाया जिसने ८माशूक और मयखाना भी।२।

जी भरके हूं पीता मये-तौहीद बेखौफ़ मैं मस्जिद में।
धोता हूं १०मुसल्ला और ११तस्बीह का हर दाना भी।३।

मिलता न था जिसका कोई निशां १२जुम्तजू से कहीं।
फज़्ले-१३मुर्शिद ने किये १४पुर ~~१५दलान १६दीवान-खाना भी~~
अब १५दालानो १६दीवान खाना भी॥४॥

अपनी ही खुदी के १७आसार थे यह अपना वह ग़ैर है।
बहरे वहदत में हुये गुम अब अपना और बेगाना भी॥५॥

जामे-वहदत से हुआ हूं १८मजज़ूब मैं इस कदर।
खुद बन गया हूं सब कुछ साकी, सिबू और पैमाना भी।३

---

१. अद्वैत की शराब के एक घूंट से। २. अद्वैत के प्याले में। ३. मुसलमानों की पूजा की जगह। ४. हिन्दुओं का मन्दिर। ५. न्योछावर। ६. गुरुदेव। ७. न्योछावर। ८. प्रियतम। ९. शराब खाना। १०. पूजा का आसन। ११. माला। १२. ढूंड़। १३. गुरु कृपा। १४. भर दिये। १५. डयोढ़ी। १६. मकान। १७. निशानियां। १८: मस्त।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

मज़हरे-इल्मो-सरूरो हस्ती है सब कुछ यहाँ।
मुझ से नहीं जुदा कुछ इस [१९]अम्बार का इक दाना भी ।७
इश्क का शोला भड़क कर [२०]रख्ते-खुदी जला गया।
अब हुये यकता हैं दोनों शमा और पर्वाना भी ॥ ८ ॥
अपनी ही ज़ात से हूँ पूरण और [२१]दस्त-बदुआ हूँ।
आबाद रहे तू [२२]साकी और तेरा [२३]मयखाना भी ॥ ९ ॥

१९. ढेर। २०. मिथ्या अभिमान का सामान। २१. प्रार्थना। २२. गुरुदेव। २३. सत्संग।

तेरी याद

जिस ने ही तेरी याद को दिल में बसा लिया।
सोये हुये नसीब को उसने जगा लिया॥ १ ॥
सौदा किया उसी ने ही इस जहाँ में खूब।
देकर खुदी को खुद में ही खुदा को पा लिया॥ २ ॥
दिन रात था परेशां जिसकी तलाश में।
मुर्शिद की [१]नज़रे-कर्म से खुद में ही पा लिया॥ ३ ॥
देता उसी को [२]दिलदार है दीदार [३]रूबरू।
दिल को फरेबे दुनिया से जिसने हटा लिया॥ ४ ॥
सदबार उसको करता है दिलदार [४]बग़लगीर।

१. कृपा दृष्टि। २. प्रियतम। ३. आमने सामने। ४. बरजू फैला कर मिलना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

आंखों से अपनी जिसने दरया बहा लिया ॥ ५ ॥
बिछड़ा हुआ था सदियों से न मालूम है कहाँ।
रो रो के दिल से प्रियतम रूठा मना लिया ॥ ६ ॥
५रोज़ो-शब दीदार पूरण बख़्शिश की क्या कहूँ।
अब दिल को मेरे उसने है घर बना लिया ॥ ७ ॥

५. दिनरात, सदा ॥

फकीरों की ख़िदमत

१कज़ा को रोक देती है २दुआ रौशन३ज़मीरों की।
भला मनज़ूर है अपना तो कर ख़िदमत फकीरों की ॥१॥
सदा मसरूर रहता है जो खिदमतग़ार होता है।
कट जाती है कड़ी बेड़ी मौत की ज़ंजीरों की ॥२॥
शाहों के है झुकते सिर आरिफ के पाक कदमों में।
सिदकदिल से कर खिदमत इन असली अमीरों की ॥३॥
ख़ुदा की खास रहमत के बादल हैं रौशनज़मीर।
मौज में आ करते हैं बारिश रुहानी हीरों की ॥४॥
बदल जाती हैं तकदीरें इन की नज़रे-रहमत से।
निगाह हकबीं बनाती है ❀खाकेपा इन पीरों की ॥५॥

१. मृत्यु। २. आशीर्वाद। ३. ब्रह्म ज्ञानियों की। ❀ चरणधूड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हज़ारों काबा हों पैदा कदम रखे जहां आरिफ़[4]।
पलीव होती है मिट्टी तो ज़नो-ज़र के [5]असीरों की ॥६॥
खुदी की हैं बहे जाती उखड़ कर सब जड़ें तब ही।
उमड़ती है नदी जब इनकी रूहानी तकरीरों की ॥७॥
ग़लत कहते हैं जो कहते हैं कि आरफ़ काम करता है
भला हस्ति हि क्या है पानी पर लकीरों की ॥८॥
[6]तिलिस्मी दुनिया है सारी निगाह में हक-परस्तों की।
हक़ीक़त में है हक़ीकत क्या
लिखी काग़ज़ पि तसवीरों की ॥ ९ ॥
मये-[7]तौहीद से [8]सरशर रहते हैं सदा पूरण।
बियां में आ नहीं सकती खुमारी इन फकीरों की ॥ १० ॥

४. स्त्री तथा धन। ५. कैदियों की। ६. जादू की। ७. अद्वैत की शराब से। ८. मस्त।

ब्रह्मलीन स्वामी चैतन्य गिरि जी महाराज
महामण्डलेश्वर कैलाशाश्रम की याद

दरबदर हम को भटकते इक ज़माना हो गया।
दर तेरे पर आने से [1]दीदारे-जाना हो गया ॥ १ ॥
खुश कलामी थी तेरी कितनी जादूभरी।
सुनते ही हम रह गये और तू रवाना हो गया ॥ २ ॥

१. परमात्मा के दर्शन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हम समझते थे हमारे अपने हैं चैतन्य गिरि।
देखते ही हम रह गये और तू बेगाना हो गया ॥ ३ ॥

जिस्म ख़ाकी छोड़ने की थी अपनी मर्ज़ी आपकी।
हिचकी का आना तो फ़क़त इक बहाना हो गया ॥ ४ ॥

जिस्म से गर हे स्वामी हमसे एलहदा हो गये।
पर दिल हमारा तो तुम्हारा ही घराना हो गया ॥ ५ ॥

किस तरह भूलेंगे स्वामी तुम हो [२]रूहे रवां।
शिव शिवोहं का वह नारा इक अफसाना हो गया ॥ ६ ॥

याद से तेरी हूँ रहता हर घड़ी मख़मूर मैं।
कतरे से पूरण [३]बहरे-बेकराना हो गया ॥ ७ ॥

२. सर्वात्मा ३. अनन्त समुन्द्र।

लामकां

[१]मकीं है खुद मकानों में जिसे हैं लामकां कहते।
अयां है हर निशां से वह जिसे हैं लानिशां कहते ॥ १ ॥

हैं [२]मानी लामकां के यह मकीं हो जो सब मकानों में।
न उस से ख़ाली है कुछ भी जिसे है लामकां कहते ॥ २ ॥

है चशमा कुल मकानों का है [३]मख़ज़न कुल निशानों का।
है क़ायम ज़ात अपनी से जिसे हैं ला ज़मो कहते ॥ ३ ॥

१. रहने वाला । २. अर्थ । ३. खज़ाना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

ज़ाहिर को सिरफ ज़ाहिर कभी भी जानो मत इतना।
४दरखशां ज़ाहिर-बातिन से जिसे है लानिशां कहते ॥४॥
ज़मीनो आस्मां ख़ुद वह सभी ५ज़ीरूहो बेजां भी।
वह है इल्मो सरूर हस्ति जिसे हैं ला-ब्यां कहते ॥ ५ ॥
हुआ है ६मौजज़न वह ७बहरे हस्तिये-लामहदूद।
ब शक्ले रंगे ८गूनागूं जिसे हैं यह ९जहाँ कहते ॥ ६ ॥
इश्क का इक १०वलवला है कि आ दीदार दे हमको।
वरना ११तालिब १२मतलूब है पूरण
जिसे हैं १३जानेजाँ कहते ॥ ७ ॥

४. चमक रहा है। ५. जानदार प्राणी। ६ लहरा रहा है।
७. अनन्त सत्ता का समुद्र। ८. नाना प्रकार। ९. संसार।
१०, जोश। ११. ढूंड़ने वाला। १२. जिसकी ढूंड़ कर रहा है।
१३. जीवन का जीवन। परमात्मा।

"ख़ुदी अपनी तेरी हाइल"

ख़ुदा की खास १रहमत का वही होता है यां २काबिल।
३नफ़स को कैद से आज़ाद किया है जिसने ४शेरे-दिल ॥१॥
जहाँ की ५ऐशोइशरत से ६ज़नो-७ज़र की ८परस्ती से।
हटाया है दिल जिसने वही ९दीदार के काबिल ॥ २ ॥

१. कृपा। २. योग्य। ३. दृढ देह अभिमान। ४. दिल का शेर। ५. बिषयों के सुख से। ६. स्त्री। ७. धन। ८. पूजा से। ९. परमात्मा के दर्शन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

१०तिलिस्मी खेल हैं दुनिया है नकशा ११ख़्वाब का सारा।
है जागा १२ज़ात अपनी में वही है दर-असल १३आकिल।३
१४सुराबे-रेगिसतां में लगा रखी है दौड़ जिसने।
हजारों साल तक पानी न होगा वां कभी हासिल॥ ४॥
मिटेगी प्यास मोठे कूयें के पानी के ही पीने से।
झलकता है वह हरदिल में ज़रा गरदन झुका १५साइल।५।
दिलो-जानो-जिसम से बाहर निकल कर देख ख़ुद को।
सरूरे-१६लाइनतहा ख़ुद तू है दुनिया पर किसलिये १७माइल।६
है फिरता तलाश में जिसकी वह ख़ुद तू हैं ज़रा कर १८ग़ौर।
१९वसल पूरण सदा २०हासिल ख़ुदी अपनी तेरी २१हाइल।७

जीता है संसार उसने जिसने मन जीता है।
सब दुशमन हैं जीते जिसका मन जीता है॥
मिला है इनसानी जीवन अब मन को जीत ले।
मन नहीं जीता है जिसने वह क्या खाक जीता है॥

---

१०. जादू। ११. स्वप्न। १२. स्वरूप। १३. स्याना, अकल वाला। १४. मृग तृष्णा के जल में। १५. ढूंढ़ने वाले। १६. अनन्त आनन्द। १७. झुका हुआ लिप्त। १८. विचार, ध्यान। १९. परमात्माका मिलाप। २०. प्राप्त। २१. रुकावट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कल्याण भावना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःख भाग्भवेत् ।।

सब सुखी हों इस जहां में, मत कोई बीमार हो ।
सब कोइ कल्याण देखें, मत किसे आज़ार हो ।। १ ।।

हाथ पाओं से करें सब काम तेरे ही लिये ।
कारोवारे—दुन्या करते दिल में तेरा प्यार हो । २ ।।

सब की खाहिश हो रहें हम सत् की संगत में सदा ।
दिल में सबके ही तड़प यह कब तेरा दीदार हो ।। ३ ।।

सद्गुरु की चरण धुड़ी सब लगायें आंख में ।
दूर हो सबकी अविद्या हर कोई १बेदार हो,।। ४ ।।

चक्षु से ब्रह्म देखें कान से भी ब्रह्म सुनें ।
जिह्वा पर ही नाम ब्रह्म का ब्रह्म की गुफ़तार हो ।। ५ ।।

चक्षु से जब रूप देखें चक्षु में और रूप में ।
सत्ता तेरी हो प्रगट और सब का ब्रह्म २दिलदार हो ।।६।।

सब यही समझें कि ब्रह्म है चर अचर का आत्मा ।
नेक हों सब की क्रियायें सब को वदी से ३आर हो ।।७।।

१. जागजावे । २. प्रियतम । ३. लज्जा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

हर घड़ी रटते रहें हम नाम तेरा ही प्रभु।
याद की मस्ती से तेरी हर कोई [४]सरशार हो॥ ८॥
नाम तेरे में ही ढूँड़ें सुख सभी आराम को।
हर्ष में और शोक में भी समता की ही तार हो॥ ९॥
इस कदर फैले खुशी इन चौदह भवनों में तेरी।
जिस तरह चारों दिशा में मानो खिली [५]गुलज़ार हो॥१०
प्रसन्न होवें याद तेरी से सभी छोटे बड़े।
हर जगह मौजूद पूरण सब को ही [६]दीदार हो॥ ११॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

४. मस्त। ५. बग़ीचा। ६. दर्शन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalg

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, J